संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं०—१५

बाल-निबन्धमाला

[संस्कृत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त सरल, सरस, ललित तथा सन्धि एवं समास की जटिलता से निर्मुक्त संस्कृत में लिखे हुए परीक्षोपयोगी निबन्धों की हिन्दी अनुवाद सहित अद्वितीय पुस्तक]



सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्

वाराणसी

संस्कृत और संस्कृति के महान पोषक

माननीय महामहिम राज्यपाल

श्री बी० सत्यनारायण रेड्डी

उत्तर प्रदेश शासन (लखनऊ) की

अनुग्रहराशि से प्रकाशित

संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं०—१५

बाल-निबन्धमाला

संस्कृत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त सरल, सरस, ललित तथा सन्धि एवं समास की जटिलता से निर्मुक्त संस्कृत में लिखे हुए परिक्षोपयोगी निबन्धों की हिन्दी-अनुवाद सहित अद्वितीय पुस्तक]

लेखक

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(संस्कृतप्रचार-पुस्तकमाला—सम्पादकः)

सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्

वाराणसी

प्रकाशक—

सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्

डी० ३८/११० हौजकटोरा

वाराणसी

★

सप्तम् आवृत्ति : दो हजार

मूल्य : बारह रुपये, बीस पैसे

★

मुद्रक :

कल्पना प्रेस

रामकटोरा रोड

वाराणसी

निबन्धलेखन-विषये

केचन उपयोगिनः निर्देशाः

[१]

रीतिं विचिन्त्य, विगणय्य गुणान्, विगाह्य
शब्दार्थ-सार्थ-मनुसृत्य च सूक्तिमुद्राः ।
कार्यो निबन्ध-विषये विदुषा प्रयत्नः
के पोतयन्त्र-रहिता जलधौ प्लवन्ते ॥

—राजशेखरस्य

[२]

शीर्षोपेतान् सुसम्पूर्णान् समश्रेणिगतान् शुभान् ।
अक्षरान् वै लिखेद् यस्तु लेखकः स वरः स्मृतः ॥

—अग्निपुराणस्य

[३]

अतिकार्श्यम्, अतिस्थौल्यं वैषम्यं पङ्क्तिवक्रता ,
अतुल्यानां च सादृश्यम् अविभागः पदेषु च ।
लेखदोषा इमे प्रोक्ताः संत्याज्या लेखकैः सदा ॥

—कस्यापि प्राचीनग्रन्थस्य

आवश्यक सूचनायें

१—पुस्तक की विशेषता

संस्कृत की पाठ्य-पुस्तकों में प्रारम्भिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी पुस्तकों का नितान्त अभाव है। गद्य, पद्य, नाटक, कथा, इतिहास एवं निबन्ध आदि विषयों में से किसी विषय पर संस्कृत में ऐसी पुस्तकें नहीं हैं जो अत्यन्त सरल, ललित एवं आकर्षक हों तथा जिनकी सहायता से विद्यार्थी बिना विशेष परिश्रम के ही, मनोरंजन के साथ, अत्यल्प समय में संस्कृत का आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकें। इसी अभाव को दूर करने के लिए संस्थानम् द्वारा अनेक विषयों पर बालोपयोगी पुस्तकमाला के प्रकाशन का निश्चय किया गया है। तदनुसार ही यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है और इसके पूर्व इसी ढंग की दो और पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में कुछ परीक्षोपयोगी विषयों पर संस्कृत में लिखे हुए छोटे-छोटे निबन्ध प्रकाशित किये जा रहे हैं। इसका प्रधान उद्देश्य निबन्ध लिखने की शिक्षा देने के अतिरिक्त संस्कृत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों को शीघ्रता और सरलता के साथ संस्कृत सिखाने में सहायता पहुँचाना है। इसीलिए यह पुस्तक अत्यन्त सरल एवं सुबोध भाषा में लिखी गयी है और यथासम्भव सन्धि और समास की परम्परागत जटिलता से अत्यन्त मुक्त रक्खी गयी है। साथ ही इस पुस्तक में यथासम्भव उन्हीं शब्दों और धातुओं का प्रयोग किया गया है जो सर्व-

साधारण में अधिक प्रचलित हैं। थोड़े से शब्दरूपों तथा धातु-रूपों को जानने वाला व्यक्ति भी यदि इस पुस्तक को २-४ बार पढ़ जाय तो इसमें सन्देह नहीं कि वह बहुत अल्प समय में ही संस्कृत में लिखने-पढ़ने तथा बोलने-समझने की शक्ति प्राप्त कर सकता है।

२—हिन्दी-अनुवाद

पहले यह पुस्तक संस्कृत में ही लिखी गई थी परन्तु अब इसका हिन्दी अनुवाद भी कर दिया गया है जिससे कि छात्रों को संस्कृत का अर्थ लगाने में कोई कठिनाई न हो। दूसरा लाभ यह है कि अब इस पुस्तक द्वारा संस्कृत से हिन्दी एवं हिन्दी से संस्कृत अनुवाद बनाने की कला सीखने में भी छात्रों को बड़ी सहायता मिलेगी। इसी प्रकार अध्यापकों को भी हिन्दी संस्कृत अनुवाद सिखाने में इस पुस्तक से बड़ी सहायता मिल सकती है।

३—कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के रूप

इस पुस्तक के संस्कृत निबन्धों में जो कर्मवाच्य या भाववाच्य की क्रियायें आयी हैं उन्हें कोष्ठक में भीतर रखा गया है। छात्रों को चाहिये कि वे इन क्रियाओं के धातु-प्रत्ययों को अच्छी तरह समझ लें और उनके अन्य लकारों में भी रूप चलाने का अभ्यास करें।

पाठकों को एक और बात पर ध्यान देना आवश्यक है। संस्कृत-भाषा की यह प्रकृति है कि उसमें कर्मवाच्य का हिन्दी की अपेक्षा अधिक व्यवहार होता है। तदनुसार इस पुस्तक की

संस्कृत में भी कर्मवाच्य के प्रयोग अधिक हैं परन्तु उनके हिन्दी अनुवाद में सर्वत्र कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं है अपितु कर्तृवाच्य का ही है। ऐसी स्थिति में छात्रों को संस्कृत और उसके अनुवाद को पढ़ते समय दोनों के वाच्यगत भेदों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये जिससे कि उन्हें इस विषय में कोई भ्रम न हो।

४—मूल एवं अनुवाद की विसंगति

इस पुस्तक में संस्कृत का हिन्दी अनुवाद करते समय इस बात पर अधिक ध्यान रखा गया है कि संस्कृत के प्रत्येक पद का विभक्ति आदि के अनुसार ही अनुवाद हो जिससे कि पढ़ने वालों को मूल एवं अनुवाद में कोई विसङ्गति न मालूम पड़े। परन्तु ऐसा करने में कहीं-कहीं अनुवाद की भाषा मूल की भाषा से कुछ भिन्न हो गई है और इसलिये अनुवाद में भाषा की दृष्टि से कहीं-कहीं असौष्ठव आ गया है। पाठकों को इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिये।

५—अनुवादसम्बन्धी एक अन्य त्रुटि

बायीं ओर वाला संस्कृत का पृष्ठ जिस शब्द से आरम्भ होता है उसी शब्द के अनुवाद से दाहिनी ओर का पृष्ठ आरम्भ होना चाहिये जिससे पाठकों को शब्दार्थ समझने में भ्रम न हो। परन्तु इस अंश में कहीं-कहीं त्रुटि रह गई है। इसी प्रकार संस्कृत की प्रत्येक पंक्ति के सामने ही उसका हिन्दी-अनुवाद रहना चाहिये पर इस विषय में भी कहीं-कहीं त्रुटि हो गई है और मूल तथा अनुवाद की पंक्तियाँ आमने-सामने न होकर नीचे-ऊपर तथा आगे-पीछे हो गई हैं। अतः पाठकों को मूल

एवं अनुवाद को मिलाते समय इस भिन्नता पर भी ध्यान रखना चाहिए।

६-सर्वप्रथम रूपावलियों का ज्ञान आवश्यक

यह पुस्तक संस्कृत सीखने में निश्चय ही बहुत सहायक है पर इसके पूर्व छात्रों को इस संस्था द्वारा प्रकाशित सुगम शब्दरूपावलि तथा सुगम धातुरूपावलि का अवश्य अध्ययन कर लेना चाहिये। जब इन दोनों पुस्तकों का अर्थ एवं प्रयोग के साथ पूर्ण ज्ञान हो जाय तभी इस पुस्तक का अध्ययन आरम्भ करना चाहिये तथा शब्दों में प्रत्येक पद के लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन का एवं क्रिया पदों में प्रत्येक पद के धातु, लकार, पुरुष एवं अर्थ का बोध करते हुए यह पुस्तक पढ़नी चाहिए। इसके साथ ही पूर्व निबन्ध की अपेक्षा अगले निबन्ध में कितने शब्द एवं धातु नये हैं इसका भी बोध करते चलना चाहिये।

७-एक और लाभ

इस पुस्तक के अध्ययन से छात्रों को निबन्ध लिखने तथा अनुवाद बनाने का ज्ञान तो होगा ही इसके अतिरिक्त इससे एक और लाभ यह होगा कि छात्र इन्हीं निबन्धों को आरम्भ एवं अन्त में कुछ और वाक्यों का प्रयोग कर इनका भाषण के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं। अत एव भाषण के आरम्भ एवं अन्त में जो कुछ वाक्य उपक्रम एवं उपसंहार के रूप में बोले जाते हैं उनके भी कुछ प्रकार इस पुस्तक के अन्त में दे दिये गये हैं। छात्रों से अनुरोध है कि वे उन अंशों को कण्ठस्थ कर इन निबन्धों को भाषण के रूप में भी कहने का अभ्यास करें।

उपर्युक्त विषयों पर विद्यार्थीगण ध्यान दें तो वे संस्कृत में निबन्ध लिखने, तथा अनुवाद बनाने एवं भाषण देने में भी एक साथ सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

आशा है, संस्कृत-प्रचार के इच्छुक व्यक्ति, विद्यार्थी एवं अध्यापक इस पुस्तक का पठन-पाठन में उपयोग कर और इससे लाभ उठाकर इस परिश्रम को सफल बनायेंगे तथा अन्य संस्कृत सीखने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए पथ प्रदर्शक बनकर संस्कृत-प्रचार के इस पवित्र कार्य में हमें सक्रिय सहयोग देने की कृपा करेंगे

विजयादशमी
२०४८ वि
वाराणसी

विनीत
लेखक

विषय सूची

वर्णनात्मकाः निबन्धाः

विचारात्मकाः निबन्धाः

एक आवश्यक निवेदन

वालोपयोगी पुस्तकमाला की समस्त पुस्तकों की सरलता की दृष्टि से सन्धिविहीन पदों में ही लिखने का निश्चय किया गया है। परन्तु इस पुस्तक में यह त्रुटि रह गई है कि एक ही वाक्य में कहीं तो सन्धि कर दी गई है और कहीं नहीं भी की गई है। यह त्रुटि इसके अग्रिम संस्करण तथा अन्य पुस्तकों में नहीं रहेगी ऐसी आशा है। अतः विद्यार्थी सन्धियों पर ध्यान न देकर केवल संस्कृत सीखने की दृष्टि से ही इसका अध्ययन करेंगे यह विनीत निवेदन है।

विनीत

लेखक

संस्कृत-गानम्

•

१

भारतीयैकता-साधकं संस्कृतम्
भारतीयत्व-सम्पादकं संस्कृतम्
ज्ञान-पुञ्ज-प्रभा-दर्शकं संस्कृतम्
सर्वदानन्द-सन्दोहदं संस्कृतम् ।

२

सर्व-मस्तिष्क-संस्कारकं संस्कृतम्
सर्व-वाणी-परिष्कारकं संस्कृतम्
सत्पथ-प्रेरणा-दायकं संस्कृतम्
सद्गुण-ग्राम-सन्धायकं संस्कृतम् ।

३

विश्वबन्धुत्व-विस्तारकं संस्कृतम्
सर्वभूतैकता-कारकं संस्कृतम्
सर्वतः शान्ति-संस्थापकं संस्कृतम्
पञ्चशील-प्रतिष्ठापकं संस्कृतम् ।

४

त्याग-सन्तोष-सेवा-व्रतं संस्कृतम्
विश्वकल्याण-निष्ठायुतं संस्कृतम्
ज्ञान-विज्ञान-सम्मेलनं संस्कृतम्
भुक्ति-मुक्ति-द्वयोद्वेलनं संस्कृतम् ।

५

धर्मकामार्थ-मोक्ष-प्रदं संस्कृतम्
ऐहिकामुष्मिकोत्कर्ष-दं संस्कृतम्

कर्मदं ज्ञानदं भक्तिदं संस्कृतम्
सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम् ।

६

"सोहमस्मीति"-निश्चायकं संस्कृतम्
"त्वं तदेवेति" संगायकं संस्कृतम्
एकमेवाद्वयं" – बोधकं संस्कृतम्
सर्वदा सत्यसंशोधकं संस्कृतम् ।

७

शब्द-लालित्य-लीलावनं संस्कृतम्
चारु-माधुर्य-धारागृहं संस्कृतम्
विश्व-चेतश्चमत्कारकं संस्कृतम्
पूर्वजानां यशःस्मारकं संस्कृतम् ।

नगरे-नगरे ग्रामे-ग्रामे विलसतु संस्कृत-वाणी,
सदने-सदने जन-जन-वदने जयतु चिरं कल्याणी,
सत्य-शील-सौन्दर्य-समीरा, ज्ञान-जला, गति-सारा,
छल-छल कल-कल प्रवहतु दिशि-दिशि पावन-संस्कृत-धारा ॥

निवेदन—

(सभी छात्रों को चाहिये कि वे इन गीतों को कण्ठस्थ कर लें तथा इन्हें मधुर स्वर में गाने का अभ्यास करें इसके बाद अर्थ समझ लें और उसके आधार पर जनता को संस्कृत का महत्त्व समझाने का प्रयास करें) ।

वर्णनात्मकाः निबन्धाः
वर्णनात्मक निबन्ध

वाग्देवतायै नमः

बाल-निबन्ध-माला

१—ईश्वरवन्दना

१—ईश्वरः संसारस्य रचयिता अस्ति। सः एव सूर्यं रचयति। सः एव चन्द्रं रचयति। सः एव ग्रहान् रचयति, सः एव नक्षत्राणि रचयति। सः एव पशून् रचयति, सः एव पक्षिणः रचयति। सः एव वृक्षान् रचयति, सः एव वनस्पतीन् रचयति। सः एव नरान् रचयति, सः एव नारीः रचयति। सर्वं सः एव रचयति।

२—ईश्वरः सर्वव्यापकः अस्ति। सः सर्वत्र अस्ति। सः जले अस्ति, स्थले अस्ति। सः आकाशे अस्ति, पाताले अस्ति। सः पशौ अस्ति, पक्षिणि अस्ति। सः वृक्षे अस्ति, वनस्पतौ अस्ति। सः कणे कणे अस्ति, सः तृणे तृणे अस्ति। सः एव अग्रे अस्ति, सः एव पश्चात् अस्ति। सः एव उपरि अस्ति, सः एव नीचैः अस्ति। सः एव वामे अस्ति, सः एव दक्षिणे अस्ति। सः सर्वत्र अस्ति।

३—ईश्वरः सर्वशक्तिमान् अस्ति। तस्मिन् सर्वाः शक्तयः सन्ति। सः रचयितुं शक्नोति, नाशयितुं शक्नोति। उत्थापयितुं शक्नोति, पातयितुं शक्नोति। दातुं शक्नोति, ग्रहीतुं शक्नोति। मारयितुं शक्नोति, जीवयितुं शक्नोति। सः सर्वं कर्तुं शक्नोति।

वाग्देवतायै: नमः

बाल-निबन्ध-माला

१—ईश्वर वन्दना

१—ईश्वर संसार का रचयिता है। वही सूर्य को रचता है। वही चन्द्रमा को रचता है। वही ग्रहों को रचता है। वही नक्षत्रों को रचता है। वही पशुओं को रचता है, वही पक्षियों को रचता है। वही वृक्षों को रचता है, वही वनस्पतियों को रचता है। वही पुरुषों को रचता है, वही नारियों को रचता है। सब कुछ वही रचता है।

२—ईश्वर सर्वव्यापक है। वह सर्वत्र है। वह जल में है, स्थल में है। वह आकाश में है, पाताल में है। वह पशु में है, पक्षी में है। वह वृक्ष में है, वनस्पति में है। वह कण-कण में है, वह तृण-तृण में है। वही आगे है, वही पीछे है। वही ऊपर है, वही नीचे है। वही बायें है, वही दाहिने है। वह सर्वत्र है।

३—ईश्वर सर्वशक्तिमान है। उसमें सारी शक्तियाँ हैं। वह बना सकता है, नाश कर सकता है। उठा सकता है, गिरा सकता है। दे सकता है, ले सकता है। मार सकता है, जिला सकता है। वह सब कुछ कर सकता है।

४—ईश्वरस्य अनेकानि अद्भुतानि च रूपाणि सन्ति । सः निराकरः अपि अस्ति, साकारः अपि अस्ति। निर्गुणः अपि अस्ति, सगुणः अपि अस्ति। स्थूलः अपि अस्ति, सूक्ष्मः अपि अस्ति । महीयान् अपि अस्ति, अणीयान् अपि अस्ति। सः अनादिः अस्ति । सः अनन्तः अस्ति । सः अनेकरूपः अस्ति ।

५—सः एव ब्रह्मरूपेण जगतः निर्माणं करोति । सः एव विष्णुरूपेण जगतः पालनं करोति। सः एव शिवरूपेण जगतः संहारं करोति । सः एव वायुरूपेण वाति । सः एव इन्द्ररूपेण वर्षति । सः एव सूर्यरूपेण प्रकाशते। सः एव अग्निरूपेण ज्वलति । इदं सर्वं जगत् ईश्वरस्य एव रूपं वर्तते । ततः भिन्नं किमपि नास्ति ।

६ – यथा ईश्वरस्य अनेकानि रूपाणि सन्ति तथैव तस्य अनेकानि नामानि अपि सन्ति। ब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वरः, जगदीश्वरः, ओङ्कारः इत्यादीनि तस्य अनन्तानि नामानि सन्ति । सः एव अरबीभाषायां अल्ला, पारसीभाषायां खुदा तथा अंग्रेजीभाषायां गॉड इति (कथ्यते)। एकः एव ईश्वरः भिन्न-भिन्ननामभिः (आहूयते), तथा भिन्न-भिन्न-स्थानेषु च भिन्न-भिन्नपद्धतिभिः (पूज्यते)।

७ – ईश्वरः महान् दयालुः अस्ति । सः दीनानां पालकः अस्ति । अनाथानां सहायकः अस्ति । पतितानाम् उद्धारकः अस्ति ।

अत एव ईश्वरस्य सर्वैः जनैः वन्दना .उपासना स्तुतिश्च (करणीया)।

□

४—ईश्वर के अनेक और अद्‌भुत रूप हैं। वह निराकार भी है, साकार भी है। निर्गुण भी है, सगुण भी है। स्थूल भी है, सूक्ष्म भी है। महान भी है, छोटा भी है। वह अनादि है। वह अनन्त है। वह अनेक रूप वाला है।

५—वही ब्रह्मरूप से जगत का निर्माण करता है। वही विष्णु-रूप से जगत का पालन करता है। वही शिवरूप से जगत का संहार करता है। वही वायुरूप से बहता है। वही इन्द्ररूप से बरसता है। वही सूर्यरूप से प्रकाशित होता है। वही अग्निरूप से जलता है। यह सारा जगत ईश्वर का ही रूप है। उससे भिन्न कुछ भी नहीं है।

५—जैसे ईश्वर के अनेक रूप हैं, जैसे ही उसके अनेक नाम भी हैं। ब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वर, जगदीश्वर, ओङ्कार इत्यादि उसके अनन्त नाम हैं। वही अरबी भाषा में अल्ला, पारसी भाषा में खुदा तथा अंग्रेजी भाषा में "गॉड" कहा जाता है। एक ही ईश्वर, भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाता है तथा भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न पद्धतियों से पूजा जाता है।

७—ईश्वर महान दयालु है। वह दीनों का पालक है। अनाथों का सहायक है। पतितों का उद्धारक है। अतः सभी को ईश्वर की वन्दना उपासना तथा स्तुति करनी चाहिये।



२–भूमिः

१—यस्मिन् लोके वयं निवसामः सः भूलोकः (कथ्यते)। अस्य भूलोकस्य आधारः भूमिः एव अस्ति। भूमेः द्वौ भागौ वर्तेते--प्रथमः जलभागः तथा द्वितीयः स्थलभागः। यस्मिन् भागे जलं वर्तते सः जलभागः (कथ्यते)–यथा सरितः समुद्राश्च। यस्मिन् भागे जनाः निवसन्ति सः स्थलभागः (कथ्यते)।

२—भूमिः अस्माकं कृते महान् उपकारी पदार्थः अस्ति। भूमौ वयं भवामः, भूमौ वयं निवसामः। भूमौ वयं चलामः, भूमौ वयं तिष्ठामः। भूमौ वयं स्वपिमः, भूमौ वयं जागृमः। भूमौ वयं हसामः भूमौ वयं नन्दामः। भूमौ वयं जीवामः तथा अन्ते भूमेः एव शरणं व्रजामः।

३—भूमौ अन्नानि उत्पद्यन्ते यानि वयं भक्षयामः। भूमौ जलं (लभ्यते) यद् वयं पिबामः। भूमौ भवनानि (निर्मीयन्ते) येषुवयं निवसामः। भूमौ गजाः अश्वाश्च भवन्ति यान् वयम् आरोहामः। भूमौ एव तानि सर्वाणि वस्तूनि भवन्ति येभ्यः वयं सुखं शान्ति च प्राप्नुमः। अतएव भूमिः वसुधा वसुन्धरा च (उच्यते)।

४ भूमेः महत्त्वम् अवर्णनीयम् अस्ति। अस्याः गौरवम् अतुलनीयम् अस्ति। भूमिः जन्मदात्री अस्ति। भूमिः जीवनदात्री अस्ति। भूमिः अन्नदात्री अस्ति। भूमिः वस्त्रदात्री अस्ति। भूमिः सर्वदात्री अस्ति।

५—अतएव अस्याः सेवा, सदुपयोगः, संरक्षणं च सर्वेषां भूमिवासिनां परमं कर्तव्यं वर्तते।



२–भूमि

१—जिस लोक में हमलोग रहते हैं वह भूलोक कहा जाता है। इस भूलोक का आधार भूमि ही है। भूमि के दो भाग हैं, पहला जल भाग तथा दूसरा स्थलभाग। जिस भाग में जल है वह जलभाग कहलाता है—जैसे नदियाँ और समुद्र। जिस भाग में लोग रहते हैं वह स्थलभाग कहा जाता है।

२—भूमि हमलोगों के लिए महान् उपकारी पदार्थ है। भूमि में हम लोग होते हैं, भूमि पर हमलोग निवास करते हैं। भूमि पर हमलोग चलते हैं, भूमि पर हमलोग बैठते हैं। भूमि पर हमलोग सोते हैं, भूमि पर हमलोग जागते हैं। भूमि पर हमलोग हँसते हैं, भूमि पर हमलोग आनन्दित होते हैं। भूमि पर हमलोग जीते हैं और अन्त में भूमि के ही शरण में जाते हैं।

३—भूमि में अन्न उपजते हैं, जिन्हें हमलोग खाते हैं। भूमि में जल मिलता है जिसे हमलोग पीते हैं। भूमि पर घर बनाये जाते हैं जिनमें हमलोग रहते हैं। भूमि पर हाथी और घोड़े होते हैं, जिनपर हमलोग चढ़ते हैं। भूमि में ही वे सभी वस्तुएं होती हैं जिनसे हम-लोग सुख और शान्ति पाते हैं। अत एव भूमि वसुधा और वसु-न्धरा कही जाती है।

४—भूमि का महत्त्व अवर्णनीय है। इसका गौरव अतुलनीय है। भूमि जन्म देने वाली है। भूमि जीवन देने वाली है। भूमि अन्न देने वाली है। भूमि वस्त्र देने वाली है। भूमि सब कुछ देने वाली है।

५—अतएव इसकी सेवा, सदुपयोग और संरक्षण सभी भूमि-वासियों का परम कर्तव्य है।



३—सूर्यः

१—सूर्यः एकः तेजोमयः पदार्थः अस्ति। अयं गोलाकारः भवति। सूर्यः, पृथिव्याः अपि महान् अस्ति परं दर्शने लघुः प्रतिभाति।

२—सूर्यः प्रातःकाले पूर्वदिशायाम् उदेति। अयं सायङ्काले पश्चिमदिशायाम् अस्तं गच्छति। एवं प्रतिदिनं सूर्यः उदेति प्रतिदिनं च अस्तं गच्छति।

३—सूर्यः महान् उपकारकः पदार्थः अस्ति। यदा सूर्यः उदेति तदा संसारस्य अन्धकारः नश्यति। प्रभातं जायते। सर्वे प्राणिनः जाग्रति। सर्वेषु नवीनं चैतन्यं समायाति। सर्वे स्व-स्व-कर्मणि संलग्नाः भवन्ति। सूर्येण एव दिनस्य रात्रेश्च विभागः भवति। सूर्येण एव ऋतुपरिवर्तनं भवति। सूर्यद्वारा एव कालस्य ज्ञानं जायते।

४—सूर्यस्य किरणेषु जीवनदायिनी शक्तिः अस्ति। सूर्यस्य किरणैः कुसुमानि विकसन्ति। सूर्यस्य किरणैः अंकुराणि उद्गच्छन्ति। सूर्यस्य किरणैः शस्यानि वर्द्धन्ते। सूर्यस्य किरणैः फलानि (पच्यन्ते)। सर्वे पदार्थाः सूर्यस्य किरणैः जीवनं गृह्णन्ति, पोषणं प्राप्नुवन्ति, वृद्धिं च गच्छन्ति।

५—सूर्यस्य किरणेषु आरोग्यदायिनी अपि शक्तिः अस्ति। सूर्यस्य किरणैः अनेके रोगाः नश्यन्ति। सूर्यस्य किरणैः जलं वायुश्च विशुद्धौ भवतः। सूर्यस्य किरणैः रोगजनकाः कीटाणवः म्रियन्ते। सूर्यनमस्कारेण स्वास्थ्यं सुन्दरं तिष्ठति। सूर्योपस्थानेन अनेके लाभाः भवन्ति। सूर्यस्य एव कृपया जगत् जीवति वर्द्धते च। अत एव वेदे लिखितं वर्तते—

सूर्य आत्मा जगतः तस्थुषश्च।



३—सूर्य

१—सूर्य एक तेजोमय पदार्थ है। यह गोलाकार होता है। सूर्य पृथिवी से भी महान् है पर देखने में छोटा मालूम होता है।

२ - सूर्य प्रातःकाल पूर्व दिशा में उगता है। यह सायंकाल पश्चिम दिशा में अस्त हो जाता है। इस तरह प्रतिदिन सूर्य उगता है और प्रतिदिन अस्त होता है।

३—सूर्य महान उपकारी पदार्थ है। जब सूर्य उगता है तब संसार का अन्धकार नष्ट हो जाता है। प्रभात हो जाता है। सभी प्राणी जाग जाते हैं। सबमें नयी चेतना आ जाती है। सभी अपने-अपने कार्य में संलग्न हो जाते हैं। सूर्य के द्वारा ही दिन का और रात का विभाग होता है। सूर्य के द्वारा ही ऋतुपरिवर्तन होता है। सूर्य के द्वारा ही काल का ज्ञान होता है।

४—सूर्य की किरणों में जीवनदायिनी शक्ति होती है। सूर्य की किरणों से फूल खिलते हैं। सूर्य की किरणों से अंकुर उगते हैं। सूर्य की किरणों से फसलें बढ़ती हैं। सूर्य की किरणों से फल पकते हैं। सभी पदार्थ सूर्य की किरणों से जीवन पाते हैं, पोषण पाते हैं और बढ़ते हैं।

५—सूर्य की किरणों में आरोग्यदायिनी शक्ति भी है। सूर्य की किरणों से अनेक रोग नष्ट होते हैं। सूर्य की किरणों से जल और वायु विशुद्ध रहते हैं। सूर्य की किरणों से रोग-जनक कीटाणु मरते हैं। सूर्यनमस्कार से स्वास्थ्य सुन्दर रहता है। सूर्योपस्थान से अनेक लाभ होते हैं। सूर्य की ही कृपा से जगत जीता है और बढ़ता है। अत एव वेद में लिखा है—

सूर्य जंगम और स्थावर पदार्थ की आत्मा है।



४—अन्नम्

१—यत् (अद्यते) तत् अन्नं (कथ्यते)। अन्नं बहुविधं भवति। यथा—धान्यं, गोधूमः, जवः, कोद्रवः, आढ़की, कलायः, मुद्गः, माषः, मकायः, मडकः, यावनालश्चेत्यादयः।

२—अन्नं जीवनाय अति आवश्यकं वस्तु अस्ति। अन्नेन एव सर्वे जनाः जीवन्ति। अन्नं विना कोऽपि जीवितुं न शक्नोति। अनेके पशवः तथा पक्षिणः अपि अन्नमेव उपजीवन्ति।

३—एभिः एव अन्नैः नानाविधानि खाद्यवस्तूनि (निर्मीयन्ते)। धान्येन कोद्रवेण श्यामाकेन च ओदनं (पच्यते)। गोधूमेन, जवेन कलायेन च रोटिका (निर्मीयते)। आढक्या, चणकेन, मुद्गेन, माषेण च सूपं (निर्मीयते)। गोधूमस्य पिष्टकेन अपूपाः अपि (पच्यन्ते)। चणकस्य चूर्णेन वटकाः (विरच्यन्ते)। एभिः एव अन्नैः नानाविधानि मोदकानि (निर्मीयन्ते)।

४—उपरि लिखितानि खाद्यवस्तूनि सर्वत्र प्रसिद्धानि सन्ति। परन्तु एतदतिरिक्तं चिपिटान्नं तथा सक्तुः इति द्विविधम् अन्यदपि खाद्यं क्वचित्-क्वचित् प्रसिद्धं वर्तते। अनयोः चिपिटान्नं धान्येन (निर्मीयते) तथा सक्तुः चणकेन मकायेन जवेन च। केषुचित् प्रदेशेषु अनयोः खाद्ययोः महान् प्रचारः अस्ति। निर्धनाः जनाः प्रायेण सक्तुभिः जीवनं यापयन्ति।

५—अन्नं विना जीवनं सर्वथा असम्भवं वर्तते। यदि एकस्मिन् दिने अन्नं न (लभ्यते) तदा जनाः निर्बलाः निर्जीवाः च भवन्ति। अन्नं विना न गानं रोचते न वाद्यम्। न कीर्तनं रोचते न भजनम्। न पठनं रोचते न लेखनम्। न हासः रोचते न

४--अन्न

१—जो खाया जाता है, उसे अन्न कहते हैं। अन्न बहुत प्रकार का होता है—जैसे—धान्य, गेहूँ, यव, कोदो, अरहर, केराई, मूँग, ऊड़द, मकई, मड़ुआ और जोन्हड़ी इत्यादि।

२—अन्न जीवन के लिये अति आवश्यक वस्तु है। अन्न से ही सभी लोग जीते हैं। अन्न के विना कोई भी जी नहीं सकता है। अनेक पशु और पक्षीगण भी अन्न के ही सहारे जीते हैं।

३—इन्हीं अन्नों से नाना प्रकार की खाद्य वस्तुएँ बनायी जाती हैं। धान से, कोदो से और साँवाँ से भात पकता है। गेहूँ से, यव से और केराई से रोटी बनायी जाती है। अरहर, चना, मूँग और ऊड़द से दाल बनायी जाती है। गेहूँ के आटे से पूए भी पकाये जाते हैं। चना के चूर्ण से बड़ियाँ बनायी जाती हैं। इन्हीं अन्नों से नाना प्रकार के मोदक बनाये जाते हैं।

४—ऊपर लिखी गई खाद्य वस्तुएँ सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। परन्तु इनके अतिरिक्त चिउड़ा तथा सत्तू ये दो प्रकार की दूसरी भी खाद्य वस्तुएँ कहीं-कहीं प्रसिद्ध हैं। इन दोनों में चिउड़ा धान से बनता है और सत्तू चना, मकई और यव से। किन्हीं प्रदेशों में इन दोनों खाद्यों का महान प्रचार है। निर्धन जन प्रायः सत्तू से जीवन-यापन करते हैं।

५—अन्न के विना जीवन सर्वथा असम्भव है। यदि एक दिन अन्न नहीं मिलता है तो लोग निर्बल और निर्जीव हो जाते हैं। अन्न के विना न गाना अच्छा लगता है न बजाना। न कीर्तन अच्छा लगता है न भजन। न पढ़ना अच्छा लगता है न लिखना। न हँसना अच्छा लगता है न परिहास। न क्रीड़ा

परिहासः। न क्रीडा रोचते न कौतुकम्। न पूजा रोचते न पाठः। सर्वं कार्यं तदैव रोचते यदा उदरम् अन्नेन परिपूर्णं भवति।

६—अतएव सर्वैः अन्नस्य उपार्जनं, वर्द्धनं रक्षणं च (कर्तव्यम्)। इदानीं भारते जनसंख्या दिने दिने वर्द्धमाना एव (विलोक्यते)। अतः सम्प्रति भारतीयैः जनैः अन्नसम्बर्द्धने विशेषरूपेण ध्यानं (दातव्यम्)।



५—वस्त्रम्

१—वस्त्रं मनुष्याणां कृते एकं परमावश्यकं वस्तु अस्ति। वस्त्रेण शरीरं (आच्छाद्यते)। वस्त्रेण गुप्तानि अङ्गानि (गोप्यन्ते)। वस्त्रेण शरीरस्य शोभा भवति। वस्त्रं सभ्यतायाः चिह्नम् अस्ति। सुन्दरैः वस्त्रैः समाजे सम्मानः भवति। अतएव मानवसमाजस्य कृते वस्त्राणां महती उपयोगिता वर्तते।

२—वस्त्राणि नानाविधैः सूत्रैः (निर्मीयन्ते)। कानिचित् कर्पासस्य सूत्रैः (निर्मीयन्ते)। कानिचित् ऊर्णासूत्रैः (निर्मीयन्ते)। कानिचित् कृमिजैः सूत्रैः (निर्मीयन्ते)। कानिचित् सणसूत्रैः (निर्मीयन्ते)। कानिचित् च अन्यैः सूत्रैः निर्मीयन्ते।

३—एषु कर्पासस्य वस्त्राणि समर्घाणि भवन्ति। अन्यानि वस्त्राणि च महर्घाणि भवन्ति। अतएव सर्वे जनाः अधिकतया कर्पासस्य एव वस्त्राणि परिदधते।

४—वस्त्रैः बहुविधानि परिधानानि (निर्मीयन्ते)। धौतवस्त्रं (निर्मीयते), शाटी निर्मीयते। कञ्चुकं निर्मीयते, कूर्पासकं (निर्मीयते)। दुकूलं (निर्मीयते), अङ्गप्रोञ्छनं (निर्मीयते)।

अच्छी लगती है न कौतुक। न पूजा अच्छी लगती है न पाठ। सभी कार्य तभी अच्छे लगते हैं जब उदर अन्न से परिपूर्ण रहता है।

६—अतएव सबको अन्न का उपार्जन, वर्धन औंर रक्षण करना चाहिए। इस समय भारत में जनसंख्या दिन-दिन बढ़ती हुई ही देखी जा रही है। अतः इस समय भारतीयों को अन्नको बढ़ाने में विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।



५—वस्त्र

१—वस्त्र मनुष्यों के लिये एक परमावश्यक वस्तु है। वस्त्र से शरीर ढका जाता है। वस्त्र से गुप्त अङ्गों को छुपाया जाता है। वस्त्र से शरीर की शोभा होती है। वस्त्र सभ्यता का चिह्न है। सुन्दर वस्त्रों से समाज में सम्मान होता है। अतः मानवसमाज के लिये वस्त्रों की महती उपयोगिता है।

२—वस्त्र नाना प्रकार के सूतों से बनाये जाते हैं। कितने ही कपास के सूतों से बनाये जाते हैं। कितने ही ऊन के सूतों से बनाए जाते हैं। कुछ कीड़ों से उत्पन्न सूतों से बनाए जाते हैं। कितने ही सन के सूतों से बनाए जाते हैं और कितने ही अन्य सूतों से बनाये जाते हैं।

३- इनमें कपास के वस्त्र सस्ते होते हैं। और अन्य वस्त्र महँगे होते हैं। अत एव सभी लोग अधिकतया कपास के ही वस्त्रों को पहनते हैं।

४—वस्त्रों से बहुत प्रकार के पहिनावे बनाये जाते हैं। धोती बनायी जाती है, साड़ी बनायी जाती है। कुर्ता बनाया जाता है, चोली बनायी जाती हैं। दुपट्टा बनाया जाता है, अँगौछी

अङ्गरक्षकं (निर्मीयते), टोपिका (निर्मीयते) । आस्तरणं (निर्मीयते) । आच्छादनं (निर्मीयते) । उपानत् (निर्मीयते), छत्रं (निर्मीयते) वितानं निर्मीयते, पटकुटी (निर्मीयते) । एवं प्रकारेण वस्त्रद्वारा नानाविधानि परिधानानि आवश्यकवस्तूनि च (निर्मीयन्ते) ।



६— फलम्

१—फलानि भक्ष्यवस्तूनि सन्ति । इमानि वृक्षेभ्यः उत्पद्यन्ते । कानिचित् फलानि लताभ्यः अपि जायन्ते ।

२—फलानाम् अनेकाः जातयः सन्ति यथा—आम्रम्, मधूकम् जम्बूफलम्,पेरुकम्, पनसम्, कर्कटी, कालिङ्गञ्चेत्यादयः । एकस्याम् जातौ अपि अनेके भेदाः भवन्ति यथा—आम्रस्य बीजू, कलमी, मालदह, लँगड़ा, सेनुरिया प्रभृतयः ।

३—रूपभेदेन फलानि बहुविधानि भवन्ति । आम्रम्, जम्बूफलम्, बदरीफलं चेत्यादीनि किञ्चित् लम्बानि भवन्ति । निम्बूकम्, दाडिमम्, लकुचम् चेत्यादीनि गोलाकाराणि भवन्ति । फलेषु पनसं सर्वेभ्यः विशालं लम्बं च भवति ।

४—रसभेदेन अपि फलानि विविधानि भवन्ति । कानिचित् मधुराणि भवन्ति यथा—आम्रम् । कानिचित् कषायाणि भवन्ति यथा—आमलकम् । कानिचित् अम्लानि भवन्ति यथा—आम्रातकम्, इम्लिका तथा निम्बूकम् ।

५—फलानां गुणाः अपि विभिन्नाः भवन्ति । केचन हानिकराः भवन्ति केचन लाभकराः च ।

बनायी जाती है। अँगरखा बनाया जाता है, टोपी बनायी जाती है। बिछौना बनाया जाता है। ओढ़ना बनाया जाता है। जूता बनाया जाता है। छाता बनाया जाता है। सामियाना बनाया जाता है। रावटी बनायी जाती है। इस प्रकार वस्त्र से नाना प्रकार के पहनावे और आवश्यक वस्तुएँ बनायी जाती हैं।



६—फल

१—फल खाने योग्य वस्तु हैं। ये वृक्षों से उत्पन्न होते हैं। कुछ फल लताओं से भी उत्पन्न होते हैं।

२—फलों की अनेक जातियाँ होती हैं जैसे—आम, महुआ, जामुन, अमरूद, कटहल, ककड़ी और कालमी इत्यादि। एक जाति में भी अनेक भेद होते हैं जैसे—आम के बीजू, कलमी, मालदह, लँगड़ा, सेनुरिया आदि।

३—रूप के भेद से फल बहुत प्रकार के होते हैं। आम, जामुन और बैर इत्यादि कुछ लम्बे होते हैं। नीबू, अनार, और बड़हर गोलाकार होते हैं। फलों में कटहल सबसे विशाल और लम्बा होता है।

४—रस भेद से भी फल अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ मधुर होते हैं जैसे—आम। कुछ कसैले होते हैं, जैसे—आँवला। कुछ खट्टे होते हैं, जैसे—अमड़ा, इमली और नीबू।

५—फलों के गुण भी विभिन्न होते हैं। कितने ही हानिकारक होते हैं और कितने ही लाभकारक होते हैं।

६—इमानि फलानि विभिन्नकालेषु (पच्यन्ते)। कानिचित् फलानि ग्रीष्मे, कानिचित् फलानि वर्षासु, तथा कानिचित् अन्य-समयेषु (पच्यन्ते)। कानिचित् फलानि तु द्वादशसु अपि मासेषु (पच्यन्ते)।

७—फलानां विविधैः प्रकारैः उपयोगः (क्रियते)। कानिचित् फलानि (भक्ष्यन्ते)। कानिचित् फलानि (चूष्यन्ते)। कैश्चित् फलैः लेह्यम् सन्धानं च (निर्मीयते) केषाञ्चित् फलानाम् औषधार्थे उपयोगः भवति। केषाञ्चित् शाकम् अपि अति स्वादिष्टं भवति। केचन निर्धनाः जनास्तु अन्नाभावे फलैः एव द्वित्राणि दिनानि यापयन्ति।

८—उपरि लिखितेभ्यः फलेभ्यः अन्यानि अपि कानिचित् फलानि भवन्ति यानि श्रेष्ठफलानि (मन्यन्ते) यथा नारिकेलम्, द्राक्षा, शुष्कखर्जूरम्, निकोचकम्, दाडिमम्, नारङ्गश्चेत्यादीनि। इमानि फलानि विशेषरूपेण स्वास्थ्यकराणि, बलवर्द्धकानि रोगादिषु च उपयोगीनि भवन्ति।

९—एवं फलानि अस्माकं कृते बहुलाभकराणि भवन्ति।



७—पशुः

१—पशुः प्राणिनाम् एका जातिः अस्ति। सर्वे पशवः चतुष्पदाः स्तनपायिनः च भवन्ति। सर्वेषां पशूनां लघु महत् वा पुच्छम् अपि भवति। मनुष्याः इव पशवः अपि गर्भात् उत्पद्यन्ते।

२—संसारे पशूनाम् अनेकाः जातयः सन्ति। सर्वेषां स्वरूपाणि, गुणाः, स्वभावाश्च भिन्नाः भिन्नाः भवन्ति। एतेषां ध्वनयः अपि परस्परं विलक्षणाः भवन्ति।

६ - ये फल विभिन्न समयों में पकते हैं। कुछ फल गर्मी में, कुछ फल बरसात में और कुछ अन्य समयों में पकते हैं। कुछ फल तो बारहो महीने में भी पकते हैं।

७—फलो का विविध प्रकार से उपयोग किया जाता है। कुछ खाये जाते हैं । कुछ फल चूसे जाते हैं। कुछ फलों से चटनी और अँचार बनाये जाते हैं। कुछ फलों का औषधि के लिये उपयोग होता है। कितने के साग भी अति स्वादिष्ट होते हैं। कुछ निर्धन लोग तो अन्न के अभाव में फलों से ही दो-तीन दिन बिता लेते हैं।

८—ऊपर लिखे गये फलों से भिन्न भी कुछ फल होते हैं जो श्रेष्ठ फल माने जाते हैं। जैसे—नारियल, अंगूर, सूखा खजूर, छुहाड़ा, पिस्ता, अनार और नारंगी इत्यादि। ये फल विशेष रूप से स्वास्थ्यकर, बलबर्द्धक और रोगों में उपयोगी होते हैं।

इस तरह फल हम लोगों के लिये बहुत लाभकर होते हैं।



७—पशु

१—पशु एक प्राणियों की जाति है। सभी पशु चार पैर वाले और स्तनपायी होते हैं। सभी पशुओं की छोटी या बड़ी पूँछ होती है। मनुष्य के समान पशु भी गर्भ से उत्पन्न होते हैं।

२—संसार में पशुओं की अनेक जातियाँ होती हैं। सबों के स्वरूप, गुण और स्वभाव भिन्न-भिन्न होते हैं। इनकी ध्वनियाँ भी परस्पर विलक्षण होती हैं।

३—पशुषु केचन वन्याः भवन्ति, केचन ग्रामवासिनः केचन पशवः जलचराः अपि भवन्ति । सिंह-व्याघ्रादयः वन्याः सन्ति । गो-महिष्यादयः ग्रामवासिनः सन्ति । नक्र-मकरादयः जलचराः पशवः सन्ति ।

४—एषु वन्याः पशवः प्रायेण भयानकाः तथा हिंसकाः भवन्ति । ते वनेषु विचरन्ति तथा दुर्बलान् जीवान् मारयित्वा खादन्ति । जलचराः जीवाः जले एव सदा निवसन्ति । तेषु अपि सबलाः जीवाः निर्बलान् जीवान् भक्षयन्ति ।

५—एते वन्याः जलचराश्च जीवाः मनुष्याणां कृते प्रायेण हानिकराः एव भवन्ति । एषु अल्पाः एव किञ्चित् उपकारं कुर्वन्ति । परन्तु ग्रामीणाः पशवः मनुष्यसमाजस्य कृते अतीव आवश्यकाः तथा उपयोगिनः भवन्ति ।

६—ग्राम्येषु पशुषु गौः दुग्धं ददाति बलीवर्दान् च जनयति । बलीवर्दैः अस्माकं कृषिः जायते । महिषी प्रभूतं दुग्धं तथा दधि ददाति । महिषाः शकटानि वहन्ति हलं च चालयन्ति । गजाः अश्वाः उष्ट्राश्च वाहनकार्यं कुर्वन्ति । अश्वाः तथा उष्ट्राः भारम् अपि वहन्ति । गर्दभाः रजकानां कृते बहु उपयोगिनः सन्ति । एते प्रभूतं वस्त्रभारं वहन्ति । अजा अति आरोग्यकरं दुग्धं ददाति । मेषाणां बालैः कम्बलाः (निर्मीयन्ते) । कुक्कुराः गृहाणां रक्षां कुर्वन्ति । बिडालाः मूषकेभ्यः भयं निवारयन्ति ।

७—बहवः जनाः एषां पशूनां व्यापारम् अपि कुर्वन्ति तेन च बहु धनम् उपार्जयन्ति । एवं ग्राम्यपशूनां मानवसमाजे महती उपयोगिता वर्तते ।

□

३—पशुओं में कुछ जंगली होते हैं, कुछ ग्रामवासी। कुछ पशु जलचर भी हैं। सिंह-बाघ आदि जंगली हैं। गाय, भैंस आदि ग्रामवासी होते हैं। नाक-मकर वगैरह जलचर पशु होते हैं।

४—इनमें जंगली पशु प्रायः भयानक तथा हिंसक होते हैं। ये वनों में घूमते हैं तथा दुर्बल जीवों को मारकर खाते हैं। जलचर जीव जल में ही सदा निवास करते हैं। उनमें भी सबल जीव निर्बल जीवों को खा जाते हैं।

५—ये जंगली और जलचर जीव मनुष्यों के लिये प्रायः हानिकारक ही होते हैं। इनमें थोड़े ही कुछ उपकार करते हैं। परन्तु ग्रामीण पशु मनुष्यसमाज के लिये अत्यन्त ही आवश्यक तथा उपयोगी होते हैं।

६—ग्रामीण पशुओं में गाय दूध देती है और बैलों को पैदा करती है। बैलों से हमलोगों की खेती होती है। भैंस बहुत दूध तथा दही देती है। भैंसे गाड़ी-छकड़ा ढोते हैं और हल चलाते हैं। हाथी, घोड़े और ऊँट सवारी का काम करते हैं। घोड़े तथा ऊँट बोझ भी ढोते हैं। गदहे धोबियों के लिये बहुत उपयोगी होते हैं। ये कपड़ों का भारी बोझ ढोते हैं। बकरी अति आरोग्यकर दूध देती है। भेड़ों के बाल से कम्बल बनाये जाते हैं। कुत्ते घर की रक्षा करते हैं। बिलार मूसों से भय दूर करते हैं।

७—बहुत लोग इन पशुओं के व्यापार भी करते हैं और उनसे बहुत धन कमाते हैं। इस तरह गाँव के पशुओं की मानव-समाज में बड़ी उपयोगिता है।



८—वसन्त-ऋतुः

१—भारते एकस्मिन् वर्षे षट् ऋतवः भवन्ति। द्वयोः द्वयोः मासयोः एकः ऋतुः भवति। तत्र चैत्रवैशाखौ वसन्तः भवति। ज्येष्ठः आषाढश्च ग्रीष्मः भवति। श्रावण-भाद्रपदौ च वर्षाः (उच्यन्ते)। आश्विन-कार्तिकौ शरद् भवति। आग्रहायणः पौषश्च हेमन्तः (कथ्यते) तथा माघः फाल्गुनश्च शिशिरः भवति। अनेन प्रकारेण एकस्मिन् वर्षे षड् ऋतवः भवन्ति।

२—एषु ऋतुषु वसन्तऋतुः प्रथमः ऋतुः अस्ति। अयं ऋतुः अतीव रमणीयः भवति। अस्मिन् ऋतौ प्रकृतौ सर्वत्र अपूर्वं सौन्दर्यं (दृश्यते)। जडे चेतने च सर्वत्रनवः उल्लासः(अवलोक्यते)। नरेषु, नारीषु, बालकेषु वृद्धेषु च कापि अपूर्वा मादकता समायाति। अस्माकं देशस्य प्रसिद्धः वसन्तोत्सवः होलिका अस्यैव ऋतोः आरम्भे भवति।

३—शिशिर-ऋतौ सर्वेभ्यः वृक्षेभ्यः पत्राणि निपतन्ति। परन्तु यदा वसन्त-ऋतुः आयाति तदा वृक्षे नूतनानि पल्लवानि लगन्ति। पल्लवे पल्लवे नवीनानि कुसुमानि विकसन्ति। कुसुमे कुसुमे अपूर्वः सुगन्धः आयाति।

४—अन्यच्च—वने वने कोकिलाः कूजन्ति। पुष्पे पुष्पे भ्रमराः गुञ्जन्ति। मुखे मुखे वसन्तगीतानि (श्रूयन्ते)। वनानि उपवनानि च शोभन्ते। पशवः पक्षिणश्च मोदन्ते। सर्वत्र सर्वैरेव महान् आनन्दः (अनुभूयते)।

५—अस्मिन् ऋतौ शीतलः मन्दः सुगन्धिश्च वायुः वहति। इदानीं न अधिकं शीतं भवति न अधिका उष्णता भवति। अनेन कारणेन भ्रमणे, खेलने, कूर्दने च महान् आनन्दः भवति। एभिः कारणैः अयं वसन्तः ऋतुराजः इति (कथ्यते)।

□

८—वसन्त-ऋतु

१—भारत में एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं। दो-दो महीने की एक ऋतु होती है। उसमें चैत-वैशाख वसन्त होता है। जेठ और आषाढ़ ग्रीष्म होता है। सावन और भादो वर्षा कही जाती है। क्वार और कार्तिक शरद होती है। अगहन और पौष हेमन्त कहा जाता है तथा माघ और फागुन शिशिर होता है। इस तरह एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं।

२—इन ऋतुओं में वसन्त ऋतु प्रथम है। यह ऋतु बहुत रमणीय होती है। इस ऋतु में प्रकृति में सर्वत्र विचित्र सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। जड़ और चेतन में सर्वत्र नया उल्लास दिखाई पड़ता हैं। नरों-नारियों और बालकों-वृद्धों में कुछ अपूर्व मादकता आ जाती है। हम लोगों के देश का प्रसिद्ध वसन्तोत्सव होलिका इस ऋतु के हीं आरम्भ में होती है।

३ शिशिर ऋतु में सभी वृक्षों से पत्ते गिर जाते हैं। परन्तु जब वसन्त ऋतु आती है तब वृक्ष-वृक्ष में नये पत्ते लगते हैं। पत्ते-पत्ते में नये फूल खिलते हैं। फूल-फूल में अपूर्व सुगन्धि आ जाती है।

४—और भी—वन-वन में कोयल कुहकती हैं। फूल-फूल पर भौंरे गुन्जार करते हैं। प्रत्येक मुख से वसन्तगीत सुनायी पड़ते हैं। वन और उपवन शोभित होते हैं। पशु-पक्षी खुश होते हैं। सभी जगह सब लोग महान आनन्द का अनुभव करते हैं।

५—इस ऋतु में शीतल मन्द और सुगन्ध हवा बहती है। इस समय न अधिक जाड़ा होता है न अधिक गर्मी। इस कारण से घूमने में, खेलने में और कूदने में महान आनन्द होता है। इन कारणों से यह वसन्त ऋतुराज कहा जाता है।

□

६-- वर्षा-ऋतुः

१—ऋतुषु तृतीयः ऋतुः वर्षा-ऋतुः भवति। ग्रीष्मानन्तरं वर्षा-ऋतुः आगच्छति। वर्षा-ऋतौ अधिकतया वृष्टिः भवति। अत एव अयं ऋतुः वर्षा-ऋतुः (कथ्यते)।

२—वर्षा-ऋतौ प्रायेण सर्वदैव वृष्टिः भवति। आकाशमण्डलं निरन्तरं मेघैः आच्छन्नं तिष्ठति। कदाचित् जलबिन्दवः पतन्ति। कदाचित् मुसलधारा वृष्टिः भवति। अस्मिन् ऋतौ सर्वे जलाशयाः जलेन परिपूर्णाः भवन्ति। समन्तात् जलमयी भूमिः (दृश्यते)।

३—वर्षा-ऋतोः दृश्यम् अतीव रमणीयं भवति। वनेषु उपवनेषु, वाटिकासु, वृक्षेषु, लतिकासु कुसुमेषु, शस्येषु शाद्वलेषु, दिशासु विदिशासु च सर्वत्र नयनाभिरामः हरीतिमा दृष्टिगोचरीभवति। अस्य दिगन्तव्यापिनी श्यामलता सर्वेषां मनांसि मोहयति तथा स्वाभाविकी सरसता नीरसे अपि हृदये रसधारां प्रवाहयति।

४—वर्षा-ऋतौ प्रकृतिनटी विविधानि रूपाणि धारयति। क्वचित् मेघाः गर्जन्ति। क्वचित् विद्युतः विस्फुरन्ति। कदाचित् झञ्झावातः वाति। कदाचित् प्रकाशः भवति। कदाचित् अन्धकारः भवति। कदाचित् च इन्द्रधनुः प्रकाशते।

५—वर्षा-ऋतौ सर्वेषां महान् आनन्दः भवति। वनेषु मयूराः नृत्यन्ति। जलाशयेषु मण्डूकाः रटन्ति। बिलेषु झिल्लिकाः नदन्ति। वृक्षेषु चातकाः कूजन्ति तथा वीथिषु बालकाः खेलन्ति।

६—वर्षाणां समयः कृष्यै अपि बहु लाभदायकः भवति। अस्मिन् समये कृषकाः भूमिं कर्षन्ति। क्षेत्रेषु बीजानि वपन्ति।

६--वर्षा-ऋतु

१— ऋतुओं में तृतीय ऋतु वर्षा ऋतु होती है। गर्मी के बाद वर्षा-ऋतु आती है। वर्षा-ऋतु में अधिकतर वर्षा होती है। इसलिए यह वर्षा-ऋतु कही जाती है।

२—वर्षा-ऋतु में प्रायः सदा ही वर्षा होती है। आकाश-मण्डल निरन्तर मेघों से घिरा रहता है। कभी जल की बूंदें गिरती हैं। कभी मुसलाधार वृष्टि होती है। इस ऋतु में सभी जलाशय जल से परिपूर्ण हो जाते हैं। चारो तरफ भूमि जलमय दि खाई पड़ती है।

३—वर्षा-ऋतु का दृश्य अत्यन्त ही रमणीय होता है। वनों में, उपवनों में, बगीचों में, वृक्षों में, लताओं में फूलों में, फसलों में, हरी-हरी घासों में, दिशाओं और विदिशाओं में सभी जगह नेत्रों को अच्छी लगनेवाली हरियाली दृष्टिगोचर होती है। इसकी दिग्दिगन्तव्यापी श्यामता सबके मन को मोहित कर देती है तथा स्वाभाविक सरसता नीरस हृदय में भी रस की धारा प्रवाहित करती है।

४—वर्षा-ऋतु में प्रकृतिनटी अनेक रूपों को धारण करती है। कहीं मेघ गरजते हैं। कहीं विजलियाँ चमकती हैं। कभी आँधी-के साथ पानी बरसता है। कभी प्रकाश हो जाता है। कभी अन्ध-कार होता है। और कभी इन्द्र-धनुष दिखाई पड़ता है।

५—वर्षा-ऋतु में सभी को महान् आनन्द मिलता है। वनों में मोर नाचते हैं। जलाशयों में मेढक टर्राते हैं। बिलों में झींगुर बोलते हैं। वृक्षों पर चातक कूजते हैं तथा गलियों में बालक खेलते हैं।

५—वर्षा का समय कृषि के लिए भी बहुत लाभदायक होता है। इस समय किसान भमि जोतते हैं। खेतों में बीज

धान्यस्य कृषिः अस्मिन् एव ऋतौ भवति। शस्यानां तृणलतादीनां च महती प्रचुरता जायते।

७—अस्मिन् ऋतौ कष्टमपि बहु भवति। भूमिः पङ्किला जायते। तेन अनेके स्खलन्ति पतन्ति च। जलस्य आधिक्येन मार्गाः अवरुद्धाः भवन्ति। वायुमण्डलं दूषितं भवति। अनेके रोगाः उत्पद्यन्ते। कीट-पतंगादीनां बहुलता जायते। घोरान्धकारे चौराणाम् उपद्रवः अपि वर्द्धते। इमानि कष्टानि भवन्ति।

तथापि वर्षा-ऋतुः महान् आनन्ददायी ऋतुः अस्ति।



१०—गौः

१—गौः एकः चतुष्पात् पशुः अस्ति। अस्याः एकं पुच्छं भवति, द्वे शृंगे भवतः, चत्वारः पादाः भवन्ति। अस्याः गले एकं गलकम्बलं भवति। इदं गलकम्बलं अन्यपशूनां गले न भवति।

२—गौः तृणचारी पशुः अस्ति। इयं वनेषु भ्रमति घासं तृणं च चरति। यावत् इयं वनेषु इतस्ततः न भ्रमति, नवं नवं तृणं न चरति तावत् अस्याः सन्तोषः न भवति। अस्याः स्वभावः अतीव सरलः भवति।

३—गौः महान् उपकारी पशुः अस्ति। इयं दुग्धं ददाति। दुग्धेन दधि भवति। दध्ना घृतं नवनीतं च जायते। अस्याः दुग्धं दधि घृतं च अतीव पवित्रं हितकारकं च भवति।

४—गौः गोमयं ददाति। गोमयेन गृहं (लिप्यते)। गोमयेन रसवती (पच्यते)। गोमयस्य उर्वरकेण शस्यं वर्द्धते। पूजाकार्ये अपि गोमयस्य उपयोगः भवति। गोमूत्रेण च अनेके रोगाः नश्यन्ति।

बोते हैं। धान की खेती इसी ऋतु में होती है। फसलों और तृणलतादिकों की बहुत अधिकता होती है।

७—इस ऋतु में बहुत कष्ट भी होता है। मिट्टी गीली हो जाती है। उससे बहुत से लोग फिसलते रहते हैं और गिरते हैं। जल की अधिकता से रास्ते बन्द हो जाते हैं। वायुमण्डल दूषित हो जाता है। बहुत से रोग उत्पन्न होते हैं। कीड़े-मकोड़ों की बहुलता हो जाती है। घोर अन्धकार में चोरों का उपद्रव भी बढ़ जाता है। ये कष्ट होते हैं।

तब भी वर्षा-ऋतु बहुत आनन्द देने वाली ऋतु है। □

१०—गाय

१—गाय एक चौपाया जानवर है। इसकी एक पूँछ होती है, दो सींघ होते हैं तथा चार पैर होते हैं। इसके गले में एक गल-कम्बल होता है। यह गलकम्बल दूसरे जानवरों के गले में नहीं होता है।

२—गाय घास खाने वाला पशु है। यह वन में घूमती है, घास और तृण चरती है। जब तक यह वन में इधर-उधर नहीं घूमती है, और नये-नये तिनकों को नहीं चर लेती, तब तक इसे सन्तोष नहीं होता है। इसका स्वभाव बहुत ही सरल होता है।

३—गाय महान उपकारी पशु है। यह दूध देती है। दूध से दही बनता है। दही से घी और मक्खन होता है। इसका दूध, दही और घी अत्यन्त पवित्र और हितकारक होता है।

४—गाय गोबर देती है। गोबर से घर लीपा जाता है। गोबर से रसोई पकती है। गोबर के खाद से फसल बढ़ती है। पूजा के काम में भी गोबर का उपयोग होता है। गाय के मूत्र से अनेक रोग नष्ट होते हैं।

५—गौः वत्सान् जनयति। ते शनैः शनैः वृषभाः भवन्ति। तैः वृषभैः कृषिकार्यं भवति। वृषभाः हलं चालयन्ति। वृषभाः शकटं वहन्ति। वृषभाः भारं वहन्ति। ते एव तैलयन्त्रम् अपि चालयन्ति। एवं वृषभैः संसारस्य महान् उपकारः भवति। महत् कल्याणं सम्पद्यते।

६—गोदुग्धम्, गोदधि, गोघृतम्, गोमूत्रम् तथा गोमयं इति इमानि पञ्च वस्तूनि अतीव पवित्राणि (मन्यन्ते)। देवपूजायाम्, पितृकार्ये, संस्कारेषु, हवनकर्मणि च एषां भूयान् उपयोगः भवति। पञ्चगव्यस्य पानेन पापानि अपि नश्यन्ति। गोः दानेन महत् पुण्यं भवति। सर्वे हिन्दवः सर्वेषु धर्मकार्येषु गोदानं कुर्वन्ति।

७—गोः अगणनीयाः उपकाराः सन्ति। गौः पशुः नास्ति। सा माता अस्ति, पिता अस्ति, देवता अस्ति। अत एव गोरक्षायाः अस्माकं शास्त्रेषु बहु महत्त्वं (लिखितं) वर्तते। गोरक्षा मनुष्याणां कृते एकं परमावश्यकं कर्तव्यं वर्तते। अतः सर्वैः गवां रक्षणं पालनं पोषणं सम्वर्द्धनं च (कर्तव्यम्)।



११—हस्ती

१—हस्ती एकः महान् पशुः अस्ति। अस्य शरीरम् अति विशालं भवति। अस्य सर्वाणि अङ्गानि स्थूलानि महान्ति च भवन्ति। केवलम् अस्य अक्षिणी ह्रस्वे भवतः।

२—हस्तिनः एकं विशिष्टम् अङ्गं भवति। तस्य नाम शुण्डा अस्ति। शुण्डया सः बहूनि कार्याणि करोति। शुण्डया वृक्षाणां

५—गाय बछड़ों को पैदा करती है। वे धीरे-धीरे बैल हो जाते हैं। उन बैलों से कृषि का कार्य होता है। बैल हल चलाते हैं। बैलगाड़ी खींचते हैं। बैल बोझ ढोते हैं। वे ही कोल्हू भी चलाते हैं। इस तरह बैलों से संसार का महान उपकार होता है। महान कल्याण होता है।

६—गाय का दूध, गाय का दही, गाय का घी, गाय का मूत्र और गाय का गोबर, ये पाँच वस्तुएँ अत्यन्त ही पवित्र मानी जाती हैं। देवपूजा में, पितृकार्य में, संस्कारों में और हवन-कर्म में इन सबों का बहुत उपयोग होता है। पञ्चगव्य पीने से पाप भी नष्ट होते हैं। गाय के दान से महान पुण्य होता है। सभी हिन्दू सभी धर्मकार्यों में गोदान करते हैं।

७—गाय के अनगिनत उपकार हैं। गाय पशु नहीं है। वह माता है, पिता है, देवता है। अत एव गोरक्षा का हम लोगों के शास्त्रों में बहुत महत्त्व लिखा हुआ है। गाय की रक्षा मनुष्यों के लिये एक परम आवश्यक कर्त्तव्य है। इसलिये सब लोगों को गायों का रक्षण, पालन, पोषण और संवर्द्धन करना चाहिये।



११-हस्ती

१—हाथी एक महान पशु है। इसका शरीर अति विशाल होता है। इसके सभी अंग मोटे और बड़े होते हैं। केवल इसकी आँखें छोटी होती हैं।

२—हाथी का एक विशेष अंग होता है। उसका नाम सूँड़ है। सूँड़ से वह बहुत-से काम करता है। सूँड़ से वृक्षों

शाखाः त्रोटयति। शुण्डया सः खाद्यवस्तूनि मुखे निक्षिपति। शुण्डया जलं पिबति। शुण्डया जिघ्रति। शुण्डया हन्ति। हस्ती हस्तस्य सर्वं कार्यं शुण्डया करोति।

३—हस्ती स्वभावेन अतीव धीरः तथा गम्भीरः भवति। सः चञ्चलः न भवति। सः महाबलवान् अपि अस्ति परन्तु बलस्य अभिमानं न करोति। अनेके बालकाः अपि हस्तिपकाः भवन्ति। ते अंकुशेन हस्तिनं ताडयन्ति। परन्तु हस्ती तेषाम् उपरि कोपं न करोति। ते यथा कथयन्ति सः तथैव चलति आचरति च।

४—हस्ती वाहनस्य कार्ये आगच्छति। रात्रौ वर्षाकाले च अस्य विशेषेण उपयोगः भवति। वरयात्रासु अपि हस्तिनां विशेष-रूपेण आवश्यकता भवति। हस्तिनम् आरुह्य मृगया अपि (विधीयते)। पूर्वं युद्धेऽपि हस्तिनाम् उपयोगः भवति स्म।

५—हस्तिनः दन्ताःअपि द्विविधाः भवन्ति। अनेके दन्ताः मुखस्य आभ्यन्तरे एव तिष्ठन्ति। परं द्वौ दन्तौ मुखाद् बहिः तिष्ठतः। तौ अतीव दीर्घौ भवत। परन्तु आभ्यां दन्ताभ्यां भक्षणस्य कार्यंनभवति। इमौ केवलं दर्शनाय एव तिष्ठतः परं यदा त्रुटितौ भवतः तदा छुरिकादिनिर्माणे एषां दन्तानाम् उपयोगः भवति। हस्तिनां दन्तैः अन्यानि च अनेकानि दर्शनीयवस्तूनि (निर्मीयन्ते)।

६—हस्ती एकः अतीव दर्शनीयः पशुः अस्ति। अनेके हस्तिनः बहूनि कौतुकानि अपि कुर्वन्ति। हस्तिनां विशालं शरीरं गम्भीरं स्वभावं, मन्द-मन्दं गमनम्, अनुशासन-पालनं च दृष्ट्वा मनसि महती प्रसन्नता भवति।

□

की शाखाओं को तोड़ता है। सूँड़ से वह खाद्य वस्तुओं को मुँह में डालता है। सूँड़ से जल पीता है। सूँड़ से सूँघता है। सूँड़ से मारता है। हाथी हाथ का सम्पूर्ण कार्य सूँड़ से ही करता है।

३—हाथी स्वभाव से अत्यन्त धीर तथा गम्भीर होता है। वह चंचल नहीं होता है। वह महा बलवान भी है किन्तु बल का अभिमान नहीं करता है। बहुत से बालक भी हाथीवान होते हैं। वे अंकुश से हाथी को मारते हैं। परन्तु हाथी उनके ऊपर क्रोध नहीं करता है। वे जैसा कहते हैं वह वैसा ही चलता है और करता है।

४—हाथी वाहन के कार्य में आता है। रात में और वर्षाकाल में इसका विशेष प्रकार से उपयोग होता है। बारातों में भी हाथियों की विशेष रूप से आवश्यकता होती है। हाथी पर चढ़कर शिकार भी किया जाता है। पहले युद्ध में भी हाथी का उपयोग होता था।

५—हाथी के दाँत भी दो प्रकार के होते हैं। बहुत से दाँत मुह के अन्दर ही रहते हैं। किन्तु दो दाँत मुह से बाहर रहते हैं। वे दोनों लम्बे होते हैं। परन्तु इन दोनों दाँतों से खाने का काम नहीं होता है। ये दोनों केवल देखने के लिये ही होते हैं। किन्तु जब दोनों टूट जाते हैं तब छुड़ी इत्यादि बनाने में इन दाँतों का उपयोग होता है। हाथी के दाँतों से और भी दूसरी बहुत सी दर्शनीय वस्तुएँ बनायी जाती हैं।

६—हाथी एक बहुत ही दर्शनीय पशु है। अनेक हाथी बहुत से खेल-कौतुक भी करते हैं। हाथियों के विशाल शरीर, गम्भीर स्वभाव, मन्द-मन्द गति और अनुशासन-पालन को देखकर मन में बड़ी प्रसन्नता होती है।

□

१२--आम्रम्

१—अस्माकं देशे बहुविधानि फलानि भवन्ति। तेषु फलेषु आम्रं सर्वोत्तमं फलम् अस्ति। अत एव इदं फलानां राजा (मन्यते)। आम्रं प्रायः सर्वेषु देशेषु फलति। परन्तु भारतवर्षस्य आम्राणि विशेषरूपेण प्रसिद्धानि सन्ति।

२—उत्पत्तिभेदेन आम्रं द्विविधं भवति। एकं "बीजू" (कथ्यते) अपरं च "कलमी" इति। बीजू आम्रस्य रोहिनिया सेनुरिया इत्यादयः शताधिकाः भेदाः भवन्ति। कलमी आम्रस्य च मालदह, बम्बैया लँगड़ा इत्यादयः बहवः भेदाः सन्ति।

३—"बीजू" आम्रस्य फलानि लघूनि भवन्ति। तदपेक्षया "कलमी" आम्राणि बृहन्ति भवन्ति। बीजू आम्राणि सर्वेषां कृते सुलभानि भवन्ति परं कलमी आम्राणि तु धनिकेभ्यः एव सुलभानि भवन्ति। यतः तानि सर्वत्र न उत्पद्यन्ते, महर्घाणि च भवन्ति।

४—सर्वाणि आम्राणि प्रायः वसन्त-ऋतौ एव फलन्ति। आम्रफलानि प्रायेण मधुराणि एव भवन्ति। केषाञ्चित् मधुरता तु अवर्णनीया भवति। कानिचित् अम्लानि तथा नीरसानि अपि भवन्ति। परन्तु एतादृशानि आम्राणि अल्पानि भवन्ति।

५—आम्रफलस्य अनेके उपयोगाः भवन्ति। यदा आम्राणि अपक्वानि भवन्ति तदा तेषां लेह्यादिनिर्माणं भवति। यदा पक्वानि भवन्ति तदा (चूष्यन्ते)। आम्राणां रसैः आम्रावर्तीः अपि (निर्मीयते)। आम्राणि शोषयित्वा तेषां चूर्णम् अपि जनाः निर्मान्ति यत् "अमरचू" इति (कथ्यते)। तस्य व्यञ्जनेषु उप-

१२--आम्र

१—हम लोगों के देश में बहुत प्रकार के फल होते हैं। उन फलों में आम सर्वोत्तम फल है। इसलिए यह फलों का राजा माना जाता है। आम प्रायः सभी देशों में फलता है। परन्तु भारतवर्ष के आम विशेष रूप से प्रसिद्ध होते हैं।

२—उत्पत्ति भेद से आम दो प्रकार का होता है एक को 'बीजू' कहते हैं और दूसरे को "कलमी"। बीजू आम का रोहनिया, सेनुरिया इत्यादि सौ से अधिक भेद होते हैं। कलमी आम के मालदह, बम्बैया, लँगड़ा इत्यादि बहुत से भेद होते हैं।

३—"बीजू" आम के फल छोटे होते हैं। उसकी अपेक्षा "कलमी" आम बड़े होते हैं। बीजू आम सबों के लिए सुलभ होते हैं। परन्तु कलमी आम धनिकों के लिए ही सुलभ होते हैं। क्योंकि वे सर्वत्र नहीं उत्पन्न होते हैं तथा मँहगे भी होते हैं।

४—सभी आम प्रायः वसन्त ऋतु में ही फलते हैं। आम के फल प्रायः मधुर ही होते हैं। कुछ की मधुरता तो अवर्णनीय होती है। कुछ खट्टे और नीरस भी होते हैं। परन्तु इस तरह के फल थोड़े होते हैं।

५—आम के फल के अनेक उपयोग होते हैं। जब आम कच्चे होते हैं तब उनसे चटनी बनायी जाती है। जब पक जाते हैं तब चूसे जाते हैं। आमों के रस से अमावट भी बनाया जाता है। आमों को सुखाकर लोग उनके चूर्ण भी बनाते हैं जिसे "अमचूर" कहते हैं। उसका सब्जियों में उपयोग होता है।

योगः भवति : अनेन प्रकारेण आम्रफलं बहु उपकारकं सुलभं स्वादिष्टं मनोहरं च फलम् अस्ति। अत एव संस्कृतकविभिः आम्रफलस्य प्रशंसायां बहूनि पद्यानि (लिखितानि) सन्ति।



१३—सूर्यास्तम्

१—यदा सूर्यः अस्तं गच्छति तदा सूर्यास्तकालः भवतिः। सायंकाले सूर्यः अस्तं गच्छति। अतः सायङ्कालः सूर्यास्तकालः (कथ्यते) सूर्यः पश्चिमदिशायां अस्तं गच्छति।

२—सूर्यास्तस्य समयः विश्रामस्य समयः भवति। तस्मिन् समये सर्वे विश्रामं कुर्वन्ति। विद्यार्थिनः पठित्वा गृहं आगच्छन्ति। गोचारकाः गाः चारयित्वा गृहं निवर्तन्ते। भृतकाः भृतिं कृत्वा गृहं समायान्ति। पथिकाः गमनं विहाय क्वचित् आश्रयं गृह्णन्ति।

३—एवमेव सायंङ्काले वणिजः पण्यशालाः पिदधति। पशवः गोष्ठेषु (बध्यन्ते)। पक्षिणः स्वकुलायेषु निलीयन्ते। यात्रिणः क्वचित् विश्रामं कुर्वन्ति। भिक्षुकाः स्वगृहान् परावर्तन्ते। एवं सर्वे अपि स्वं स्वं निवासस्थानं समाश्रयन्ति।

४—सूर्यास्तस्य समयः मनुष्याणां कृते—तत्रापि विशेषतः नागरिकाणां कृते विहारस्य समयः भवति। अस्मिन् समये केचन खेलन्ति, केचन भ्रमणं कुर्वन्ति, केचन वाटिकासु विहरन्ति, केचन नदीनां तीरेषु भ्रमन्ति, केचन मन्दिरेषु देवदर्शनाय गच्छन्ति तथा केचन मित्रैः सह मनोरञ्जनं कुर्वन्ति।

५—सूर्यास्त-समये सर्वत्र अन्धकारः प्रसरति अतः तस्मिन् समये गृहे-गृहे दीपकाः (ज्वाल्यन्ते)। नगरेषु आपणेषु च सूर्यास्तस्य दृश्यम् अतीव रमणीयं भवति।



इस प्रकार आम बहुत उपकार करने वाला, सुलभ, स्वादिष्ट और सुन्दर फल होता है। अतएव संस्कृत कवियों के द्वारा आम के फल की प्रशंसा में बहुत से पद्य लिखे गये हैं।



१३—सूर्यास्त

१—जब सूर्य अस्त होता है, तब सूर्यास्तकाल होता है। सायं काल में सूर्य अस्त होता है। इस लिए सायंकाल सूर्यास्तकाल होता है। सूर्य पश्चिम दिशा में अस्त होता है।

२—सूर्यास्त का समय विश्राम का समय होता है। उस समय सभी विश्राम करते हैं। विद्यार्थीगण पढ़कर घर आते हैं। गाय चराने वाले गायों को चराकर घर लौटते हैं। नौकर नौकरी कर घर को आते हैं। यात्री चलना बन्द कर कहीं पर डेरा डाल देते हैं।

३—इस तरह सायंकाल में बनियाँ दूकानें बन्द करते हैं। पशु गोशालाओं में बाँधे जाते हैं। पक्षी अपने घोसलों में छिपते हैं। यात्री कही विश्राम करते है। भिक्षुक अपने घर लौटते हैं। इस तरह सभी अपने-अपने निवासस्थान को आ जाते हैं।

४—सूर्यास्त का समय मनुष्यों के लिए, उसमें भी विशेषतः नगरनिवासियों के लिए विहार का समय होता है। इस समय कोई खेलते हैं। कोई घूमते हैं। कुछ बगीचों में विहार करते हैं। कुछ नदियों के तटों पर घूमते हैं। कुछ मन्दिरों में देवताओं के दर्शन के लिए जाते हैं तथा कुछ मित्रों के साथ मनोरंजन करते हैं।

५—सूर्यास्त के समय सर्वत्र अन्धकार छा जाता है। अतः उस समय घर-घर में दीपक जलाये जाते हैं। नगरों में और बाजारों में सूर्यास्त का दृश्य बहुत ही रमणीय होता है।

१४—सूर्योदयः

१—सूर्यस्य उदयः सूर्योदयः कथ्यते। प्रातः काले पूर्वदिशायां सूर्योदयः भवति। यदा सूर्योदयः भवति तदा अन्धकारस्य नाशः तथा सर्वत्र प्रकाशः जायते।

२—सूर्योदयस्य समयः अतीव स्फूर्तिमयः तथा उत्साहमयः भवति। तस्मिन् समये सर्वे जनाः शयनात् उत्तिष्ठन्ति। उत्थाय च केचन भ्रमणार्थं गच्छन्ति। केचन नित्यक्रियाः कुर्वन्ति। ततश्च सर्वे स्वस्मिन् स्वस्मिन् दैनिके कार्ये संलग्नाः भवन्ति।

३—कृषकाः क्षेत्रेषु हलं चालयन्ति। वणिजः आपणेषु पण्यान् उद्घाटयन्ति। स्त्रियः गृहकार्याणि कुर्वन्ति। विद्यार्थिनः पठन लेखनं च आरभन्ते। पूजकाः मन्दिरेषु पूजाम् अनुतिष्ठन्ति। ब्रह्मचारिणः गुरुकुलेषु सन्ध्योपासनं कुर्वन्ति। कर्मकराश्च स्वानि स्वानि कार्याणि कर्तुं गच्छन्ति।

४—एवमेव सूर्योदये जाते पक्षिणः अपि स्व-स्व-व्यापारे संलग्नाः भवन्ति। कीटाः पिपीलिकाः अपि उद्यमे निरताः भवन्ति।

५—यदा सूर्योदयः भवति तदा वनस्पतिषु अपि नवीनता आयाति। लता-विटपादयः उल्लसिताः जायन्ते। पल्लवाः पुष्पाणि च प्रफुल्लितानि भवन्ति। एवं सूर्योदयेन प्रकृतिराज्ये सर्वत्र नवीना चेतना, नवीनः उत्साहः, नवीनं च सौन्दर्यं समायाति।

६—दौर्भाग्यवशात् अनेके अलसाः जनाः सूर्योदयकाले अपि शयनं न मुञ्चन्ति। अनेक शयनात् उत्थाय अपि किञ्चित् कार्यं न कुर्वन्ति। परन्तु अयं स्वभावः हितकरः नास्ति। अतः सर्वैः अपि जनैः प्रातः काले उत्थाय स्व-स्व-कर्मणि संलग्नैः (भवितव्यम्)।

१४—सूर्योदय

१—सूर्य का उदय सूर्योदय कहा जाता है। प्रातः काल पूर्व दिशा में सूर्योदय होता है। जब सूर्योदय होता है तब अन्धकार का नाश तथा सब जगह प्रकाश हो जाता है।

२—सूर्योदय का समय बहुत ही स्फूर्तिजनक तथा उत्साह-जनक होता है। उस समय सभी लोग शयन से उठते हैं। और उठकर कुछ लोग घूमते जाते हैं, कुछ नित्यक्रिया करते हैं। उसके बाद सभी अपने-अपने दैनिक कार्य में संलग्न हो जाते हैं।

३—किसान खेतों में हल चलाते हैं। व्यापारी बाजारों में दुकानों को खोलते हैं। स्त्रियाँ घर का कार्य करती हैं। विद्यार्थी-गण पढ़ना और लिखना प्रारम्भ करते हैं। पुजारी मन्दिरों में पूजा करते हैं। ब्रह्मचारी गण गुरुकुलों में सन्ध्योपासन करते हैं। मज-दूर अपने-अपने कार्यों को करने के लिए जाते हैं।

४ - इस तरह सूर्योदय होने पर पशु-पक्षी भी अपने-अपने व्यापार में लग जाते हैं। कीड़े-चीटियाँ आदि जीव भी उद्योग में निरत हो जाते हैं।

५—जब सूर्योदय होता है तब वनस्पतियों में भी नवीनता आ जाती है। लता-विटप इत्यादि शोभायुक्त हो जाते हैं। पल्लव और फूल हरे-भरे हो जाते हैं। इस तरह सूर्योदय से प्रकृति के राज्य में सर्वत्र नवीन चेतना, नया उत्साह और नया सौन्दर्य आ जाता है।

६—दुर्भाग्यवश बहुत से आलसी मनुष्य सूर्योदय काल में भी सोना नहीं छोड़ते हैं। बहुत से लोग शयन से उठकर भी कुछ काम नहीं करते हैं। परन्तु यह स्वभाव हितकर नहीं है। अतः सभी मनुष्यों को प्रातःकाल उठकर अपने-अपने कामों में लग जाना चाहिए।

□

१५—हिमालयः

१—हिमालयः एकः पर्वतः अस्ति। अयं पर्वतेषु महान् पर्वतः अस्ति। अत एव अयं पर्वतराज इति (उच्यते)। अस्मिन् पर्वते हिमस्य अधिकता भवति। तेन अस्य हिमालय इति नाम अस्ति।

२—अयं पर्वतः भारतस्य उत्तरदिशायाम् अस्ति। अयं महान् विशालः लम्बायमानश्च अस्ति। अस्य अनेकानि शिखराणि अतीव उच्चतमानि सन्ति। अस्य गौरीशङ्करनामकं शिखरं संसारस्य सर्वेषु शिखरेषु उच्चतमं मन्यते। अयं पर्वतः भारतस्य उत्तर-दिशायाः महाबलवान् प्रहरी इव बहोः कालात् अस्य देशस्य रक्षां कुर्वाणः अस्ति।

३—हिमालयस्य उपरि अनेके देशाः अनेकानि नगराणि च विद्यमानानि सन्ति। बहूनि वनानि उपवनानि च वर्तन्ते। अत्र अनेकाः जातयः निवसन्ति। अत्र नानाविधाः वनस्पतयः विविधानि फलानि तथा नानाप्रकारकाणि खाद्यवस्तूनि च (उपलभ्यन्ते)।

४—अस्मिन् पर्वते अनेकानि तीर्थस्थानानि च सन्ति। बहूनां मुनीनां तपोवनानि विद्यन्ते। बहूनि अतिप्राचीनानि ऐतिहासिक-स्थानानि वर्तन्ते। एवं प्रकारेण अयं पर्वतः महान् विशालः, महान् दीर्घः, महान् आश्चर्यकारकः तथा महान् उपकारी च अस्ति। अत एव संस्कृतग्रन्थेषु हिमालयस्य अतीव महत्त्वपूर्णं वर्णनं (लभ्यते)। महाकविना कालिदासेन "कुमारसम्भव" महाकाव्यस्य प्रथमसर्गे हिमालयस्य यत् मनोहरं वर्णनं विहितं वर्तते तत् पाठकैः अवश्यमेव (पठनीयम्)। तस्य इदं प्रथमं पद्यं विद्यते—

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥

१५—हिमालय

१—हिमालय एक पर्वत है। यह पर्वतों में महान पर्वत है। अत एव यह "पर्वतराज" कहा जाता है। इस पर्वत पर वर्फ की अधिकता है। इस कारण इसका हिमालय ऐसा नाम है।

२—यह पर्वत भारत की उत्तर दिशा में है। यह महान, विशाल और लम्वा है। इसके अनेक शिखर वहुत ही ऊँचे हैं। इसका "गौरीशंकर" नामक शिखर संसार के सभी शिखरों में उच्चतम माना जाता है। यह पहाड़ भारत की उत्तर दिशा के महाबलवान पहरेदार के समान बहुत काल से इस देश की रक्षा कर रहा है।

३—हिमालय के ऊपर अनेक देश और अनेक नगर विद्यमान हैं। बहुत से वन और उपवन हैं। यहाँ अनेक जातियाँ निवास करती हैं। यहाँ नाना प्रकार की वनस्पतियाँ, विविध प्रकार के फल तथा नाना प्रकार की खाद्यवस्तुएँ मिलती हैं।

४—इस पर्वत पर अनेक तीर्थस्थान हैं। बहुत से मुनियों के तपोवन हैं। बहुत से अतिप्राचीन ऐतिहासिक स्थान हैं। इस प्रकार यह पर्वत महाविशाल, बड़ा लम्बा, महान आश्चर्य-कारक और महान उपकारी है। अत एव संस्कृत ग्रन्थों में हिमालय का बहुत महत्त्वपूर्ण वर्णन मिलता है। महाकवि कालिदास ने "कुमार संभव" महाकाव्य के प्रथमसर्ग में हिमालय का जो वर्णन किया है उसे पाठकों को अवश्य पढ़ना चाहिये। उसका यह पहला पद्य है—

"इस भारतवर्ष की उत्तरदिशा में दिव्यात्मा हिमालय नाम का पर्वतों का राजा है। यह पूरव और पश्चिम के समुद्र से जुट कर पृथ्वी के मापदण्ड के समान स्थित है"।

□

१६—वाराणसी

१—अस्माकं देशे बहूनि तीर्थस्थानानि सन्ति। तेषु वाराणसी अपि एकं प्रसिद्धं तीर्थस्थानम् अस्ति। इदं काशीनाम्ना अपि प्रसिद्धं वर्तते।

२—वाराणसी अतीव प्राचीनतमं तीर्थस्थानम् अस्ति। अनेकेषु प्राचीनग्रन्थेषु अस्य महिमा वर्णितः अस्ति। स्कन्द-पुराणस्य काशीखण्डे अस्याः वाराणस्याः विस्तरेण वर्णनं विहितं वर्तते।

३—इयं नगरी गंगायाः पवित्रे तटे विराजमाना अस्ति। अत्रैव विश्वनाथस्य प्रसिद्धं सुवर्णमयं मन्दिरम् अस्ति। अन्यानि अपि बहूनि देवमन्दिराणि सन्ति। अत्र एकं "मणिकर्णिका" इति नामकं स्थानं वर्तते। अत्र दूरदूरात् आनीय शवाः (दाह्यन्ते)। अत्रैव एकं पिशाचमोचनंनामकं तीर्थमस्ति यत्र यात्रिणः आगत्य पितॄणां श्राद्धक्रियां कुर्वन्ति। शिवरात्रिदिने अत्र विशेषरूपेण मेला लगति। ग्रहणसमये अपि अत्र महान् जनसमुदायः एकत्र भवति। अत्र गंगायां स्नानाय श्रीविश्वनाथस्य दर्शनाय च सदैव भिन्न-भिन्न-प्रदेशेभ्यः जनाः आगच्छन्ति।

४—वाराणसी भारतस्य सुप्रसिद्धं पुरातनं विद्यापीठमपि अस्ति। अत्र बहोः प्राचीनकालात् पठनपाठनयोः परम्परा आगच्छति। अत्र अनेके विख्याताः पण्डिताः जाताः सन्ति। अद्यापि अत्रत्यानां पण्डितानां देशे विदेशे सर्वत्र प्रतिष्ठा भवति। विश्वविख्यातः हिन्दू-विश्वविद्यालयः अत्रैव विराजते। संस्कृत-शिक्षायाः प्रसिद्धं केन्द्रं सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः अस्याः एव शोभां वर्द्धयति।

१६—वाराणसी

१—हमलोगों के देश में बहुत से तीर्थस्थान हैं। उन में वाराणसी भी एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यह काशी नाम से भी प्रसिद्ध है।

२—वाराणसी अति प्राचीनतम तीर्थस्थान है। अनेकों प्राचीन-ग्रन्थों में इसकी महिमा वर्णित है। स्कन्दपुराण के काशीखण्ड में वाराणसी का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

३—यह नगरी गंगा के पवित्र तट पर विराजमान है। यही पर विश्वनाथ का प्रसिद्ध सुवर्णमय मन्दिर है। अन्य भी बहुत देव मन्दिर हैं। यहाँ एक मणिकर्णिका नाम का स्थान है। यहाँ दूर-दूर से लाकर मुर्दे जलाये जाते हैं। यहाँ ही एक पिशाचमोचन नामक तीर्थस्थान है जहाँ यात्रीगण आकर पितरों की श्राद्धक्रिया करते हैं। शिवरात्रि के दिन यहां विशेष रूप से मेला लगता है। ग्रहण के समय भी यहाँ महान जनसमुदाय इकट्ठा होता है। यहाँ गंगा में स्नान के लिए और श्री विश्वनाथ के दर्शन के लिए सदा ही भिन्न-भिन्न प्रदेशों से सबलोग आते हैं।

४—वाराणसी भारत का सुप्रसिद्ध प्राचीन विद्यापीठ भी है। यहाँ बहुत प्राचीन काल से पठन-पाठन की परम्परा चली आ रही है। यहाँ अनेक विख्यात पण्डित उत्पन्न हुए हैं। आज भी यहाँ के पण्डितों की देश-विदेश में सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है। विश्वविख्यात हिन्दू विश्व-विद्यालय यहीं है। संस्कृत शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र सम्पूर्णानन्द-संस्कृत विश्वविद्यालय इसकी ही शोभा बढ़ाता है।

५—वाराणस्यां गंगायाः तीरे अनेके मनोहराः घट्टाः सन्ति। बहूनि सुधाधवलितानि सौधानि च बिराजन्ते। यदा सायङ्काले तीर-वर्तिषु गृहेषु दीपाः (ज्वाल्यन्ते) तदा तीरे अतीव रमणीयं दृश्यं दृष्टिगोचरं भवति।

६—अस्यां प्रसिद्धेषु घट्टेषु सन्ध्याकाले महान् जनसमुदायः एकत्र भवति। तत्र केचन स्नानं कुर्वन्ति। केचन सन्ध्यावन्दनं कुर्वन्ति। केचित् कथां शृण्वन्ति। केचित् कीर्तनं कुर्वन्ति। केचित् गोष्ठीसुखम् अनुभवन्ति। केचित् नौकासु विहरन्ति। केचित् गंगायाः दृश्यम् अवलोकयन्ति।

७—एवं प्रकारेण वाराणसी अस्माकं पवित्रं तीर्थस्थानम्, विद्यायाः विश्वविख्यात-केन्द्रम्, तुलसीदासस्य कबीरदासस्य च साधनाभूमिः तथा मुमुक्षूणां मुक्तिदात्री नगरी अस्ति।



१७-दीपावली

१—यथा होलिका हिन्दूनाम् एकं महत् पर्व वर्तते तथैव दीपा-वली अपि एकं महत् पर्व अस्ति। इदं कार्तिकमासस्य कृष्णपक्षे अमावस्यायां भवति। अस्मिन् पर्वणि सर्वत्र विशेषरूपेण दीपाः (ज्वाल्यन्ते)। अत एव अस्य नाम दीपावली इति वर्तते।

२—अस्मिन् दिने सर्वे जनाः स्व-स्व-गृहान् परिष्कुर्वन्ति। अन्तः, बहिः, नीचैः उपरि, पश्चात्, पुरस्तात्, सर्वत्र सम्मार्जना (विधीयते)। केचन स्वगृहं मृत्तिकया लेपयन्ति। केचन सुधया

५—वाराणसी में गंगा तट पर अनेक मनोहर घाट हैं। बहुत से चूना से सफेद किये गये महल हैं। जब सन्ध्या के समय किनारे के घरों में दीपक जलाये जाते हैं, तब तट पर अतीव रमणीय दृश्य दिखाई पड़ता है।

६—इसके प्रसिद्ध घाटों पर सन्ध्या काल में महान् जनसमुदाय एकत्र होता है। वहाँ कुछ लोग स्नान करते हैं। कुछ सन्ध्या वन्दन करते हैं। कुछ कथा सुनते हैं। कुछ कीर्तन करते हैं। कुछ सभा के सुख का अनुभव करते हैं। कुछ नावों पर विहार करते हैं। कुछ गंगा के दृश्य को देखते हैं।

७—इस प्रकार वारणसी हमलोगों का पवित्र तीर्थस्थान, विद्या का विख्यात केन्द्र, तुलसीदास की और कबीरदास की साधनाभूमि तथा मुमुक्षुओं को मुक्ति देने वाली नगरी है।



१७–दीपावली

१—जैसे होलिका हिन्दुओं का एक महान पर्व है वैसे ही दीपावली भी एक महान पर्व है। यह कार्तिक मास के कृष्णपक्ष में अमावस्या को होता है। इस पर्व में सर्वत्र विशेषरूप से दीप जलाये जाते हैं। इसलिए इसका नाम दीपावली है।

२—इस दिन सभी लोग अपने-अपने घरों को साफ करते हैं। भीतर, बाहर, नीचे, ऊपर, पीछे, आगे, सभी जगह सफाई की जाती है। कुछ लोग अपना घर मिट्टी से लीपते हैं। कुछ लोग चूना से लीपते हैं। कछ लोग नाना प्रकार के रंगों से

लेपयन्ति। केचन नानाविधैः रङ्गैः स्वभवनानि भूषयन्ति। बहवः जनाः पल्लव-पुष्पादिना अपि स्वभवनानि अलंकुर्वन्ति।

३—ततः सायंकाले सर्वे जनाः स्व-स्व-गृहे दीपान् ज्वालयन्ति। नगरनिवासिनः जनाः स्व-स्व-गृहेषु विद्युद्वर्तिकाः अपि प्रकाशयन्ति। गृहे, मन्दिरे, गोष्ठे, कूपे, आलिन्दे, द्वारे सर्वत्र दीपाः (ज्वाल्यन्ते। अस्मिन् दिने चतुर्दिक्षु दीपाः एव दृष्टिपथम् आयान्ति। सर्वाः दिशः सर्वं गगनमण्डलं च प्रकाशमयं भवति।

४—अस्य दिनस्य सायङ्कालिकी शोभा अतुलनीया भवति, अवर्णनीया भवति। नगरेषु सर्वे जनाः अस्याः शोभायाः दर्शनाय परितः भ्रमन्ति।

५—अस्मिन् दिने रात्रौ लक्ष्मीपूजनं भवति। तत्रापि वणिजः विशेषरूपेण लक्ष्मीपूजां कुर्वन्ति वार्षिकं च आय-व्ययादि गणयन्ति। बहवः जनाः स्वभाग्यपरीक्षायै द्यूतक्रीडाम् अपि कुर्वन्ति। एतस्मिन् दिने बहवः जनाः नवीनाणि पात्रानि वस्त्राणि च क्रीणन्ति।

६—अस्मिन् दिने रात्रिपर्यन्तं जनाः जागरणं कुर्वन्ति, परितः भ्रमन्ति, दीपमालाः अवलोकयन्ति, खेलन्ति, मोदन्ते च। (अस्याः) रात्रेः अन्तिमे प्रहरे स्त्रियः शूर्पान् वादयित्वा गृहात् दरिद्रायाः निस्सारणं कुर्वन्ति। एवं प्रकारेण दीपावली प्रतिवर्षमागत्य प्रत्येकं गृहं शोभयति तथा सर्वेषामुल्लासं वर्द्धयति।

□

अपने घरों को सजाते हैं। बहुत लोग पत्ते-फूल आदि से भी अपने घरों को अलंकृत करते हैं।

३—उसके बाद सायंकाल सभी लोग अपने-अपने घर में दीपक जलाते हैं। नगर में निवास करने वाले लोग अपने-अपने घरों में बिजली की बत्तियों को भी जलाते हैं। घर में, मन्दिर में, गोशाला में, कुएँ पर, ओसारे पर, दरवाजे पर सभी जगह दीपक जलाये जाते हैं। इस दिन चारो दिशाओं में दीप ही दीप दिखाई पड़ते हैं। सभी दिशायें और सम्पूर्ण गगनमण्डल प्रकाशमय हो जाता है।

४—इस दिन की सायंकालीन शोभा अतुलनीय होती है, अवर्णनीय होती है। शहरों में सभी लोग इसकी शोभा को देखने के लिए चारो तरफ घूमते रहते हैं।

५—इस दिन रात में लक्ष्मीपूजन होता है। उसमें भी व्यापारी लोग विशेषरूप से लक्ष्मीपूजा करते हैं और वार्षिक आमदनी और खर्च का हिसाब करते हैं। बहुत लोग अपने भाग्य की परीक्षा करने के लिए जुआ भी खेलते हैं। इस दिन बहुत लोग नये पात्र और वस्त्रों को खरीदते हैं।

६ इस दिन रात्रि पर्यन्त लोग जागते हैं, चारों तरफ घूमते हैं, दीपों की पंक्तियों को देखते हैं, और आनन्दित होते हैं। रात्रि के अन्तिम पहर में स्त्रियाँ सूपों को बजाकर घर से दरिद्रा का निस्सारण करती हैं। इस प्रकार दीपावली प्रतिवर्ष आकर प्रत्येक घर को सुशोभित करती है और सबके उल्लास को बढ़ाती है।

□

१८–होलिका

१—होलिका हिन्दूनाम् एकः उत्सवः अस्ति। अयं महान् आनन्ददायी उत्सवः अस्ति। अयं वसन्तोत्सवः इत्यपि (कथ्यते)। अयम् उत्सवः फाल्गुनस्य पूर्णिमायां तथा चैत्रकृष्णपक्षस्य प्रतिपदि भवति।

२—तत्र प्रथमदिने रात्रौ होलिकादाहः भवति। सर्वे जनाः स्वस्वग्रामे एकत्र काष्ठादि - सञ्चयं कुर्वन्ति। तं च रात्रौ सर्वे सम्मिल्य ज्वालयन्ति। अयम् एव विधिः होलिकादाहः (कथ्यते)।

३—ततः द्वितीयदिने प्रातः धूलिवन्दनं भवति। जनाः धूलिं कर्दमं च परस्परं प्रक्षिपन्ति। बहवः अश्लीलशब्दान् अपि उच्चारयन्ति। अनेके अश्लीलगीतानि अपि गायन्ति। सर्वे जनाः उन्मत्ताः इव जायन्ते। सङ्घीभूय सर्वे जनाः स्वस्वग्रामे गायन्तः वादयन्तः खेलन्तः हसन्तश्च सर्वतः भ्रमन्ति।

४-ततः अपराह्णे सायंकाले वा अवीरगुलालादिकं (प्रयुज्यते)। केचन शुष्कमेव अवीरगुलालं मुखे लगयन्ति। केचन जले मेलयित्वा शृङ्गिकया प्रक्षिपन्ति। गृहे-गृहे सम्मिलितरूपेण गीतानि (गीयन्ते) अर्धरात्रि-पर्यन्तं गीतवाद्यादिकं चलति। अस्मिन् दिने अपूपादीनि नानाविधानि मिष्टभोज्यानि अपि गृहे गृहे (निर्मीयन्ते) तथा सर्वैरपि (भुज्यन्ते)।

५—अयं महान् आनन्ददायकः उत्सवः अस्ति। अस्मिन् दिने परदेशवासिनः अपि स्वस्वगृहम् आयान्ति। सर्वे जनाः

२१—होलिका

१—होलिका हिन्दुओं का एक उत्सव है। यह महान आनन्द-दायी उत्सव है। यह वसन्तोत्सव भी कहा जाता है। यह उत्सव फाल्गुन की पूर्णिमा को तथा चैत के कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा को होता है।

२—उसके प्रथम दिन की रात में होलिकादाह होता है। सभी लोग अपने-अपने गाँव में एक जगह लकड़ी इत्यादि संचित करते हैं। उसको रात में सभी मिलकर जलाते हैं। इसी विधि को "होलिकादाह" कहा जाता है।

३—उसके दूसरे दिन प्रातःकाल धूलिवन्दन होता है। लोग धूल और कीचड़ परस्पर फेंकते हैं। बहुत लोग बुरे शब्दों को भी कहते हैं। अनेक लोग अश्लील गीतों को भी गाते हैं। सभी लोग पागल के समान हो जाते हैं। संगठित होकर सब लोग अपने-अपने गाँव में गाते हुए, बजाते हुए, खेलते हुए और हँसते हुए सभी जगह घूमते हैं।

४—उसके पश्चात् दोपहर के बाद अथवा सायंकाल में अबीर-गुलाल आदि लगाया जाता है। कुछ लोग सूखा ही अबीर-गुलाल मुख में लगाते हैं। कुछ लोग जल में घोलकर पिचकारी से चलाते हैं। घर-घर में सम्मिलित रूप से गीत गाये जाते हैं। आधी रात तक गीत वाद्यादि चलता है। इस दिन पूआ इत्यादि नाना प्रकार के मिष्टान्न-भोजन भी बनाये जाते हैं और सभी लोगों के द्वारा खाये जाते हैं।

५—यह महान आनन्ददायक उत्सव है। इस दिन पर-देशवासी जन भी अपने-अपने घर चले आते हैं। सभी लोग

वैरादिकं विस्मृत्य परस्परं मिलन्ति। सर्वे सर्वेषां गृहं गच्छन्ति। शरीरं वस्त्रं, गृहं, द्वारं, सर्वम् अपि रङ्गमयं भवति। सर्वत्र हर्षस्य उल्लासस्य च साम्राज्यं भवति। गीतैः वाद्यैश्च समस्तं गगनमण्डलम् आपूरितं भवति।

६—अत एव होलिका हिन्दूनां सर्वप्रियः महोत्सवः अस्ति।



२२—सरस्वतीपूजा

१—सरस्वती अस्माकम् एका देवता अस्ति। इयं ज्ञानस्य देवता अस्ति। यथा शक्तेः देवता दुर्गा अस्ति, सम्पत्तेः देवता लक्ष्मीः अस्ति तथैव ज्ञानस्य देवता सरस्वती अस्ति।

२—सरस्वत्याः चत्वारः हस्ताः भवन्ति। तेषु एकस्मिन् हस्ते सा पुस्तकं धारयति, एकस्मिन् हस्ते मालां धारयति, एकस्मिन् हस्ते वीणां धारयति तथा एकेन हस्तेन वीणां वादयति।

३—सरस्वत्याः वाहनं हंसः अस्ति। इयं पद्मासने तिष्ठति इयं शुक्लानि वस्त्राणि धारयति। अस्याः मूर्तिः अतीव मनोहरा गम्भीरा शान्तिमयी प्रसन्नाकारा च भवति।

४—सरस्वती ज्ञानस्य अधिष्ठात्री देवता अस्ति। इयं ज्ञानमयी अस्ति। इयं ज्ञानं ददाति, अज्ञानं च दूरीकरोति। इयं विवेकं ददाति, अविवेकं च निवारयति। इयं विद्यां ददाति अविद्यां च नाशयति।

वैर आदि भूलकर परस्पर मिलते हैं। सब लोग सभी के घर जाते हैं। शरीर, वस्त्र, घर, दरवाजा सब कुछ रंगमय हो जाता है। सभी जगह हर्ष और उल्लास का साम्राज्य छा जाता है। गानों से और वाद्यों से समस्त गगनमण्डल पूर्ण हो जाता है।

६—इसी लिये होली हिन्दुओं का सर्वप्रिय त्योहार है !



१६—सरस्वती पूजा

१—सरस्वती हम लोगों की एक देवता है। यह ज्ञान की देवता है। जैसे, शक्ति की देवता दुर्गा है, सम्पत्ति की देवता लक्ष्मी है, वैसे ही ज्ञान की देवता सरस्वती है।

२—सरस्वती के चार हाथ हैं। उनमें एक हाथ में वह पुस्तक धारण करती है। एक हाथ में माला धारण करती है। एक हाथ में वीणा धारण करती हैं तथा एक हाथ से वीणा बजाती है।

३—सरस्वती का वाहन हंस है। यह पद्मासन पर बैठती है। यह सफेद वस्त्रों को धारण करती है। इसकी मूर्ति अत्यन्त ही मनोहर, गम्भीर, शान्तिमयी और प्रसन्नाकृतिवाली होती है।

४—सरस्वती ज्ञान की अधिष्ठात्री देवता हैं। यह ज्ञानमयीं है। यह ज्ञान को देती है, अज्ञान को दूर करती है। यह विवेक को देती है और अविवेक को दूर करती है। यह विद्या को देती है और अविद्या को नष्ट करती है।

५—अत एव सर्वे विद्योपासकाः सरस्वतीं सेवन्ते, सरस्वतीं प्रणमन्ति, सरस्वतीं पूजयन्ति, सरस्वतीं स्तुवन्ति तथा सरस्वतीम् एव उपासते।

६—सरस्वती एव विदुषां विद्यार्थिनां च महामान्या देवता अस्ति। अत एव बसन्तपञ्चम्यां भारतस्य सर्वेषु अपि विद्यालयेषु महता समारोहेण सरस्वत्याः पूजा भवति।

७—यदा सरस्वती प्रसन्ना भवति तदा विद्यार्थिभ्यः विद्यां ददाति, बुद्धिं ददाति, विवेकं च ददाति। परं सरस्वती केन प्रकारेण प्रसन्ना भवति? परिश्रमेण, अभ्यासेन, सदाचारेण, विनयेन, गुरुसेवया च। अतः विद्याभिलाषिभिः परिश्रमेण पठनीयम्, पठितस्य पुनः पुनः अभ्यासः कर्तव्यः, सदाचारस्य पालनं (कर्तव्यम्), सर्वत्र विनयेन (वर्तितव्यम्) तथा गुरुजनानां सेवा (कर्त्तव्या) इमानि एव सरस्वतीपूजायाः प्रधानानि साधनानि सन्ति।



२०—दुर्गापूजा

—श्रीदुर्गा हिन्दुसमाजस्य एका सुप्रसिद्धा देवता अस्ति। काली, चण्डी, दुर्गा, भगवती इत्यादीनि अस्याः अनेकानि नामानि सन्ति।

२—यथा सरस्वती ज्ञानस्य अधिष्ठात्री देवता अस्ति तथैव श्रीदुर्गा शक्तेः अधिष्ठात्री देवता अस्ति। अस्याः अष्टौ बाहवः सन्ति। सर्वेषु हस्तेषु इयम् अस्त्र- शस्त्राणि धारयति। सिंहः अस्याः वाहनं वर्तते। तम् एव आरुह्य इयं देवी शस्त्रास्त्रैः शत्रूणां दमनं करोति। श्रीदुर्गासप्तशती-पुस्तके विस्ताररूपेण दुर्गायाः कथा लिखिता अस्ति।

५—अत एव सभी विद्या के उपासक सरस्वती की सेवा करते हैं, सरस्वती को प्रणाम करते हैं, सरस्वती को पूजते हैं, सरस्वती की स्तुति करते हैं तथा सरस्वती की उपासना करते हैं।

६—सरस्वती ही विद्वानों की और विद्यार्थियों की महामान्य देवता हैं। अतएव वसन्तपञ्चमी को भारत के सभी विद्यालयों में महान समारोह से सरस्वती की पूजा होती है।

७—जब सरस्वती प्रसन्न होती है तब विद्यार्थियों को विद्या देती है, बुद्धि देती है और विवेक देती है। परन्तु सरस्वती किस प्रकार प्रसन्न होती हैं? परिश्रम से, अभ्यास से, सदाचार से, नम्रता से और गुरु की सेवा से। अतः विद्या चाहने वालों को परिश्रम से पढ़ना चाहिए, पढ़े हुए का बार-बार अभ्यास करना चाहिये, सदाचार का पालन करना चाहिए, सभी जगह नम्रता से व्यवहार करना चाहिए तथा गुरुजनों की सेवा करनी चाहिए। यही सरस्वतीपूजा के प्रधान साधन हैं।

C

२०—दुर्गापूजा

१—श्री दुर्गा हिन्दू समाज की एक सुप्रसिद्ध देवता है। काली, चण्डी, दुर्गा, भगवती इत्यादि इसके अनेक नाम हैं।

२—जैसे सरस्वती ज्ञान की अधिष्ठात्री देवता है वैसे ही श्री दुर्गा शक्ति की अधिष्ठात्री देवता है। इनकी आठ बाहे हैं। सभी हाथों में यह अस्त्र-शस्त्र धारण करती हैं। सिंह इनका वाहन है। उसी पर चढ़कर यह देवी शस्त्रांस्त्रों से शत्रुओं का

३—अस्माकं देशे दुर्गापूजायाः महान् प्रचारः अस्ति । तत्रापि महिलासमाजे विशेषरूपेण दुर्गापूजायाः प्रचारः अस्ति । ग्रामे-ग्रामे दुर्गायाः मन्दिराणि वर्तन्ते । तत्र समये सयये स्त्रियः गत्वा दुर्गायाः पूजनं कुर्वन्ति । गीतानि गायन्ति । परिक्रमां कुर्वन्ति । मन्दिरं प्रक्षालयन्ति । पूजारूपेण च विविधवस्तूनि समर्पयन्ति । स्वकल्याणाय च नानाविधाः प्रार्थनाः कुर्वन्ति ।

४—नवरात्रे नव-दिन-पर्यन्तं दुर्गादेव्याः विशेषरूपेण पूजा भवति । तदानीं गृहे गृहे दुर्गापूजा भवति । गृहे गृहे दुर्गागीतानि (गीयन्ते) । गृहे गृहे दुर्गापाठः भवति । नवरात्रस्य अन्ते महान् समारोहः भवति । अनेकेषु स्थानेषु मेला लगति । बहुषु नगरेषु महाबीरध्वजः निस्सरति । एवं प्रकारेण सर्वसाधारण-समाजे दुर्गापूजायाः दिशेषमहत्त्वं वर्तते । शक्तिप्राप्तये सर्वैः दुर्गायाः उपासना (कर्तव्या) ।



२१—गङ्गा

१—गङ्गा भारतस्य एका महानदी अस्ति । इयं हिमालयात् निर्गच्छति ततः प्रयागम् आगत्य यमुनासरस्वतीभ्यां मिलति । पुनः अनेकमार्गैः गच्छन्ती समुद्रे निपतति ।

२—गंगा आर्याणां पवित्रतमा नदी अस्ति । अस्याः शास्त्रेषु महान् महिमा वर्णितः अस्ति । गंगायाः जलम् अति पवित्रं (मन्यते) । गंगाजलस्य पानेन पापानि शुद्धयन्ति । गंगास्नानस्य

दमन करती हैं। श्री दुर्गा सप्तशती पुस्तक में विस्तार पूर्वक दुर्गा की कथा लिखी है।

३—हम लोगों के देश में दुर्गापूजा का महान प्रचार हैं। उसमें भी महिला समाज में विशेष रूप से दुर्गापूजा का प्रचार है। गाँव गाँव में दुर्गा के मन्दिर है। वहाँ समय-समय पर स्त्रियाँ जाकर दुर्गा की पजा करती हैं। गीत गाती हैं। परिक्रमा करती हैं मन्दिर धोती हैं। पूजा के रूप में बहुत प्रकार की वस्तुएँ अर्पित करती हैं। और अपने कल्याण के लिए नाना प्रकार की प्रार्थनायें करती हैं।

४—नवरात्र में नव-दिन तक दुर्गा देवी की विशेष रूप से पूजा होती है। उस समय घर-घर दुर्गापूजा होती है। घर-घर दुर्गा के गीत गाये जाते हैं। घर-घर में दुर्गापाठ होता है। नवरात्र के अन्त में महान् समारोह होता है। अनेक स्थानों पर मेला लगता है। बहुत शहरों में महावीरजी की ध्वजा निकलती है। इस प्रकार से सर्वसाधारण-समाज में दुर्गापूजा का विशेष महत्त्व है। शक्ति पाने के लिये सभी को दुर्गा की उपासना करनी चाहिए।

२१—गङ्गा

१—गंगा भारत की एक महानदी है। यह हिमालय से निकलती है। उसके वाद प्रयाग में आकर यमुना एवंसरस्वती से मिलती है। फिर अनेक मार्गों से जाती हुई समुद्र में गिरती है।

२—गंगा आर्यों की पवित्रतम नदी है। इसकी शास्त्रों में बड़ी महिमा वर्णित है। गंगा का जल बहुत पवित्र माना जाता है। गङ्गाजल के पीने से पाप शुद्ध हो जाते हैं। गंगास्नान के

अपि बहु महत्त्वं लिखितं वर्तते। अत एव असंख्याः जनाः प्रतिवर्षं गङ्गास्नानं कर्तुं गच्छन्ति। केचन हरिद्वारे गच्छन्ति, केचन प्रयागं गच्छन्ति, केचन काशीं गच्छन्ति तथा केचन अन्यानि समीपवर्तीनि तीर्थस्थानानि।

३—गङ्गायाः तटं पवित्रं तपोमयं च भवति। प्राचीनकालात् गङ्गातटे साधवः निवसन्ति। ते तत्र तपस्यां कुर्वन्ति ईश्वरस्य ध्यानं च कुर्वन्ति।

४—गङ्गायाः जलं स्वास्थ्यकरम् अपि भवति। गङ्गायाः जलं कदापि कीटादिना दूषितं न भवति। गङ्गाजलस्य पानेन, गङ्गा-जलस्य स्पर्शेण, गङ्गाजले स्नानेन, गङ्गातीरे निवासेन, गङ्गावायुससंर्गेण च महान् शारीरिकः लाभः भवति।

५—अस्याः तीरे अनेकानि नगराणि वर्तन्ते। तानि नगराणि व्यापारस्य प्रधानकेन्द्राणि सन्ति। यथा हरिद्वार, प्रयाग, काशी, पटना, मुंगेर, भागलपुर, कलकत्ता इत्यादीनि। क्षेत्रसेचने व्यापारकरणे च गङ्गा अस्माकं प्रभूतम् उपकारं करोति। एव गङ्गा लोके परलोके च उभयत्र अमाकं हित करोति।

२२—मेला

१—"मेला" शब्दः अस्माकं समाजे अतीव प्रचलितः वर्तते। यत्र मेला लगति तत्र बहूनां स्त्रीपुरुषाणां समुदायः एकत्र भवति। अत एव बहूनाँ मिलनात् तस्य मेला इति नाम प्रसिद्धम् अस्ति।

२—संसारस्य प्रायः सर्वेषु अपि देशेषु मेलाः लगन्ति। अस्माकं देशे अपि विशिष्टाः सामान्याः च अनेकाः मेलाः प्रसिद्धाः सन्ति।

भी बहुत महत्त्व लिखे गये हैं। अत एव असंख्य लोग प्रतिवर्ष गंगास्नान करने के लिये जाते हैं। कुछ हरिद्वार जाते हैं, कुछ प्रयाग जाते हैं, कुछ लोग काशी जाते हैं तथा कुछ लोग दूसरे समीपवर्ती तीर्थस्थानों में।

३—गंगा का तट पवित्र और तपोमय होता है। प्राचीन काल से गंगातट पर साधु रहते हैं। वे वहाँ तपस्या करते हैं और ईश्वर का ध्यान भी करते हैं।

४—गंगा का जल स्वास्थ्यकर भी होता है। गंगा का जल कभी भी कीड़ों आदि से दूषित नहीं होता है। गंगा जल के पीने से, गंगा जल में स्नान करने से, गंगा तट पर निवास करने से और गंगा के वायुसम्पर्क से महान शारीरिक लाभ होता है।

५—इसके तट पर अनेक नगर हैं। वे नगर व्यापार के प्रधान केन्द्र हैं। यथा, हरिद्वार, प्रयाग, काशी, पटना, मुंगेर, भागलपुर, कलकत्ता इ०। खेतों की सिंचाई और व्यापार करने में गंगा हम लोगों का बहुत उपकार करती हैं। इस तरह गंगा लोक में और परलोक में दोनों जगह हमारा हित करती है।



२२—मेला

१—"मेला" शब्द हमारे समाज में बहुत ही प्रचलित है। जहाँ मेला लगता है वहाँ बहुत से स्त्री-पुरुषों का ससुदाय इकट्ठा होता है। अत एव बहुतों के मिलने से मेला ऐसा नाम प्रसिद्ध है।

२—संसार के प्रायः सभी देशो में मेले लगते हैं। हम लोगों के देश में भी विशिष्ट और साधारण अनेक मेले प्रसिद्ध हैं।

भारतवर्षस्य सकलाः अपि मेलाः प्रायेण धार्मिकेषु स्थानेषु व्रतपर्वादिषु अवसरेषु च लगन्ति। यथा काश्यां शिवरात्रिसमये, अयोध्यायां रामवनमीतिथौ, मथुरायां गोपाष्टमीतिथौ, जगन्नाथ-पुर्य्यां रथयात्राऽवसरे तथा प्रयागे कुम्भसमये च। एतदति-रिक्तं ग्रहणादिसमये काशी—प्रयागादि—तीर्थक्षेत्रेषु अपि मेलाः लगन्ति।

३—मेलाः द्विविधाः भवन्ति। धर्मप्रधानाः व्यापारप्रधानाः च। धर्मप्रधानासु मेलासु कुम्भमेला, व्यापारप्रधानासु मेलासु च विहारस्य सोनपुरमेला विशेषरूपेण प्रसिद्धा वर्तते। सोनपुरमेला तु संसारस्य सुप्रसिद्धासु व्यापारिकमेलांसु अन्यतमा (कथ्यते)।

४—सामाजिकजीवने मेलानां महान् उपयोगः अस्ति। मेलासु आवश्यकवस्तूनां क्रय-विक्रयौ भवतः। चित्रविचित्राणां वस्तूनाम् अवलोकनं भवति। सभा-सम्मेलनादिषु व्याख्यानानि (श्रूयन्ते) नव-नव-प्रदेशानां परिचयः जायते। महापुरुषाणां दर्शनं भवति। चिरवियुक्तानि मित्राणि मिलन्ति। विविधदेवानां दर्शनस्य, गंगादितीर्थेषु स्नानस्य च पुण्यफलं (लभ्यते)। मनोरञ्जनम्, बुद्धेः विकाशः व्यावहारिकता चेत्यादयः अपि अनेके लाभाः भवन्ति।

५ परन्तु इमे सर्वे लाभाः तदैव भवितुम् अर्हन्ति यदा मेलासु सुप्रबन्धः सुव्यवस्था च स्यात्। अनेकासु मेलासु सुप्रबन्धस्य अभावः (दृश्यते)। तेन क्वचित् चौराणाम् उपद्रवः, क्वचित् विसूचिकादिरोगाणां प्रकोपः, क्वचित् अग्निदाहस्य दुर्घटना, क्वचित् स्वच्छतायाः अभावः, क्वचित् गमनागमनयोः असुविधा, क्वचित् स्थानस्य संकीर्णता, क्वचित् खाद्यपेयवस्तूनाम् अशुद्धता चेति नानाविधाः दुर्व्यवस्थाः दृष्टिगोचराः भवन्ति। तेन जनतायाः

भारत वर्ष के सभी मेले प्रायः धार्मिक स्थानों में, व्रतपर्वादि अवसरों पर लगते हैं। जैसे काशी में शिवरात्रि के समय में, अयोध्या में रामनवमी तिथि पर, मथुरा में गोपाष्टमी तिथि पर जगन्नाथपुरी में रथयात्रा के अवसर पर, तथा प्रयाग में कुम्भ के समय में। इसके अतिरिक्त ग्रहण इत्यादि के समय पर काशी प्रयागादि तीर्थक्षेत्रों में भी मेले लगते हैं।

३—मेले दो प्रकार के होते हैं, धर्मप्रधान और व्यापार-प्रधान। धर्मप्रधान मेलों में कुम्भ मेला, व्यापारप्रधान मेलों में विहार का सोनपुर का मेला विशेष रूप से प्रसिद्ध है। सोनपुर मेला तो संसार के सुप्रसिद्ध व्यापारिक मेलों में अन्यतम कहा जाता है।

४—सामाजिक जीवन में मेलों का महान उपयोग है। मेलों में आवश्यक वस्तुओं का क्रय और विक्रय होता है। चित्र-विचित्र वस्तुओं का अवलोकन होता है। सभा-सम्मेलनादि में व्याख्यान आदि सुना जाता है। नये-नये प्रदेशों का परिचय मिलता है। महापुरुषों का दर्शन होता है। बहुत दिनों से बिछुड़े मित्र मिलते हैं। विविध देवताओं के दर्शन का और गंगा आदि तीर्थों में स्नान का पुण्यफल प्राप्त होता है। मनोरंजन, बुद्धि का विकास और व्यावहारिकता इत्यादि भी अनेक लाभ होते हैं।

५—परन्तु ये सभी काम तभी हो सकते हैं जब मेलों में अच्छा प्रवन्ध और अच्छी व्यवस्था हो। अनेक मेलों में अच्छे प्रबन्ध का अभाव दीखता है। उससे कहीं चोरों का उप-द्रव, कहीं हैजा इत्यादि रोगों का प्रकोप, कहीं आग लगने की दुर्घटना, कहीं स्वच्छता का अभाव, कहीं जाने-आने की असु-विधा, कहीं स्थान की संकीर्णता और कहीं खाद्य-पेय वस्तुओं

महत् कष्टं भवति । अतः मेलाप्रबन्धकैः अधिकारिभिः तथा सुप्रबन्धः (कर्तव्यः) यथा जनतायाः किमपि कष्टं न स्यात् ।



२३—वरयात्रा

१—यदा कश्चिद् वरः विवाहार्थं गच्छति तदा तेन सह अन्ये अपि बहवः जनाः गच्छन्ति । इयम् एव यात्रा वरयात्रा इति (कथ्यते) । अस्यां यात्रायां वरः प्रधानः भवति तेन अस्याः यात्रायाः वरयात्रा इति नाम अस्ति ।

२—वरयात्रायाँ सर्वतः अग्रे नूतनेन सुन्दरेण च वेषभूषादिना सुसज्जितः वरः गच्छति । सः शिविकायां मनोहरे आसने उपविष्टः तिष्ठति । क्वचित् क्वचित् वराः घोटकम् अपि आरुह्य गच्छन्ति । वरस्य पृष्ठतः अन्ये बन्धुबान्धवाः, सम्बन्धिनः, सुहृदः, भृत्यकर्मकराः, वाद्यवादकाः, गजाः, अश्वादयः च गच्छन्ति । सर्वप्रकारेण सुसज्जिता वरयात्रा वरस्य गृहात् गीतवादित्रपुरस्सरं महता समारोहेण समुल्लासेन च सह मंगलमये मुहूर्ते निस्सरति ।

३—कन्यायाः ग्रामस्य समीपे वरयात्रिकाणां कल्यावर्तस्य कृते एकं निश्चितं स्थानं भवति । अस्मिन् स्थाने सर्वे वरपक्षीयाः जनाः एकत्र भवन्ति भोजनविश्रामादिकं च कुर्वन्ति । ततः यदा द्वारपूजायाः समयः आसन्नः भवति तदा सर्वे वरयात्रिकाः जनाः वेषभूषादिभिः सुसज्जिताः भूत्वा कन्यागृहं प्रति गमनाय समुद्यताः भवन्ति ।

की अशुद्धि इस तरह नाना प्रकार की दुर्व्यवस्थायें दृष्टिगोचर होती हैं। उससे जनता को महान कष्ट होता है। अतः मेला के प्रबम्धक अधिकारियों को ऐसा अच्छा प्रबन्ध करना चाहिए जिससे जनता को कुछ भी कष्ट न हो।



२३ - वरयात्रा

१—जब कोई वर विवाह के लिये जाता है तब उसके साथ दूसरे भी बहुत लोग जाते हैं। यही यात्रा वरयात्रा के नाम से कही जाती है। इस यात्रा में वर प्रधान होता है उससे इस यात्रा का "वरयात्रा" ऐसा नाम है।

२—वरयात्रा में सबसे आगे नवीन और सुन्दर वेषभूषादि से सुसज्जित वर जाता है। वह पालकी पर मनोहर आसन पर बैठा रहता है। कोई-कोई वर घोड़े पर भी चढ़कर जाते हैं। वर के पीछे अन्य बन्धु बान्धव, सम्बन्धी, सुहृद, भृत्य-कर्मकर, वाद्य-वादक, और हाथी-घोड़े जाते हैं। सब प्रकार से सुसज्जित वरयात्रा वर के घर से गाने-बजाने के साथ महान समारोह और समुल्लास के साथ मंगलमय मुहूर्त में निकलती है।

३—कन्या के गाँव के समीप बरातियों के कलेवा के लिए एक निश्चित स्थान होता है। इस स्थान पर सभी वरपक्षीय लोग इकट्ठे होते हैं और भोजन-विश्राम आदि करते हैं। उसके बाद जब द्वार-पूजा का समय निकट होता है तब सभी बराती लोग वेष-भूषादि से सुसज्जित होकर कन्या के घर पर जाने के लिए तैयार होते हैं।

४—इतः च कन्यायाः द्वारं सम्यक् प्रकारेण स्वच्छीकृतं, गोम याादिना उपलिप्तं, हरिद्रया गोधूमचूर्णेन च चर्चितं, पल्लवसमलंकृतं विविधवर्णैः कागदपत्रादिभिश्च परिशोभितं भवति। तत्र पूर्वतः ए सर्वे कन्यापक्षीयाः नराः नार्यश्च सुसज्जिताः भूत्वा वरस्य वर यात्रायाश्च अवलोकनार्थं समुत्सुकाः तिष्ठन्ति। ततश्च कन्याद्वारत किञ्चिद् दूरे उभयोः वर-कन्यापक्षयोः मेलनं प्रदर्शनादिकं च भवति। अनन्तरं सर्वे परपक्षीयाः जनाः त्वरितमे विविधवाद्यै गजाश्वादिवाहनश्च सह महता वेगेन अहमहमिकया द्वारे समवेता भवन्ति। ततः द्वारे गणेशादिपूजनं (प्रारभ्यते)। अस्मिन् अवसं क्वचित् मंगलानि (पठ्यन्ते) क्वचित् गीतानि (गीयन्ते), क्वचि वाद्यानि (वाद्यन्ते), क्वचित् च स्नेह-सौहार्द-पुरस्सरं परस्परं मिलन्त आलपन्तश्च जनाः दृश्यन्ते। एवं च इदं द्वारपूजायाः दृश्यम् अती रमणीयं हर्षवर्द्धकं हृदयाह्लादकरं च भवति।

५—द्वारपूजानन्तरं सर्वे वरपक्षीयाः जनाः तस्मिन् स्थानं गच्छन्ति यत्र एतेषां निवासाय वितानस्या पटमण्डपादीनां च प्रबन्ध भवति। तत्र दिनद्वयं दिन त्रयं वा वरयात्रा निवसति। ततः ए विवाहस्य अंग-भूतानि सर्वाणि कार्याणि सम्पद्यन्ते। अनन्तरं सर्वे कार्येषु सम्पन्नेषु तृतीयस्मिन् चतुर्थे वा दिने वरयात्रा पुनः स्वस्था प्रति निवृत्ता भवति। इदामेव वर्तमानकालस्य वरयात्रायाः साधार स्वरूपं वर्तते। परन्तु प्रदेशभेदेन स्थानभेदेन जातिभेदेन च (वर यात्रायाः) नानाविधानि रूपाणि भवन्ति नानाविधाश्च लोकाचारा प्रचलन्ति।

□

४—इधर कन्या का दरवाजा अच्छी तरह स्वच्छ किया हुआ, गोबर इत्यादि से लिपा हुआ, हल्दी और गेहूँ के चूर्ण से चर्चित, पत्ते और पुष्पादि से अलंकृत तथा रंग-विरंगे कागजपत्रों से सुशोभित होता है। वहाँ पहले से ही सभी कन्यापक्ष के पुरुष और स्त्रियाँ सुसज्जित होकर वर और वरयात्रा को देखने के लिए उत्सुक रहते हैं। उसके बाद कन्या के द्वार से कुछ दूर पर ही दोनों वर-कन्या पक्ष के लोगों का मिलन होता है और घोड़-दौड़ होता है। इसके बाद सभी वरपक्षीय लोग शीघ्र ही अनेक प्रकार के बाजों और हाथी-घोड़े इत्यादि वाहनों के साथ अधिक वेग से होड़ लगाकर दरवाजे पर इकट्ठे हो जाते हैं। उसके बाद द्वार पर गणेशादि की पूजा प्रारम्भ होती है। इस अवसर पर कहीं मंगल पढ़े जाते हैं, कहीं बाजा बजाये जाते हैं ओर कहीं स्नेह-सौहार्द के साथ परस्पर मिलते और बात-चीत करते हुए लोग देखे जाते हैं। इस तरह यह द्वारपूजा का दृश्य अत्यन्त ही रमणीय, हर्षवर्द्धक और हृदय को आनन्द देनेवाला होता है।

५—द्वारपूजा के बाद सब वरपक्ष के लोग उस स्थान पर जाते हैं, जहाँ इनके लिए सामियाना और रावटी का प्रबन्ध होता है। वहाँ दो दिन या तीन दिन बारात रहती है। वहीं से विवाह के अंगभूत सभी कार्यों को सम्पन्न करते हैं। उसके बाद सभी कार्यों के सम्पन्न होने पर तीसरे अथवा चौथे दिन बारात फिर अपने स्थान के प्रति निवृत्त होती है। यही वर्तमान काल की बारात का साधारण स्वरूप होता है। किन्तु प्रदेशभेद, स्थानभेद और जातिभेद से वरयात्रा के अनेकों प्रकार होते हैं और अनेकों प्रकार के लोकाचार प्रचलित हैं।

□

२४—पाठशाला

१—यत्र बालकाः शिक्षकेभ्यः पाठं पठन्ति सा पाठशाला (कथ्यते)। शिक्षासंस्थासु पाठशाला प्रारम्भिकी शिक्षासंस्था अस्ति। अत्रैव बालकाः अक्षरारम्भं कुर्वन्ति तथा प्राथमिकीं शिक्षां च प्राप्नुवन्ति।

२—एकस्यां पाठशालायाम् अनेकाः कक्षाः भवन्ति। एकैकस्यां कक्षायाम् एकैकः शिक्षकः पाठयति। अतः प्रत्येकं पाठशालासु प्रायः त्रयः, चत्वारः पञ्च वा शिक्षकाः भवन्ति। तेषु एकः प्रधानशिक्षकः भवति अन्ये च सहायकशिक्षकाः भवन्ति।

३—सर्वाः पाठशालाः प्रायेण दशवादनकाले लगन्ति चतुर्वदन-काले च समाप्तिं गच्छन्ति। परन्तु अयं शीतकालस्य नियमः अस्ति। ग्रीष्मकाले तु प्रातः सार्ध-षड्वादन-काले पाठशालाः (उद्घाट्यन्ते) तथा सार्धदशवादनकाले च (पिधीयन्ते)।

४—यदा पाठशाला लगति तदा प्रारम्भे सर्वप्रथमम् ईश्वर-प्रार्थना भवति। सर्वे बालकाः पंक्तिबद्धाः भूत्वा तिष्ठन्ति। तेषु कश्चित् एकः द्वौ वा बालकौ पूर्वन्ये प्रार्थनां गायतः, तत्पश्चात् अन्ये सर्वे बालकाः गायन्ति। ईश्वर-प्रार्थनायाः पश्चात् उपस्थितिगणना भविता। तदनन्तरं सर्वे बालकाः स्व-स्वकक्षासु गच्छन्ति, निजे-निजे आसने उपविशन्ति, तथा पठनं लेखनं च प्रारभन्ते।

५—भिन्न-भिन्न-कक्षासु भिन्न-भिन्न-विषयाणां पाठनं भवति। क्वचित् साहित्यस्य, क्वचित् व्याकरणस्य, कुत्रचित् गणितस्य, क्वचित् इतिहासस्य, क्वचित् भूगोलस्य, क्वचित् चित्रकलायाः तथा क्वचित् अन्यविषयाणां च। लेखनकलायाः

२४—पाठशाला

१—जहाँ बालक शिक्षकों से पाठ पढ़ते हैं वह पाठशाला कहलाती है। शिक्षासंस्थाओं में पाठशाला आरम्भिक शिक्षासंस्था है। यहाँ ही बालक अक्षर का आरम्भ करते हैं तथा पहली शिक्षा पाते हैं।

२—एक पाठशाला में अनेक कक्षाएँ होती हैं। एक'एक कक्षा में एक-एक शिक्षक पढ़ाते हैं। अतः प्रत्येक पाठशाला में प्रायः तीन-चार अथवा पाँच शिक्षक होते हैं। उनमें एक प्रधान शिक्षक होता है और दूसरे सहायक शिक्षक होते हैं।

३ - सभी पाठशालाएँ प्रायः दस बजे लगती हैं और चार बजे समाप्त होती हैं। परन्तु यह शीतकाल का नियम है। गर्मी के समय तो प्रातः साढ़े छः बजे पाठशालाएँ खुलती हैं और साढ़े दस बजे बन्द होती हैं।

४ जब पाठशाला लगती है तब प्रारम्भ में सर्वप्रथम ईश्वर प्रार्थंना होती है। सभी लड़के पंक्ति-बद्ध होकर खड़े रहते हैं। उनमें कोई एक या दो बालक पहले प्रार्थना गाते हैं, उनके पीछे दूसरे सभी बालक गाते हैं। ईश्वरप्रार्थना के पश्चात् हाजिरी होती है। उसके बाद सभी बालक अपनी-अपनी कक्षा में जाते हैं, अपने अपने आसन पर बैठते हैं, और पढ़ना, लिखना प्रारम्भ करते हैं।

५—भिन्न-भिन्न कक्षाओं में भिन्न-भिन्न विषयों की पढ़ाई होती है। कही साहित्य की, कहीं व्याकरण की, कहीं पर गणित की, कही पर इतिहास की, कहीं भूगोल की, कहीं चित्रकला की और कहीं अन्य विषयों की। लेखनकला की तथा वाचनकला की

तथा वाचनकलायाः अपि शिक्षणं भवति येन बालकाः सुन्दरलेखं
शुद्धवाचने च कुशलाः भवेयुः ।

६—मध्ये प्रायः एकवादनकाले पाठशालासु जलपानस्य कृते
अवकाशः भवति । तस्मिन् समये घण्टिका वदति । यदा जलपानस्य
घण्टिका वदति तदा सर्वे छात्राः पठनं लेखनं च परित्यज्य जलपान
कर्तुं गच्छन्ति । तदानीं तेषु केचन जलं पिबन्ति, केचन भोजन
कुर्वन्ति, केचित् च बालकाः विश्रामं कुर्वन्ति । अन्ये च केचित्
बालकाः भ्रमन्ति, केचित् खेलन्ति, तथा केचित् अन्यैः साधनैः मनो
विनोदं कुर्वन्ति । तत्पश्चात् अवकाशे समाप्ते पुनः पठितुं स्व-स्व-
कक्षासु छात्राः गच्छन्ति ।

७—पुस्तकपठनातिरिक्तं बालकाः कानिचित् अन्यानि अपि
कार्याणि कुर्वन्ति येन तेषां मनोविनोदः भवति, श्रमशक्तिः वर्धते
तथा शरीरं च स्वस्थं तिष्ठति । तानि कार्याणि इमानि सन्ति
यथा —कृषिकार्यम्, पाठशालीय-पुष्पवाटिकायाः संस्कारः, श्रमदानम्
खेलनं गानादिकं च ।

८—चतुर्वादनकाले पाठशालायाः अवकाशः भवति । तस्मिन्
समये सर्वे बालकाः अवकाशस्य घण्टिकां श्रोतुं अतीव उत्सुकाः
तिष्ठन्ति । यदा च घण्टिका वदति तदा सर्वे बालकाः अतीव
प्रसन्नाः भवन्ति । ततः त्वरितमेव स्व-स्व-पुस्तकानि, लेखनी
मसीपात्रं, पट्टिकां, खटिकं च गृहीत्वा ते स्वं गृहं गन्तुं प्रवृत्ताः
भवन्ति तथा हसन्तः, खेलन्तः, धावन्तः उच्छलन्तः कूर्दमानाः
गायन्तः, वदन्तः, विवदमानाश्च शीघ्रमेव गृहं प्राप्नुवन्ति ।

□

की भी शिक्षा होती है जिससे लड़के सुन्दर लिखने में और शुद्ध वाचने में कुशल हों।

६—बीच में प्रायः एक बजे पाठशालाओं में जलपान के लिए अवकाश होता है। उस समय घण्टी बजती है। जब जलपान की घण्टी बजती है तब सब लड़के पढ़ना-लिखना छोड़कर जलपान करने के लिए चले जाते हैं। उस समय उनमें कुछ जल पीते हैं, कुछ भोजन करते हैं और कुछ लड़के विश्राम करते हैं। और दूसरे कुछ लड़के घूमते हैं, कुछ लड़के खेलते हैं तथा कुछ लड़के अन्य साधनों से मनोविनोद करते हैं। उसके बाद अवकाश समाप्त होने पर फिर पढ़ने के लिए अपनी-अपनी कक्षा में छात्र जाते हैं।

७—पुस्तक पढ़ने के अलावे लड़के कुछ दूसरे कार्य भी करते हैं जिससे उनका मनोविनोद होता है, श्रमशक्ति बढ़ती है और शरीर स्वस्थ रहता है। वे काम ये हैं जैसे—खेती का काम, पाठशाला की फुलवारी की सफाई, श्रमदान, खेल और गान इत्यादि।

८—चार बजे पाठशाला की छुट्टी होती है। उस समय सभी लड़के छुट्टी की घण्टी सुनने के लिए बहुत ही उत्सुक रहते हैं। जब घण्टी बजती है तब सभी लड़के बहुत प्रसन्न होते हैं। उसके बाद तुरन्त ही अपनी-अपनी किताबें, कलम, दावात, पटरी और खड़िया लेकर अपने-अपने घर जाने लगते हैं तथा हँसते हुए, खेलते हुए, दौड़ते हुए, उछलते हुए, कूदते हुए, गाते हुए, बोलते हुए और झगड़ते हुए जल्दी घर पहुँचते हैं।

□

५—परीक्षा

१—विद्यार्थिनां योग्यतायाः परीक्षणं परीक्षा इति (कथ्यते
परीक्षा छात्राणां बुद्धेः परिश्रमस्य च तोलनस्य एका महती तु
अस्ति। यदा विद्यार्थिनां परीक्षा भवति तदा एव तेषां बुद्धेः, प्रति
भायाः, स्मरणशक्तेः, परिश्रमस्य, विद्यानुरागस्य, तथा लेखनशक्तेः
सम्यक्परिज्ञानं भवति। अतएव परीक्षायाः परम्परा शिक्षाया
आरम्भकालात् एव आगच्छन्ती (विलोक्यते)।

२—परीक्षा द्विविधा भवति। एका पाठशालीया परीक्षा अपरा
राजकीया परीक्षा च। पाठशालीया परीक्षा पाठशालायां ए
भवति। अस्याः परीक्षायाः सर्वां व्यवस्थां पाठशालीयाः अध्या
पकाः एव कुर्वन्ति। इयं पाठशालीया परीक्षा वर्षे वारत्रयं भवति
एका त्रिषु मासेषु, एका षट्सु मासेषु तथा एका वर्षस्य अन्ते। इ
गृहपरीक्षा अपि (उच्यते)।

३—द्वितीया परीक्षा राजकीया भवति। राजकीयपरीक्षाया
सञ्चालनं व्यवस्थां च राजकीया शिक्षा-परीक्षा-परिषद् करोति
इयं परीक्षा गृहपरीक्षापेक्षया अधिका सुव्यवस्थिता, प्रामाणिकी
मूल्यवती च अस्ति। यः छात्रः अस्यां परीक्षायाम् उत्तीर्णः भवति
सः एव अग्रिमकक्षायां पठितुं शक्नोति।

४—इयं परीक्षा परिषद्द्वारा स्वीकृतेषु परीक्षाकेन्द्रेषु भवति
येषां छात्राणां यस्मिन् परीक्षाकेन्द्रे परीक्षा भवित्री भवति तेषां
नामानि तस्मिन् परीक्षाकेन्द्रे (प्रेष्यन्ते)। तस्य परीक्षाकेन्द्रस्य
अध्यक्षः तत्र तेषां-तेषां विद्यार्थिनां परीक्षायाः व्यवस्थां करोति।

२५ परीक्षा

१—विद्यार्थियों की योग्यता के परीक्षण को परीक्षा कहते हैं। परीक्षा छात्रों की बुद्धि और परिश्रम को तौलने का एक महान् तराजू है। जब विद्यार्थियों की परीक्षा होती है तभी उनकी बुद्धि, प्रतिभा, स्मरणशक्ति, परिश्रम, विद्यानुराग तथा लेखन-शक्ति का अच्छी तरह ज्ञान होता है। अतएव परीक्षा की परम्परा शिक्षा के आरम्भ काल से ही आती हुई दिखाई पड़ती है।

२—परीक्षा दो प्रकार की होती है। एक विद्यालयीय परीक्षा और दूसरी सरकारी परीक्षा। पाठशाला की परीक्षा पाठशाला में ही होती है। इस परीक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था पाठशाला के अध्यापक ही करते हैं। यह पाठशाला की परीक्षा वर्ष में तीन बार होती है। एक तीन मास पर, एक छः मास पर तथा एक वर्ष के अन्त में। यह गृहपरीक्षा भी कही जाती है।

३—दूसरी परीक्षा सरकारी होती हैं। सरकारी परीक्षा का संचालन और व्यवस्था राजकीय-शिक्षा-परिषद् करती है। यह परीक्षा गृहपरीक्षा की अपेक्षा अधिक सुव्यवस्थित, प्रामाणिक और मूल्यवती होती है। जो छात्र इस परीक्षा में उत्तीर्ण होता हैं वही आगे की कक्षा में पढ़ सकता है।

४ - यह परीक्षा परिषद् द्वारा स्वीकृत परीक्षा केन्द्रो पर होती है। जिन छात्रों की जिस परीक्षा केन्द्र पर परीक्षा होने वाली होती है उनके नाम उस परीक्षा केन्द्र को भेजे जाते हैं। उस परीक्षा केन्द्र का अध्यक्ष वहाँ उन-उन विद्यार्थियों की परीक्षा की व्यवस्था करता है।

५—छात्राः निर्धारिते समये परीक्षां दातुं परीक्षाकेन्द्रेषु उपस्थिताः भवन्ति। परीक्षाभवने प्रवेशाय यदा घण्टिका वदति तदा सर्वे छात्राः प्रवेशपत्रं गृहीत्वा परीक्षाभवनं प्रविशन्ति निजं च स्थानम् अन्विष्य तत्र उपविशन्ति। अनन्तरं च यदा द्वितीया घण्टिका वदति तदा तेभ्यः प्रश्नपत्राणि (दीयन्ते)। ततः छात्राः प्रश्नपत्रम् एकवारम् आद्योपान्तं पठित्वा विचार्य च उत्तरलेखनस्य आरम्भं कुर्वन्ति। परीक्षावसरे सर्वेषु परीक्षाभवनेषु एकैकः निरीक्षकः भवति यः तत्र निरीक्षणस्य कार्यं करोति। परीक्षा-समये समाप्ते ततः पूर्वम् एव वा छात्राः स्वां स्वाम् उत्तर-पुस्तिकां निरीक्षकाय दत्वा परीक्षाभवनाद् बहिः निस्सरन्ति।

६—परीक्षावसरे परीक्षार्थिनां कृते अनेके नियमाः भवन्ति येषां पलनं परमावश्यकं भवति। यथा—परीक्षार्थिभिः किमपि पुस्तकं पत्रं वा सह न नेतुं (शक्यते)। परीक्षार्थिनः पस्परं वार्तालापं कर्तुं न शक्नुवन्ति तथा एकः परीक्षार्थी अन्यपरीक्षार्थिनः लेखस्य अनुकरणं कर्तु न शक्नोति इत्यादि। एतेषां नियमानाम् उल्लंघनं कुर्वन् परीक्षार्थी दण्डनीयः भवति।

७—यदि एतेषां नियमानां कठोरतया पालनं न स्यात् तर्हि परीक्षायाः किमपि मूल्यमेव न भविष्यति। अतः परीक्षाया मूल्यस्य महत्त्वस्य च रक्षार्थं एषां नियमानां महती उपयोगिता वर्तते। परन्तु महतः दुःखस्य अयं विषयः वर्तते यत् आधुनिका विद्यार्थिनः एतेषां नियमानां पालने ध्यानं न ददते। बहवः तु एतेषां नियमानान् उल्लंघने एव आत्मनः गौरवं मन्यन्ते। यदि परीक्षार्थिनां किमपि नियमविरुद्धं कार्यं दृष्ट्वा कश्चित् निरी-

५—छात्र निर्धारित समय पर परीक्षा देने के लिए परीक्षा केन्द्रों पर उपस्थित होते हैं। परीक्षाभवन में प्रवेश के लिए जब घण्टी बजती है तब सभी छात्र प्रवेशपत्र लेकर परीक्षा भवन में प्रवेश करते हैं और अपने स्थान ढूंढकर वहाँ बैठते हैं। उसके बाद जब दूसरी घण्टी बजती है तब उन्हें प्रश्नपत्र दिये जाते हैं। उसके बाद सभी छात्र प्रश्नपत्र को एक बार आद्योपान्त पढ़कर और विचार कर उत्तर लिखना आरम्भ करते हैं। परीक्षा के अवसर पर सभी परीक्षा भवनों में एक-एक निरीक्षक होता है जो वहाँ निरीक्षणकार्य करता है। परीक्षा समय के समाप्त होने पर, या उसके पूर्व ही छात्र अपनी-अपनी उत्तरपुस्तिका निरीक्षक को देकर परीक्षाभवन से बाहर निकलते हैं।

६—परीक्षा के समय परीक्षार्थियों के लिए अनेक नियम होते हैं जिनका पालन करना परमावश्यक है। जैसे—परीक्षार्थी कोई पुस्तक अथवा पत्र साथ नही ला सकते हैं। परीक्षार्थी परस्पर वार्तालाप नहीं कर सकते हैं तथा एक परीक्षार्थी अन्य परीक्षार्थी के लेख का अनुकरण नहीं कर सकता है इत्यादि। इन नियमों का उल्लंघन करता हुआ परीक्षार्थी दण्डनीय होता है।

७—यदि इन नियमों का कठोरता से पालन न हो तो परीक्षा का कुछ भी मूल्य न होगा। अतः परीक्षा के मूल्य और महत्त्व की रक्षा के लिये इन नियमों की महान उपयोगिता है। परन्तु बड़े दुःख का यह विषय है कि आज कल के विद्यार्थी इन नियमों का पालन करने में ध्यान नहीं देते हैं। बहुत से तो इन नियमों के उल्लंघन में ही अपना गौरव समझते हैं।

क्षकः तत्र हस्तक्षेपं करोति तदा तेन सह ते कलहं कुर्वन्ति। अवसरं लब्ध्वा तदुपरि आक्रमणम् अपि कुर्वन्ति। कदाचित् हत्यामपि कुर्वन्ति। एतादृशी घटना सम्प्रति साधारणी संवृत्ता वर्तते। परन्तु छात्रसमाजस्य कृते अयं महत्या लज्जायाः विषयः अस्ति। ईदृशं निन्दनीयं कार्यं कृत्वा छात्राः न केवलम् आत्मनः एव हानिं कुर्वन्ति प्रत्युत सम्पूर्णस्य छात्रसमाजस्य मुखं कलङ्कयन्ति।

८—विद्यार्थिनाम् अस्य दोषस्य प्रधानं कारणम् इदं वर्तते यत् आधुनिकाः छात्राः अध्ययने तु परिश्रमं न कुर्वन्ति परन्तु (उत्तीर्णाः) भवितुम् अवश्यम् अवलम्बनं कुर्वन्ति। तत्र च यदि कश्चिद् बाधकः भवति तदा तस्य उपरि कुपिताः भूत्वा तेन सह अनेकान् दुर्व्यवहारान् कुर्वन्ति। अनेके चौर्य-कुशलाः छात्राः अनुचितैः उपायैः परीक्षासु सफलतां अपि प्राप्नुवन्ति। अयं मार्गः विद्यार्थिनां कृते श्रेयस्करः नास्ति। परीक्षार्थिभिः परीक्षानियमानां पालनं विधाय परीक्षायाः मर्यादा (रक्षणीया) तथा च अध्ययने परिश्रमः (कर्तव्यः) येन अनुचितोपायानाम् अवलम्बनं विनैव ते परीक्षायां सफलतांप्राप्नुयुः।



२६—यात्रा

१—यात्राशब्दस्य साधारणः अर्थः "गमनम्" अस्ति। तथापि अयं शब्दः दूरगमने एव प्रचलितः वर्तते। यदा कश्चित् मनुष्यः एकस्मात् स्थानात् कस्मिंश्चित् दूरवर्तिनि स्थाने गच्छति

यदि परीक्षार्थियों के कुछ भी नियमविरुद्ध कार्य को देखकर कोई निरीक्षक वहाँ हस्तक्षेप करता है तब उसके साथ वे कलह करते हैं। अवसर पाकर उसके ऊपर आक्रमण भी करते हैं। कभी हत्या भी कर डालते हैं। ऐसी घटना इस समय साधारण हो गई है। परन्तु छात्रसमाज के लिए यह महान् लज्जा का विषय है। ऐसा निन्दनीय कार्य करके छात्र न केवल 'अपनी ही हानि करते हैं, बल्कि, सम्पूर्ण छात्र समाज का मुख कलंकित करते हैं।

८—विद्यार्थियों के इस दोष का प्रधान कारण यह है कि आधुनिक छात्र अध्ययन में तो परिश्रम नहीं करते हैं परन्तु उत्तीर्ण होना अवश्य चाहते हैं। इसलिए वे उत्तीर्ण होने के लिए अनुचित उपायों का सहारा लेते हैं। उसमें यदि कोई बाधक होता है तब उसके ऊपर कुपित होकर उसके साथ अनेक दुर्व्यवहार करते हैं। अनेक चोरी करने में कुशल छात्र अनुचित उपायों से परीक्षाओं में सफलता भी पा जाते हैं। यह मार्ग विद्यार्थियों के लिये श्रेयस्कर नहीं है। परीक्षार्थियों को परीक्षा के नियमों का पालन कर परीक्षा की मर्यादा की रक्षा करनी चाहिए और अध्ययन में परिश्रम करना चाहिए जिससे अनुचित उपायों के अवलम्बन बिना ही वे परीक्षा में सफलता प्राप्त कर लें।



२६—यात्रा

१—यात्रा शब्द का साधारण अर्थ "गमन" है। फिर भी यह शब्द दूर जाने में ही प्रचलित है। जब कोई मनुष्य एक स्थान से किसी दूर स्थान को जाता है तब वह यात्रा करता है ऐसा

तदा सः यात्रां करोति इति (कथ्यते)। अत एव ये जनाः दूरदेशेषु भ्रमणार्थं गच्छन्ति ते "यात्रिणः" इति (उच्यन्ते)।

२ यात्रा अनेकैः उद्देश्यैः (विधीयते)। केचन जनाः तीर्थेषु भ्रमणार्थं यात्रां कुर्वन्ति। केचन जनाः ऐतिहासिकस्थानानां निरीक्षणार्थं यात्रां कुर्वन्ति। अन्ये जनाः प्राकृतिकानां दृश्यानां दर्शनाय यात्रां कुर्वन्ति। एवमेव केचन विद्योपार्जनाय, केचन धनोपार्जनाय, केचन धर्मप्रचाराय, केचन विजयाय तथा केचन यशसः प्राप्तये च यात्रां कुर्वन्ति।

३—यात्रायाः मानवजीवने बहु महत्त्वं वर्तते। मनुष्यः केवलम् एकस्मिन् स्थाने स्थित्वा सम्यक् उन्नतिं कर्तुं न शक्नोति। यदा सः दूर-दूरदेशेषु गच्छति, अनेकेषु स्थानेषु भ्रमति, अनेकैः पुरुषैः सह मिलति तथा अनेकानि च मनुष्यकृतानि आश्चर्यजनकानि वस्तूनि स्वनेत्राभ्यां पश्यति तदा तस्य बुद्धेः विकासः भवति, तस्य हृदये महत्त्वाकांक्षाः उत्पद्यन्ते, तस्य कर्तृत्वशक्तिः वृद्धिं गच्छति, तस्य उत्साहः वर्धते तथा सः कामपि विशेषरूपेण उल्लेखनीयाम् उन्नतिं करोति।

४—एतदपेक्षया यात्राया अन्ये अपि अनेके लाभाः सम्भवन्ति। मनुष्यः यदा स्वस्थानं परित्यज्य दूरदेशं गच्छति तदा तस्य व्यवहारे कुशलता आयाति, परिचयः वर्द्धते, सहनशीलता आगच्छति, मनोविनोदः जायते, तथा कष्टसहिष्णुता आत्मनिर्भरता चेत्यादयः गुणाः विकसिताः भवन्ति।

५—प्राचीनकाले दूरयात्रासु महती कठिनता आसीत्। मार्गाः विकटाः आसन्। वाहनानां सुलभता न आसीत्। समयः, श्रमः, द्रव्यं च अत्यधिकं लगति स्म। तथापि बहवः जनाः जलमार्गेण स्थलमार्गेण च देशे देशान्तरेषु भ्रमणं कुर्वन्ति स्म।

कहा जाता हैं अतएव जो मनुष्य दूर देशों में भ्रमण करने के लिए जाते हैं वे यात्री कहे जाते हैं।

२—यात्रा अनेक उद्देश्यों से की जाती है। कुछ लोग तीर्थों में घूमने के लिए यात्रा करते हैं। कुछ लोग ऐतिहासिक स्थानों को देखने के लिये यात्रा करते हैं। कुछ लोग प्राकृतिक दृश्यों को देखने के लिए यात्रा करते हैं इसी प्रकार कुछ लोग। विद्योपार्जन के लिये, कुछ धनोपार्जन के लिए, कुछ धर्मप्रचार के लिये तथा कुछ लोग विजय एवं यशप्राप्ति के लिए यात्रा करते हैं।

३—यात्रा का मानवजीवन में बहुत महत्त्व है। मनुष्य केवल एक स्थान में रहकर अच्छी उन्नति नहीं कर सकता है। जब वह दूर-दूर देशों में जाता है, अनेक स्थानों में घूमता है, अनेक पुरुषों से मिलता है और मानवनिर्मित आश्चर्यजनक वस्तुओं को अपने नेत्रों से देखता है तब उसकी बुद्धि का विकास होता है, उसके हृदय में महत्त्वाकांक्षायें उत्पन्न होती हैं, उसकी कर्तृत्वशक्ति बढ़ती हैं, उसका उत्साह बढ़ता है तथा वह कुछ विशेष रूप से उल्लेखनीय उन्नति करता है।

४—इसकी अपेक्षा यात्रा से दूसरे भी अनेक लाभ होते हैं। मनुष्य जब अपने स्थानको छोड़कर दूर देशों में जाता है तब उसके व्यवहार में कुशलता आती है, परिचय बढ़ता है, सहनशीलता आती है, मनोविनोद होता है तथा कष्ट सहने की शक्ति और आत्मनिर्भरता इत्यादि गुण विकसित होते हैं।

५—प्राचीनकाल में दूर की यात्राओं में महतो कठिनता थी। रास्ते विकट थे। सवारी की सुलभता नहीं थी। समय, श्रम और द्रव्य अधिक लगता था। फिर भी बहुत लोग जलमार्ग से और : स्थलमार्ग से देश-देशान्तरों में भ्रमण करते थे।

बहवः विदेशवासिनः पर्यटकाः नानानदीनदान् उत्तीर्य, पर्वतान् उल्लंघ्य समुद्रान् च अतिक्रम्य अस्माकं देशे भ्रमणार्थम् आगतवन्तः सन्ति । अस्माकं देशस्य अपि बहवः जनाः, ऋषयः, मुनयः, वणिजः, विद्वांसः, धर्मप्रचारकाः, राजानः राजदूताः च विदेशेषु गतवन्तः सन्ति । एवं च मानवसमाजे दूरयात्रायाः परम्परा बहोः कालात् आगच्छति । दूरयात्रा उन्नतिशीलमानवसमाजस्य कृते जीवनस्य एकः आवश्यकः कार्यक्रमः अस्ति ।

६—इदानीं तु यात्रा अतीव सरला संवृत्ता वर्तते । मार्गाणां यानानां वा काचित् न्यूनता नास्ति । द्रव्ये सति अल्पकालेन जनः समस्ते अपि संसारे भ्रमणं कर्तुं शक्नोति । जलमार्गेण, स्थलमार्गेण आकाशमार्गेण वा मनुष्यः स्वच्छन्दं भ्रमणं कर्तुं शक्नोति अभीष्टं च कार्यं कर्तुं शक्नोति ।

७—अतः यात्रायाः सर्वेषु साधनेषु विद्यमानेषु मनुष्यैः अवश्यमेव यात्राद्वारा जायमानानां विविधलाभानां प्राप्तये प्रयत्नः (कर्तव्यः) साधनसम्पन्नाः अपि बहवः जनाः आलस्येन, कार्पण्येन, कष्टभयेन गृहकार्यहानि-भयेन वा गृहाद् बहिः न निस्सरन्ति । ते गृहे स्थिताः एव परमं सन्तोषं भजन्ते । परन्तु इमां कूपमण्डूकसदृशीं वृत्तिं परित्यज्य आत्मनः विकासाय अवश्वमेव सर्वैः जनैः यथासम्भवं भ्रमणं (विधेयम्) ।



२७—कृषकाणां जीवनम्

१—ये कृषिं कुर्वन्ति ते कृषकाः (कथ्यन्ते) । अस्माकं देशः कृषिप्रधानः देशः अस्ति । अत्र कृषकाणां संख्या अधिका वर्तते ।

बहुत से विदेशी पर्यटक अनेक नदियों-नालों को पारकर, पर्वतों को लाँघकर और समुद्रों को पार करके हम लोगों के देश में घूमने के लिए आये हैं। हम लोगों के देश के भी बहुत लोग, ऋषि, मुनि, व्यापारी, विद्वान, धर्मप्रचारक, राजा और राजदूत विदेशों में गये हैं। इस तरह मानवसमाज में दूर यात्रा की परम्परा बहुत काल से चली आ रही है। दूर की यात्रा उन्नति-शील मानव समाज के लिए जीवन का एक आवश्यक कार्यक्रम है।

६—इस समय तो यात्रा बहुत ही सरल हो गई है। रास्ते की अथवा सवारी की कोई कमी नहीं है। द्रव्य होने पर थोड़े समय में मनुष्य समस्त विश्व में भ्रमण कर सकता है। जलमार्ग से, स्थलमार्ग से अथवा आकाशमार्ग से मनुष्य स्वच्छन्द भ्रमण कर सकता है और अभीष्ट कार्य कर सकता है।

७—अतः यात्रा के सभी साधनों के रहने पर मनुष्य को अवश्य ही यात्रा द्वारा होने वाले विविध लाभों की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना चाहिए। साधनसम्पन्न भी बहुत लोग आलस्य से, कृपणता से, कष्ट के भय से अथवा गृहकार्य की हानि के भय से घर से बाहर नहीं निकलते हैं। वे घर रहते हुए ही परम सन्तोष पाते हैं। परन्तु इस कूप-मण्डूक सदृश वृत्ति को छोड़कर अपने विकास के लिए अवश्य ही सबको भ्रमण करना चाहिए।



२८—किसानों का जीवन

१—जो खेती करते हैं, वे किसान कहे जाते हैं। हम लोगों का देश कृषि-प्रधान देश है। यहाँ किसानों की संख्या अधिक

कृषकाः कृषिं कृत्वा जीवनोपयोगीनि बहूनि वस्तूनि उत्पादयन्ति। तैः एव वस्तुभिः सर्वे जनाः जीवन्ति। अतः समाजस्य जीवनं धारणं च कृषकाणाम् एव उपरि निर्भरं वर्तते।

२—कृषिः महता परिश्रमेण भवति। अत एव कृषकाणां दिनचर्या अतीव कठोरा श्रममयी च भवति। तेषां जीवने विश्रामाय मनोरंजनाय वा अतीव अल्पः अवसरः (लभ्यते)। कृषकाः प्रातःकालात् आरभ्य सायंकालपर्यन्तं कठिनं परिश्रमं कुर्वन्ति। रात्रौ अपि ते पूर्णरूपेण विश्रामाय शयनाय वा समयं न लभन्ते।

३—यदा रात्रिः किञ्चित् अवशिष्टा भवति तदैव कृषकाः उत्तिष्ठन्ति। उत्थाय ते रामनाम कथयन्ति। ततः गोष्ठं गत्वा तत्र कीले बद्धान् पशून् मोचयन्ति। मोचयित्वा च तान् पशून् ते भोजनस्थाने बध्नन्ति घास-बुसादिकं च खादयन्ति। ये पशवः केवलं घासं बुसं वा न खादन्ति तेभ्यः ते हरितघासं तुषं कल्कादिकं च ददते तथा लवणेन सह सक्तून् अपि पाययन्ति।

४—एवं च महता मनोयोगेन पशून् खादयित्वा, स्वयं च किञ्चत् प्रातराशं कृत्वा कृषकाः स्वकीये आवश्यके सामयिके च कार्ये संलग्नाः भवन्ति।

५—कृषकाणां कार्याणि ऋतोः अनुसारं भिन्नभिन्नानि भवन्ति। यदा वपनस्य कालः आगच्छति तदा ते कुद्दालेन क्षेत्राणि खनन्ति। हलेन क्षेत्राणि कर्षन्ति। द्वितीया कुर्वन्ति तृतीया कुर्वन्ति। क्षेत्रेभ्यः कुश-कण्टकादीनि अपसारयन्ति। ततः शुभे मुहूर्ते बीजानि वपन्ति। बीजानि उप्त्वा क्षेत्रं कोटि-

है। किसान खेती करके जीवनोपयोगी बहुत-सी वस्तुएँ उत्पन्न करते हैं। उन्हीं बस्तुओं से सभी लोग जीते हैं। अतः समाज का जीवन और धारण किसानों के ही ऊपर निर्भर है।

३—कृषि महान परिश्रम से होती है। अतएव कृषकों की दिन-चर्या बहुत ही कठोर और श्रमयुक्त होती है। उनके जीवन में विश्राम के लिए अथवा मनोरंजन के लिए बहुत ही थोड़ा समय मिलता है। किसान प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक कठिन परि-श्रम करते हैं। रात में भी वे पूर्णरूप से विश्राम के लिए या शयन के लिए समय नहीं पाते हैं।

३—जब रात कुछ बाकी रहती है तभी किसान उठते हैं। उठ-कर वे रामनाम कहते हैं। उसके बाद गोशाला में जाकर वहाँ खूँटे में बँधे पशुओं को खोलते हैं और खोलकर उन पशुओं को वे खाने के स्थान पर बाँधते हैं तथा घास-भूसा आदि खिलाते हैं। जो पशु घास-भूसा नहीं खाते हैं उनके लिए वे हरी-घास, भूसी और खली इत्यादि देते हैं तथा नमक के साथ सत्तू भी पिलाते हैं।

४—इस तरह बड़े मनोयोग से पशुओं को खिलाकर तथा स्वयं कुछ जलपान कर किसान अपने आवश्यक और सामयिक काम में लग जाते हैं।

५ – किसानों के काम ऋतु के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। जब बोने का समय आता है तब वे कुदाल से खेतों को कोड़ते हैं। हल से खेतों को जोतते हैं। दुबारा जोतते हैं। तिबारा जोतते हैं। खेतों से कुश-काँटे इत्यादि हटाते हैं। उसके बाद शुभ मुहूर्त में बीज बोते हैं। बीजों को बोकर खेत को हेंगी से बराबर करते हैं।

शेन समीकुर्वन्ति। ततः मध्ये क्षेत्राणि सिञ्चन्ति। घासतृणादिकं शोधयन्ति। मञ्चेषु उपविश्य क्षेत्राणि च रक्षन्ति।

६—यदा शस्यं परिपक्वं भवति तदा कर्तनस्य कार्यं प्रारभ्यते। सर्वे जनाः हस्ते दात्राणि गृहीत्वा क्षेत्रेषु गच्छन्ति। तेषु केचित् शस्यानि लुनन्ति, केचित् पुञ्जानि बध्नन्ति, केचित् च तानि खले आनयन्ति। खले आनीतेषु सर्व-शस्येषु तत्र मेधिं बद्ध्वा तथा अनेकान् बलीवर्दान् दामनि योजयित्वा शस्यानां कण्डनं भवति। ततश्च शूर्पादिभिः उत्पवनं भवति। अनन्तरं विशुद्धं धान्यं गृहे (आनीयते)।

७—वर्षाकाले कृषकाः धान्यानि वपन्ति। ततः पुरुषाः तथा स्त्रियः उभये अपि धान्यं रोपयन्ति। धान्यरोपणकाले स्त्रियः सामूहिकरूपेण रोपणगीतानि गायन्ति। तानि गीतानि अतीव मनोहराणि भवन्ति।

८—मध्याह्नकाले अनेके कृषकाः क्षेत्रेषु एव भोजनं कुर्वन्ति। तेषां स्त्रियः भोजनं जलं च क्षेत्रेषु नयन्ति। ततः ते तत्रैव भोजनं विश्रामं च कुर्वन्ति। तदनन्तरं पुनः कार्ये संलग्नाः भवन्ति।

९—उपरिलिखित-कार्यातिरिक्तं घासादीनां समाहरणस्य अपि महान् भारः कृषकाणां शिरसि भवति। ते स्वभोजनापेक्षया पशूनां भोजनस्य प्रबन्धं प्रथमम् आवश्यकं मन्यन्ते। तदर्थं प्रतिदिनम् अनेके पुरुषाः स्त्रियः तथा बालकाः क्षुरप्रं पिटकं च आदाय घासकर्तनाय इतस्ततः गच्छन्ति। कदाचित् वंशपत्राणि त्रोटयन्ति। यदा इक्षूणां कर्तनस्य कालः समायाति तदा इक्षुपत्राणां कर्तनाय कृषकाः माघ

उसके बाद बीच में खेतों को सींचते हैं। घास-तृणादि को साफ करते हैं। मचानों पर बैठकर खेत की रखवाली करते हैं।

६—जब फसल पक जाती है तब काटने का कार्य प्रारम्भ होता है। सभी लोग हाथ में हँसिया लेकर खेतों में जाते हैं। उनमें कुछ लोग फसल काटते हैं, कुछ लोग पूंज बाँधते हैं और कुछ लोग उसे खलिहान में लाते हैं। खलिहान में सम्पूर्ण फसल लाने पर वहाँ मेह बाँधकर तथा बहुत से बैलों को रस्सी में बाँधकर फसल की भूसी छुड़ायी जाती है। उसके वाद सूप आदि से ओसवनी होती हैं। पश्चात् विशुद्ध अन्न को घर में लाते हैं।

७—वर्षाकाल में किसान धान बोते हैं। उसके बाद पुरुष तथा स्त्रियाँ दोनों धान रोपते हैं। धान रोपने के समय स्त्रियाँ सामूहिक रूप से रोपनी के गीत गाती हैं। वे गीत बहुत ही मनोहर होते हैं।

८—दोपहर के समय कई किसान खेतों में ही भोजन करते हैं। उनकी स्त्रियाँ भोजन और जल खेतों में ले जाती हैं। उसके बाद वे वहीं भोजन और विश्राम करते हैं। उसके बाद फिर कार्य में लग जाते हैं।

९—ऊपर लिखे गये कार्य के अतिरिक्त घास आदि के लाने का भी बड़ा बोझ किसानों के सिर पर होता है। वे अपने भोजन की अपेक्षा पशुओं के भोजन का प्रबन्ध प्रथम आवश्यक मानते हैं। उनके लिए प्रतिदिन अनेक पुरुष, स्त्रियाँ तथा बालक खुरपा खाँची लेकर घास काटने इधर-उधर जाते हैं। कभी बाँस के पत्ते तोड़ते हैं। जब ईख के काटने का समय आता है तब ईख के पत्तों को काटने के लिए किसान माघ महीने के भयंकर जाड़े में एक साधारण कपड़ा

मासस्य भयङ्करे शीतकाले एकं साधारणं कर्पटं शरीरे धृत्वा कम्पमानाः इक्षुक्षेत्रेषु गच्छन्ति। एवं महता श्रमेण कष्टेन च पशूनाम् आहारस्य प्रबन्धं कुर्वन्ति।

१०—इदं सर्वं कार्यं दिने सम्पाद्य सायंकाले कृषकाः किञ्चित् विश्रामं कर्तुं समयं लभन्ते। तस्मिन् समये केचित् विश्राम कुर्वन्ति, केचित् जलपानं कुर्वन्ति, केचित् आवश्यकवस्तूनि लवणतैलादीनि क्रेतुं हाटकं गच्छन्ति, केचित् च अवशिष्टानि कार्याणि एव सम्पादयन्ति। बहवः स्नानम् अपि सायङ्काले एव कुर्वन्ति। सायंकालस्य कृत्ये समाप्ते पुनः रात्रौ बहुविलम्बपर्यन्तं विविधानि गृहकार्याणि सम्पाद्य भोजनं कुर्वन्ति ततः शयनं कुर्वन्ति।

११—इदं कृषकाणां जीवनस्य सामान्यं स्वरूपं वर्तते। वस्तुतस्तु कृषकाणां बहूनि कार्याणि भवन्ति। अहोरात्रं परिश्रमं कुर्वन्ति। शीतम् आतपं वा न गणयन्ति। बहूनि कष्टानि सहन्ते। तथापि तेषां कार्यस्य समाप्तिः न भवति।

११—एतादृशं घोरं परिश्रमं कुर्वाणाः अपि कृषकाः सुखिनः न सन्ति इति महतः दुःखस्य विषयः वर्तते।

३०—कन्दुक-क्रीडा

१—कन्दुकेन या क्रीडा भवति सा कन्दुकक्रीडा कथ्यते। क्रीडाः द्विविधाः भवन्ति। गृहक्रीडाः बहिःक्रीडाश्च। गृहे उपविश्य याः क्रीडाः क्रीड्यन्ते ताः गृहक्रीडा इति उच्यन्ते। गृहाद् बहिः विस्तृते क्रीडाप्रांगणे याः क्रीडाः क्रीड्यन्ते ताः बहिःक्रीडा इति उच्यन्ते। खेलनम्, कूर्दनम्, धावनम्, उत्प्लवनम्, कपर्दी,

शरीर पर रख कर काँपते हुए ईख के खेतों में जाते हैं। इस तरह महान श्रम से और कष्ट से पशुओं के आहार का प्रबन्ध करते हैं।

१०—यह सब कार्य दिन में करके सन्ध्यासमय किसान कुछ विश्राम करने के लिए समय पाते हैं। उस समय कुछ लोग विश्राम करते हैं, कुछ लोग जलपान करते हैं, कुछ लोग नमक-तेल आदि आवश्यक वस्तु खरीदने के लिए बाजार जाते हैं और कुछ लोग बचे हुए कार्यों को ही पूरा करते हैं। बहुत लोग स्नान भी सायंकाल ही करते हैं। सायंकाल के करने योग्य काम के समाप्त होने पर फिर रात में बहुत-देर तक अनेक गृहकार्यों को करके भोजन करते हैं और फिर सो जाते हैं।

११—यह किसानों के जीवन का सामान्य रूप है। वस्तुतः कृषकों के बहुत से कार्य होते हैं। वे रात-दिन परिश्रम करते हैं। जाड़ा या गर्मी नहीं गिनते। बहुत कष्टों को सहते हैं। तब भी उनके कार्य समाप्त नहीं होते हैं।

१२—ऐसा घोर परिश्रम करते हुए भी किसान सुखी नहीं हैं, यह बड़े दुःख का विषय है।



३०—कन्दुक-क्रीड़ा

१—गेंद से जो खेल होता है उसे "कन्दुक क्रीड़ा" कहते हैं। खेल दो प्रकार के होते हैं। घर का खेल और बाहर का खेल। "घर में बैठकर जो खेल खेला जाता है वह घर का खेल" कहा जाता है। घर से बाहर विस्तृत खेल के मैदान में जो खेल खेला जाता है उसे "बाहर का खेल" कहते हैं। खेलना, कूदना,

कन्दुकम्, पादकन्दुकम् तथा वीटा इत्यादयः क्रीडाः बहिःक्रीडाः सन्ति ।

२—कन्दुकक्रीडा अस्माकं देशस्य अतिप्राचीना तथा अतिप्रिया क्रीडा अस्ति । संस्कृतसाहित्यस्य अनेकेषु ग्रन्थेषु स्त्रीपुरुषाणां कन्दुकक्रीडायाः अतीव मनोहरं वर्णनं लभ्यते । प्राचीनसमये कन्दुक-क्रीडा-विषये "कन्दुकतन्त्र" नामक एकः महान् ग्रन्थः अपि आसीत् । अनेन ज्ञायते यत् अस्माकं देशस्य क्रीडासु कन्दुकक्रीडायाः कियत् महत्त्वपूर्णं स्थानम् आसीत् ।

३—अस्मिन् अपि समये कन्दुकक्रीडायाः महान् प्रचारः अस्ति । ग्रामे-ग्रामे, गृहे-गृहे, विद्यालये-विद्यालये च सर्वत्र बालकाः विद्यार्थिनः च कन्दुकेन पादकन्दुकेन च खेलन्ति । अस्य खेलस्य प्रतियोगितायाः अपि अनेकेषु स्थानेषु प्रतिवर्षम् आयोजनं भवति यत्र महता उत्साहेन बहवः खेलकाः दर्शकाः च सम्मिलिताः भवन्ति ।

४—अस्मिन् खेले खेलकानां द्वौ दलौ भवतः एकस्मिन् एक-स्मिन् दले दश-दश खेलकाः भवन्ति । उभयोः दलयोः मध्ये एकः मध्यस्थः भवति यः क्रीडासमये सुव्यवस्थां करोति, अव्यवस्थां वारयति, नियमनिर्देशं करोति तथा विवादे समुपस्थिते मध्यस्थतां करोति ।

५—कन्दुकक्रीडया तथा अन्याभिः अपि क्रीडाभिः क्रीडकानां महान् लाभ भवति । क्रीडने धावनादिना शरीरस्य बलं वर्द्धते, स्फूर्तिः आयाति, शक्तिसञ्चयः भवति, श्रमशक्तिः वृद्धि गच्छति, अङ्गप्रत्यङ्गानि च सुपुष्टानि भवन्ति । क्रीडनेन शारीरिकशक्त्या सह बुद्धेः अपि विकासः भवति । क्रीडने हि परपक्षस्य पराजयाय

दौड़ना, उछलना, कबड्डी, गेंद, फुटबाल तथा क्रिकेट इत्यादि खेल "बाहर के खेल" हैं।

२—गेंद का खेल हम लोगों के देश का अति प्राचीन तथा अति प्रिय खेल है। संस्कृत साहित्य के अनेक-ग्रन्थों में स्त्री-पुरुषों के गेंद के खेल का बहुत ही मनोहर वर्णन मिलता है। प्राचीन काल में गेंद के खेल के विषय में "कन्दुक-तन्त्र" नाम का एक महान् ग्रन्थ भी था। इससे मालूम होता है कि हम लोगों के देश के खेलों में गेंद के खेल का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान था।

३—इस समय भी गेंद के खेल का महान प्रचार है। गाँव-गाँव में, घर-घर में और विद्यालय-विद्यालय में सर्वत्र बालक और विद्यार्थी गेंद से और फुटबाल से खेलते हैं। इस खेल की प्रतियोगिता का भी अनेक स्थानों में आयोजन होता है जहाँ बड़े उत्साह से बहुत लोग खेलने वाले और देखने वाले सम्मिलित होते हैं।

४—इस खेल में खेलने वालों के दो दल होते हैं। एक-एक दल में दस-दस खेलने वाले होते हैं। दोनों दलों में एक मध्यस्थ होता है जो खेलने के समय अच्छी व्यवस्था करता है, अव्यवस्था को दूर करता है, नियम का निर्देश करता है तथा विवाद उपस्थित होने पर मध्यस्थता करता है।

५ - गेंद के खेल से तथा दूसरे भी खेलों से खेलने वालों का महान लाभ होता है। खेलने और दौड़ने इत्यादि से शरीर का बल बढ़ता है, स्फूर्ति आती है, शक्ति संचय होता है, परिश्रम करने की शक्ति बढ़ती है और अंग-प्रत्यंग खूब पुष्ट होता है। खेलने में दूसरे पक्ष के पराजय के लिए

पदे-पदे चतुरतायाः, निपुणतायाः सूक्ष्मदर्शितायाः तथा प्रत्युत्पन्नमतित्वस्य आवश्यकता भवति। एतदतिरिक्तं क्रीडनेन अन्येषामपि मानवोचितगुणानां विकासाय अवसरः लभ्यते। ते च गुणाः इमे सन्ति यथा—आज्ञापालनम्, अनुशासनप्रियता, परस्परं प्रीतिः, कष्टसहिष्णुता, सहनशीलता, साहसं, पारस्परिकः सहयोगः व्यवहार-कुशलता च इत्यादि। मनोरञ्जनं तु क्रीडानां सर्वसाधारणः लाभः अस्ति एव।

६—अनेन प्रकारेण कन्दुकादिक्रीडाः मानवसमाजस्य, विशेषःरूपेण नवयुवकानां विद्यार्थिनां च महान्तम् उपकारं कुर्वन्ति। सर्वे बालकाः युवानः विद्यार्थिनः च यदि क्रीडाकुशलाः भवेयुः तदा तेषां समाजस्य च स्वास्थ्यदृष्टया महान् लाभः भविष्यति इति सुनिश्चितं वर्तते।



३१—पुस्तकालयः

१—यत्र सामान्यरूपेण सर्वेषां जनानां पठनाय पुस्तकानां संग्रहः विधीयते सः पुस्तकालयः कथ्यते।

२—पुस्तकालयेषु प्रायेण बहूनां जनानां सहायतया विविधविषयकाणां पुस्तकानां संग्रहः विधीयते। तस्य सञ्चालनाय एका समितिः भवति। एकः पुस्तकालयाध्यक्षः (निर्वाच्यते) यः प्रतिदिनं सुनिश्चिते समये आगत्य पुस्तकालयस्य उद्घाटनं करोति तथा पुस्तकानां आदानप्रदानयोः अपि व्यवस्थां करोति। पुस्तकालये बहूनि समाचारपत्राणि अपि आगच्छन्ति। नियमिते समये पाठकाः आगत्य यथारुचि पुस्तकानि पत्र-पत्रिकादीनि च आदाय

पग-पग पर चतुरता की, निपुणता की, सूक्ष्मदर्शिता की तथा प्रत्युत्पन्नमतित्व की आवश्यकता है। इसके अलावे खेलने से दूसरे भी मानवोचित गुणों के विकास के लिए अवसर मिलता है और वे गुण ये हैं—जैसे—आज्ञा का पालन करना, अनुशासन प्रियता, परस्तर प्रेम, कष्ट सहने की क्षमता, सहनशीलता, साहस, आपसी सहयोग और व्यवहार-कुशलता इत्यादि। मनोरंजन तो खेलों का सर्व-साधारण लाभ है ही।

६—इस प्रकार से कन्दुकादि क्रीड़ायें मानवसमाज का और विशेष रूप से नवयुवक विद्यार्थियों का महान उपकार करती हैं। सभी बालक युवक और विद्यार्थी यदि खेल में कुशल हों तो उनका और समाज का स्वास्थ्य की दृष्टि से महान लाभ होगा यह सुनिश्चित है।



३१—पुस्तकालय

१—जहाँ सामान्य रूप से सभी लोगों के पढ़ने के लिए पुस्तकों का संग्रह किया जाता है वह पुस्तकालय कहलाता है।

२—पुस्तकालयों में प्रायः बहुत लोगों की सहायता से विविध बिषयों की पुस्तकों का संग्रह होता है। उसके संचालन के लिये एक समिति होती है। एक पुस्तकालयाध्यक्ष चुना जाता है जो प्रतिदिन सुनिश्चित समय पर आकर पुस्तकालय को खोलता है तथा पुस्तकों के आदान-प्रदान की व्यवस्था करता है। पुस्तकालय में बहुत से समाचार पत्र भी आते हैं। नियमित समय पर पाठक-गण आकर इक्छानुसार पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं को लेकर

पठन्ति, पठित्वा च गमनसमये परावर्तयन्ति। ये जनाः पुस्तकालयाय नियमितरूपेण मासिकं शुल्कं ददते ते स्वगृहम् अपि पुस्तकानि नीत्वा पठितुं शक्नुवन्ति।

३—पुस्तकालयानां स्थापनेन प्रचारेण च समाजस्य महान् लाभः वर्तते। शिक्षाप्रचारस्य साधनेषु पुस्तकालयानां महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। येषां जनानां सविधे पुस्तकानां क्रयणाय धनं न भवति ते अपि पुस्तकालयं गत्वा इच्छानुसारं पुस्तकानि पठन्ति। ये च निर्धनाः छात्राः स्वद्रव्येण पाठ्य-पुस्तकानां क्रयणे असमर्थाः भवन्ति ते अपि पुस्तकालयेभ्यः पुस्तकानि गृहीत्वा स्वकार्यं सञ्चालयन्ति। यस्मिन् स्थाने पुस्तकालयाः भवन्ति तत्र ये अनिच्छया गच्छन्ति ते अपि किञ्चित् पठन्ति एव। अथ च ये विशिष्टा विद्वांसः कस्यापि विषयस्य विशेषरूपेण अध्ययनं अनुसन्धानं वा कुर्वन्ति तेषां निर्वाहः तु पुस्तकालयेभ्यः विना असम्भवः एव वर्तते। एवं च शिक्षाप्रचारे पुस्तकालयानां महती उपयोगिता वर्तते। पुस्तकालयेषु समाचारपत्रद्वारा यत् देश-विदेशयोः समाचाराणां ज्ञानं भवति सः अपि एकः महान् लाभः अस्ति।

४—प्रसन्नतायाः अयं विषयः वर्तते यत् सम्प्रति पुस्ताकालयानां संख्या दिने दिने वर्धमाना (विलोक्यते)। राजकीयशिक्षाविभागः, सामाजिकाः पुरुषाः, साधारणजनाश्च सर्वे अपि पुस्तकालयानां सम्वर्द्धनार्थं प्रयतमानाः सन्ति। पुस्तकालयानां सङ्घटनाय च काश्चित् समितयः अपि तत्तत्प्रदेशेषु राज्यद्वारा सञ्चालिताः सन्ति। इमां प्रगतिं दृष्ट्वा विश्वासः भवति यत् अल्पेन एव कालेन ग्रामे-ग्रामे पुस्तकालयाः स्थापिताः भविष्यन्ति। क्वचित्-क्वचित् पुस्तकालयेषु अनेकाः दुर्व्यवस्थाः अपि दृष्टि-

पढ़ते हैं और पढ़कर जाने के समय लौटा देते हैं। जो लोग पुस्तकालय के लिये नियमित रूप से मासिक शुल्क देते हैं वे अपने घर पर भी पुस्तकों को लाकर पढ़ सकते हैं।

३—पुस्तकालयों की स्थापना और प्रचार से समाज का महान लाभ होता है। शिक्षाप्रचार के साधनों में पुस्तकालयों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिन लोगों के पास पुस्तकों को खरीदने के लिए धन नहीं होता है वे भी पुस्तकालयों में जाकर इच्छानुसार पुस्तकों को पढ़ते हैं और जो निर्धन छात्र अपने द्रव्य से पाठ्य-पुस्तकों के खरीदने में असमर्थ होते हैं वे भी पुस्तकालयों से पुस्तकों को लेकर अपना काम चलाते हैं। जिस स्थान पर पुस्तकालय होता है वहाँ जो लोग बिना इच्छा से जाते हैं वे भी कुछ पढ़ते ही हैं। और जो विशिय्ट विद्वान किसी भी विषय का विशेष रूप से अध्ययन या अनुसंधान करते हैं उनका निर्वाह तो पुस्तकालय के बिना असंभव ही है। इस तरह शिक्षा-प्रचार में पुस्नकालयों की महान् उपयोगिता है। पुस्तकालयों में समाचार पत्र के द्वारा जो देश-विदेशों के समाचारों का ज्ञान होता है वह भी एक महान लाभ है।

४—प्रसन्नता का विषय यह है कि इन पुस्तकालयों की संख्या दिन-दिन बढ़ती हुई दिखायी पड़ती है। राजकीय-शिक्षा विभाग, सामाजिक पुरुषगण और साधारण मनुष्य सभी पुंस्तकालयों को बढ़ाने के लिये प्रयत्नशील हैं। पुस्तकालयों के संगठन के लिये कुछ समितियाँ भी उन-उन प्रदेशों में राज्य द्वारा संचालित हैं। इस प्रगति को देखकर विश्वास होता है कि थोड़ें ही समय में गाँव-गाँव में पुस्तकालय स्थापित होंगे।

गोचराः भवन्ति। यथा—क्वचित् उपयोगिनां पुस्तकानां न्यूनता भवति, क्वचित् आवश्यकानि उपकरणानि न भवन्ति, क्वचित् उद्घाटनस्य पिधानस्य च समयः निश्चितः न भवति, क्वचित् पुस्तकानां आदान-प्रदानयोः काचित् सुव्यवस्था न भवति। इमाः सर्वाः दुर्व्यवस्था यदि दूरीकृताः स्युः तदा पुस्तकालयेभ्यः समाजस्य सुमहान् उपकारः सम्पद्येत।



पर कहीं-कहीं पुस्तकालयों में अनेक दुर्व्यस्थाएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। जैसे—कहीं उपयोगी पुस्तकों की कमी होती है, कहीं आवश्यक उपकरण नहीं हैं, कहीं खुलने का और बन्द करने का समय निश्चित नहीं होता है, कहीं पुस्तकों के आदान-प्रदान की कोई सुव्यवस्था नहीं होती है। ये सभी दुर्व्यवस्थाएँ यदि दूर हो जायें तो पुस्तकालयों से समाज का महान उपकार हो।



विचारात्मकाः निबन्धाः
विचारात्मक निबन्ध

१—शिक्षा।

१—यया मनुष्यस्य शारीरिकशक्तीनाम् आध्यात्मिकशक्तीनां च सम्यक् प्रकारेण विकासः भवति सा शिक्षा (कथ्यते)। मनुष्यः केबलं जन्मना एव मनुष्यः न भवति प्रत्युत यदा स शिक्षां प्राप्नोति तदैव पूर्णरूपेण मनुष्यः भवति। अतः मनुष्याणां कृते शिक्षा सर्वाधिकम् आवश्यकं महत्त्वपूर्णं च वस्तु वर्तते।

२—शिक्षायाः अगणनीयाः लाभाः सन्ति। यावत् मनुष्यः समुचितां शिक्षां न लभते तावत् सः किमपि कार्यं समीचीनरूपेण कर्तुं न शक्नोति। यथा खनि-निर्गतं रत्नं संस्कारं विना धारणोपयोगि न भवति तथैव मनुष्यः अपि शिक्षां विना समाजे व्यवहारोपयोगी न भवति।

३—यदा मनुष्यः बाल्यकालात् एब समुचितां शिक्षां प्राप्नोति तदा एव सः सम्यक् प्रकारेण कर्तव्यम् अकर्तव्यं वा ज्ञातुं शक्नोति। सः एव उचितम् अनुचितम् अपि वा बेदितुं प्रभवति। शिक्षासम्पन्नः पुरुषः यत् एव कार्यं कुरुते तत् एव समीचीनतया कुरुते। शिक्षितानां भोजनं पानम्, हासः परिहासः, क्रीडा कौतुकम्, वादः विवादः आलापः संलापः, उत्थानम्, उपवेशनम्, कासः श्वासः च इति सर्वमपि लघु महद् वा कार्यं शोभनं सभ्यतापूर्णं च भवति। इतः विपरीतम् अशिक्षिताः जनाः यत् एव कार्यं कुर्वन्ति तत् एव असभ्यतापूर्णम् अशोभनम् उद्वेगजनकं च भवति। अतः मानवजीवने शिक्षायाः महत्त्वं सर्वाधिकं (मन्यते)।

४—हर्षस्य अयं विषयः वर्तते यत् सम्प्रति स्वतन्त्रे भारते शिक्षालयानां संख्या प्रतिवर्षं वर्द्धमाना (विलोक्यते)।

१–शिक्षा

१—जिसके द्वारा मनुष्य की शारोरिक शक्तियों का और आध्यात्मिक शक्तियों का अच्छी तरह विकास होता है, वह शिक्षा कहलाती है। मनुष्य केवल जन्म से ही मनुष्य नहीं होता है, वल्कि जब वह शिक्षा पाता है तभी पूर्णरूप से मनुष्य होता है। अतः मनुष्यों के लिए शिक्षा सबसे अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्णं वस्तु है।

२.—शिक्षा के असंख्य लाभ हैं। जब तक मनुष्य समुचित शिक्षा नहीं पाता है तब तक वह कोई भी कार्य समुचित रूप से नहीं कर सकता है। जैसे खान से निकला हुआ रत्न संस्कार के विना धारण करने योग्य नहीं होता है, वैसे ही मनुष्य भीं शिक्षा के बिना समाज में ब्यवहारोपयोगी नहीं होता है।

३—जब मनुष्य बाल्यकाल से ही समुचित शिक्षा पाता है तभी वह अच्छी तरह कर्तव्य या अकर्तव्य को जान सकता है। वही उचित या अनुचित जान सकता है। शिक्षासम्पन्न पुरुष जो भी कार्य करता है वही अच्छी तरह से करता है। शिक्षित पुरुषों का खान-पान, हास-परिहास, क्रीड़ा कौतुक, वाद-विवाद, आलाप-सँलाप, उठना-बैठना, खाँसना और श्वास लेना, यह समस्त छोटा-बड़ा कार्य अच्छा और सभ्यतापूर्ण होता है। इसके विपरीत, अशिक्षित लोग जो भी कार्य करते हैं वही असभ्यतापूर्ण अशोभनीय और उद्वेजक होता है। अतः मनुष्यों के जीवन में शिक्षा का महत्त्व सबसे अधिक माना जाता है।

४—हर्ष का यह विषय है कि इस समय स्वतन्त्र भारत में शिक्षालयों की संख्या प्रत्येक वर्ष बढ़ती हुई दिखाई पड़ती है।

५—इयं शिक्षायाः अभिवृद्धिः देशस्य कृते शुभलक्षणं वर्तते। परन्तु सहैव इदं दृष्ट्वा महत् दुःखमपि भवति यत् साम्प्रतं शिक्षालयेषु ये शिक्षां गृह्णन्ति तेषु संयमस्य, सदाचारश्य, अनुशासनपालनस्य च महान् अभावः दृश्यते। ते केवलं परीक्षादानं, प्रमाणपत्रस्य प्राप्तिं, ततश्च येन केन अपि प्रकारेण अर्थोपार्जनकरणमेव स्वजीवनस्य अन्तिमं लक्ष्यं मन्यन्ते। वर्तमानायाः शिक्षापद्धतेः अयमेकः महान् दोषः अस्ति। अतः शिक्षाप्रचारेण सह अस्य महतः दोषस्य दूरीकरणे अपि ध्यानदानं परमावश्यकं वर्तते। तदैव शिक्षा वास्तविकी शिक्षा भविष्यति, शिक्षिताः च वास्तविकरूयेण शिक्षिताः (मंस्यन्ते)।



२—विद्या

१—येन वस्तुना मनुष्यस्य अज्ञानं नश्यति तथा ज्ञानं जायते तत् विद्या इति (कथ्यते)।

२—अस्मिन् संसारे बहूनि उपयोगीनि वस्तूनि सन्ति परं तेषु विद्या एव सर्वश्रेष्ठं उपयोगि वस्तु अस्ति। अखिले अपि ब्रह्माण्डे ईदृशं किमपि वस्तु नास्ति यत् विद्यायाः समानतां कुर्यात्।

३—संसारे धनस्य महती प्रतिष्ठा वर्तते। धनं विना मनुष्यस्य निर्वाहः सर्वथा असम्भवः अस्ति। परन्तु धनम् अपि विद्यायाः समानतां कर्तुं न शक्नोति। यतः धनं खलु चौराः चोरयन्ति, लुण्ठकाः लुण्ठन्ति, अग्निः ज्वालयति, जलं वाहयति, दायादाः विभजन्ते, शासकाः हरन्ति, तथा पशवः पक्षिणः कीटकाः च भक्षयन्ति। बहूनि धनानि भूकम्पादिना विनश्यन्ति स्वयं वा कालवशात् जीर्णशीर्णानि भूत्वा अन्ते विनष्टानि भवन्ति।

५—यह शिक्षा की अभिवृद्धि देश के लिये शुभलक्षण है। परन्तु साथ ही यह देखकर महान दुःख भी होता है कि इस समय शिक्षालयों में जो शिक्षा ग्रहण करते हैं उनमें संयम का, सदाचार का और अनुशासनपालन का बड़ा अभाव दिखायी पड़ता है। वे केवल परीक्षा देना, प्रमाण-पत्र की प्राप्ति और उससे जिस किसी प्रकार से अर्थोपार्जन करना ही अपने जीवन का अन्तिम लक्ष्य मानते हैं। वर्तमान शिक्षापद्धति का यह एक महान दोष है। अतः शिक्षाप्रचार के साथ इस महान दोष को दूर करने में भी ध्यान देना परम आवश्यक है। तभी शिक्षा वास्तव में शिक्षा होगी और शिक्षित लोग वास्तव में शिक्षित माने जायेंगे।



२-विद्या

१—जिस वस्तु से मनुष्य का अज्ञान नष्ट होता है तथा ज्ञान होता है उसे विद्या कहते हैं।

२—इस संसार में बहुत-सी उपयोगी वस्तुएँ हैं किन्तु उनमें विद्या ही सर्वश्रेष्ठ उपयोगी वस्तु है। अखिल ब्रह्माण्ड में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो विद्या की समानता करे।

३—संसार में धन की महती प्रतिष्ठा है। धन के बिना मनुष्य का निर्वाह सर्वथा असम्भव है। परन्तु धन भी विद्या की समानता नहीं कर सकता है। क्योंकि धन को चोर चुरा लेते हैं, लुटेरे लूट लेते हैं, अग्नि जला देती है, जल बहा देता है, पट्टीदार बाँट लेते हैं, शासक हरण कर लेते हैं तथा पशु-पक्षी और कीड़े खा जाते हैं। बहुत सा धन भूकम्प आदि से नष्ट हो जाता है, या स्वयं ही कालवश जीर्ण-शीर्ण होकर अन्त में विनष्ट हो जाता है।

एवं प्रकारेण धनिकानां धनस्य सम्बन्धे पदे तदे भीतयः सन्ति। परन्तु विद्याधने एतादृशं किमपि भयं नास्ति। अन्यानि धनानि व्यये क्रियमाणे क्रमशः क्षीणानि भवन्ति परं विद्यायाः भाण्डारं यथा यथा (व्ययीक्रियते) तथा तथा प्रतिदिनं परिवर्द्धते एव।

४—विद्यासमानं भूषणम् अपि संसारे अन्यत् नास्ति। सामान्यतः लोके सुवर्णमयानि रजतमयानि च भूषणानि शोभायाः साधनानि (मन्यन्ते)। अतएव नराः नार्यश्च किरीटेन कुण्डलेन, कङ्कणेन केयूरेण, नूपुरेण मञ्जीरेण, तिलकेन चन्दनेन तथा अन्यैश्च आभूषणैः निज-निजशरीराणि भूषयन्ति। बहवः जनाः शोभायै कण्ठे हारं धारयन्ति, मुखे ताम्बूलं चर्वन्ति, नयनयोः कज्जलं लगयन्ति, मणिबन्धे घटीं बध्नन्ति, विविधाः केशरचनाः कुर्वन्ति तथा सुन्दर-सुन्दराणि वस्त्राणि च परिदधते। परन्तु मनुष्यस्य शोभा यथा विद्यया भवति तथा अन्यसाधनैः न भवति। विद्याभूषणस्य अग्रे अन्यानि भूषणानि निष्प्रभाणि भवन्ति। अतएव महाकविना भर्तृहरिणा (लिखितम्)—

विद्या परं भूषणम्।

५—विद्यायाः गुणाः लाभाः च अगणनीयाः सन्ति। विद्यया एव मनुष्यः विद्वान् भवति, हिताहितं जानीते, उचितानुचिते विचारयति, कर्तव्याकर्तव्ययोश्च निश्चयं करोति। विनयः विवेकः शीलं, सहृदयता, सदाचारः, शिष्टता चेति गुणगणा अपि विद्याप्रभावेण एव मनुष्ये समागच्छन्ति। अनेन कारणेन विद्यावान् जनः यत्रैव गच्छति तत्रैव आदरं लभते तथा पूजितः प्रतिष्ठितः च भवति।

इस प्रकार धनिकों को धन के सम्बन्ध में पग-पग पर भय है। परन्तु विद्याधन में ऐसा कोई भय नहीं है। अन्य धन खर्च करने पर क्रमशः क्षीण हो जाते हैं परन्तु विद्या का भण्डार जैसे-जैसे खर्च किया जाता है वैसे-वैसे प्रति दिन बढ़ता ही जाता है।

४—विद्या के समान भूषण भी संसार में दूसरा नहीं है। सामान्यरूप से संसार में सुवर्णमय और रजतमय भूषण शोभा के साधन माने जाते हैं। अत एव नर और नारी मुकुट से, कुण्डल से, कंकण से, विजायठ से, पायल से, मंजीर से, तिलक से, चन्दन से तथा अन्य आभूषणों से अपने-अपने शरीर को भूषित करते हैं। बहुत लोग शोभा के लिये कण्ठ में हार पहनते हैं, मुँह में पान चबाते हैं, दोनों आँखों में काजल लगाते हैं, कलाई में घड़ी बाँधते हैं, विभिन्न प्रकार से केशों की सजावट करते हैं तथा सुन्दर से सुन्दर वस्त्रों को पहनते हैं। परन्तु मनुष्य की शोभा जैसी विद्या से होती है वैसी अन्य साधनों से नहीं होती है। विद्यारूपी भूषण के आगे अन्य भूषण निस्तेज हो जाते हैं। अत एव महाकवि भर्तृहरि ने लिखा है—

विद्या परं भूषणम्।

५—विद्या के गुण और लाभ अनगिनत हैं। विद्या से ही मनुष्य विद्वान होता है, भलाई-बुराई को जानता है, उचित अनुचित का विचार करता है और कर्तव्याकर्तव्य का निश्चय करता है। विनय, विवेक, शील, सहृदयता, सदाचार और शिष्टता ये गुणसमूह भी विद्या के प्रभाव से ही मनुष्य में आते हैं। इस कारण विद्वान मनुष्य जहाँ भी जाता है वहीं आदर पाता है तथा पूजित और प्रतिष्ठित होता है।

६—अन्यच्च, अद्य जगतीतले यत्किञ्चित् वयं शिवं, सुन्दरं तथा विस्मयकरं विविधं वस्तुजातं पश्यामः तत् सर्वं विद्यायाः एव फलं वर्तते। विद्याबलेन एव मनुष्यैः नानाविधाः आविष्काराः कृताः सन्ति।

७—यदि जगतीतले विद्यायाः प्रकाशः न स्यात् तदा समग्रमपि जगत् अज्ञानान्धकारे निमग्नं जायेत तथा मानवजीवनं पशुजीवनसमानं सम्पद्येत। सफलतायै तथा सम्पूर्णजगति सुखशान्तिसमृद्धये च विद्यायाः प्रसारस्य महती आवश्यकता वर्तते।



३-अस्माकं राष्ट्रभाषा

१—या भाषा राष्ट्रे सर्वाधिकं प्रचलिता भवति तथा यस्यां भाषायां राष्ट्रस्य सर्वाणि राजकार्याणि भवन्ति सा राष्ट्रभाषा (कथ्यते)। एकतायै तथा व्यवहारे सुविधायै एकस्याः राष्ट्रभाषायाः निर्धारणं परमावश्यकं भवति।

२—परतन्त्रतायाः समये अस्माकं देशस्य सर्वाणि राजकार्याणि अंग्रेजीभाषायां भवन्तिस्म। अंग्रेजीभाषा एव तदा राजमान्या भाषा आसीत्। शिक्षायां, समाजे, शासने च तस्याः एवं सर्वत्र प्रधानता आसीत्। परन्तु यस्मात् कालात् अस्माकं देशः स्वतंत्रतां प्राप्तवान् अस्ति तस्मात् समयात् अंग्रेजीभाषायाः स्थाने हिन्दी एव राष्ट्रभाषा घोषिता अस्ति। अतः सम्प्रति अस्माकं देशस्य राष्ट्रभाषा हिन्दी एव वर्तते।

३—अस्माकं देशे अनेकाः प्रादेशिक्यः भाषाः प्राचलन्ति। उत्तरभारते बंगला, मराठी, गुजराती, उड़िया, आसामी,

६—और भी आज संसार में जो कुछ हमलोग कल्याण-कारक, सुन्दर तथा विस्मित करने वाले विविध वस्तु समूह को देखते हैं, वह सब विद्या का फल है। विद्या के बल से ही मनुष्यों के द्वारा नाना प्रकार के खोज किए गये हैं।

७—यदि विश्व में विद्या का प्रकाश न हो, तब सारा विश्व अज्ञानान्धकार में डूब जायेगा तथा मानवजीवन पशुजीवन के समान हो जाये। सफलता के लिए तथा सम्पूर्ण जगत में सुख-शान्ति और समृद्धि के लिए विद्या के प्रसार की महती आवश्यकता है।

३—हमारी राष्ट्रभाषा

१—जो भाषा राष्ट्र में सबसे अधिक प्रचलित होती है तथा जिस भाषा में राष्ट्र के सभी राजकार्य होते हैं वह राष्ट्रभाषा कही जाती है। एकता के लिए तथा व्यवहार में सुविधा के लिए एक राष्ट्रभाषा का निर्धारण परम आवश्यक है।

२—परतन्त्रता के समय हमलोगों के देश के सभी राजकार्य अंग्रेजी भाषा में होते थे। अंग्रेजी भाषा ही तब राजमान्य भाषा थी। शिक्षा में, समाज में और शासन में उसकी ही सभी जगह प्रधानता थी। परन्तु जिस काल से हमारे देश ने स्वतन्त्रता प्राप्त की है उस समय से अंग्रेजी भाषा के स्थान पर हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा घोषित है। अतः इस समय हमलोगों के देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है।

३—हमलोगों के देश में अनेक प्रादेशिक भाषायें प्रचलित हैं। उत्तर भारत में बँगला, मराठी, गुजराती, उड़िया, आसामी,

मैथिली, पंजाबी प्रभृतयः अनेकाः भाषाः प्रचलिताः सन्ति। दक्षिणभारते च तमिल, तेलगू, कन्नड, मलयालम प्रभृतयः अनेकाः भाषाः प्रचलिताः सन्ति। आसु सर्वासु अपि भाषासु हिन्दी सर्वाधिकं प्रचलिता भाषा वर्तते। देशस्य अधिकाः जनाः हिन्दीभाषाम् एव वदन्ति तथा अवगच्छन्ति। येषां मातृभाषा हिन्दी नास्ति ते अपि हिन्दीभाषायाः माध्यमेन साधारणतया स्व-कार्यसञ्चालने समर्थाः भवन्ति। अतएव हिन्दीभाषा राष्ट्रभाषापदे संस्थापिता वर्तते।

४—अस्माकं देशे एका अन्या भाषा 'संस्कृतम्' अपि अस्ति। इयमेव भाषा अस्य देशस्य प्राचीना राष्ट्रभाषा अस्ति। हिन्दी-प्रभृतयः सर्वाः अपि भाषाः अस्याः एव भाषायाः सन्ततयः सन्ति। संस्कृतभाषा अद्यापि इमाः स्वसन्ततीः समानभावेन पालयति पोषयति च। अत एव संस्कृतभाषां प्रति सर्वेषां भारतीयानां हृदये महान् आदर-भावः अस्ति। अनेन कारणेन बहूनां संस्कृतानुरागिणां विचारः आसीत् यत् संस्कृतभाषा एव राष्ट्रभाषापदे समासीना भवेत्। परन्तु हिन्दीभाषा सम्प्रति लोकभाषा अस्ति। संस्कृतापेक्षया हिन्दीभाषायाः प्रचारः सुगमतया भवितुमर्हति। अतः हिन्दीभाषा एव बहूनां सम्मत्या राष्ट्रभाषा-सिंहासने अभिषिक्ता वर्तते तथा संस्कृतभाषा अस्याः निधिभाषारूपेण सम्मानिता वर्तते। हिन्दी-भाषायां यदि नूतनशब्दानां निर्माणस्य आवश्यकता भविष्यति तर्हि ते शब्दाः संस्कृतभाषायाः एव साहाय्येन (निर्मास्यन्ते)। इदमपि (स्वीकृतं) वर्तते यत् हिन्दीभाषायाः राष्ट्रभाषाभवनेन प्रादेशिकभाषाणां समुन्नतौ काचन बाधा न भविष्यति। एवं प्रकारेण स्वमातरं संस्कृतभाषां सम्मानयन्ती तथा स्वभगिनीभिः

मैथिली, पंजाबी इत्यादि अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं। दक्षिण भारत में तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम इत्यादि अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं। इन सभी भाषाओं में हिन्दी सबसे अधिक प्रचलित भाषा है। देश के अधिक लोग हिन्दी भाषा को ही बोलते हैं तथा समझते हैं। जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है वे भी हिन्दी भाषा के माध्यम से साधारणतया अपने कार्य-संचालन में समर्थ होते हैं। अत एव हिन्दी-भाषा राष्ट्र-भाषा के पद पर स्थापित है।

४—हम लोगों के देश में एक दूसरी भाषा संस्कृत भी है। यही भाषा इस देश की प्राचीन राष्ट्रभाषा है। हिन्दी आदि सभी भाषाएँ इसी भाषा की सन्तति हैं। संस्कृत भाषा आज भी अपनी संतानों को समानभाव से पालती और पोषती है। अत एव संस्कृत भाषा के प्रति सभी भारतीयों के हृदय में महान आदरभाव है। इस कारण बहुत से संस्कृतानुरागियों का विचार था कि संस्कृत-भाषा ही राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन हो। परन्तु हिंदीभाषा इस समय लोकभाषा है। संस्कृत की अपेक्षा हिंदीभाषा का प्रचार सुगमता से हो सकता है। अतः हिंदीभाषा ही बहुतों की सम्मति से राष्ट्र-भाषा के सिंहासन पर अभिषिक्त है और संस्कृत-भाषा इसकी निधिभाषा के रूप में सम्मानित है। अर्थात् हिन्दीभाषा में यदि नवीन शब्दों के निर्माण की आवश्यकता होगी तो वे शब्द संस्कृतभाषा की ही सहायता से बनाये जायगे। यह भी स्वीकृत है कि हिंदी-भाषा के राष्ट्रभाषा होने से प्रादेशिक भाषाओं की उन्नति में कोई बाधा नहीं होगी। इस प्रकार अपनी माता संस्कृतभाषा का सम्मान करती हुई तथा अपनी बहन

प्रादेशिकभाषाभिः च स्नेहं संवर्द्धयन्ती हिंदी राष्ट्रभाषापदे सुशोभिता वर्तते ।

५—यद्यपि राष्ट्रभाषा हिंदी घोषिता वर्तते तथापि अस्याः समुन्नतौ व्यवहारे च प्रशानस्य तथा जनतायाश्च यादृशी तत्परता अपेक्ष्यते तादृशी नास्ति। विद्वांसः अपि अस्मात् दोषात् मुक्ताः न सन्ति । बहूनां विदुषां हृदये अद्यापि अंग्रेजीभाषायाः मोहः विराजमानः वर्तते । दक्षिभारतीयाः केचन शिक्षाशास्त्रिणः प्रत्यक्षरूपेण हिन्दीभाषायाः विरोधं कुर्वाणाः सन्ति । अन्ये बहवः उदासीनाः सन्ति। परन्तु अस्माकं कृते इदं शोभनीयं नास्ति। प्रशासनेन, विद्वत्समाजेन, नागरिकैः च तथा प्रयत्नः करणीयः यथा अल्पेन एव कालेन हिन्दीभाषा सर्वाङ्गसम्पन्ना भूत्वा वास्तविकरूपेण राष्ट्रभाषापदं विभूषितं कुर्यात् ।



४-पुस्तकानां रक्षा

१ -ज्ञानस्य यावन्ति साधनानि सन्ति तेषु पुस्तकम् एकं प्रधानं साधनं वर्तते। विद्वांसः स्वेन अनुभवेन यत् ज्ञानं प्राप्नुवन्ति तत् पुस्तकेषु एव सुरक्षितं तिष्ठति। सृष्टिकालात् आरभ्य अद्यावधि संसारे यावन्तः ज्ञानस्य विषयाः सन्ति ते सर्वे पुस्तकेषु एव सुरक्षिताः सन्ति ।

२—यदि संसारे लेखनस्य प्रणाली आविष्कृता न अभविष्यत्, यदि लेखकाः पुस्तकानि न अलेखिष्यन्, यदि (लिखितानि) पुस्तकानि सुरक्षितानि न (अरक्षिष्यन्त) तर्हि ज्ञानस्य प्राप्तिः सर्वथा दुर्लभा अभविष्यत् ।

प्रादेशिक भाषाओं से स्नेह बढ़ाती हुई हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित है।

५—यद्यपि राष्ट्रभाषा हिंदी घोषित है तब भी इसकी उन्नति में और व्यवहार में प्रशासन तथा जनता की जैंसी तत्परता अपेक्षित है वैसी नहीं है। विद्वान लोग भी इस दोष से मुक्त नहीं हैं। बहुत विद्वानों के हृदय में आज भी अंग्रैजी-भाषा का मोह विराजमान है। दक्षिण भारतीय कुछ शिक्षाशास्त्री भी प्रत्यक्षरूप से हिंदीभाषा का विरोध कर रहे हैं। दूसरे बहुत लोग उदासीन हैं। परन्तु हमलोगों के लिए यह शोभनीय नहीं है। प्रशासन, विद्वत्समाज और नागरिकों के द्वारा वैसा प्रयत्न किया जाना चाहिए जिससे थोड़ें ही समय में हिंदी-भाषा सर्वाङ्ग-सम्पन्न होकर वास्तविकरूप से राष्ट्र-भाषा पद को विभूषित करे।

●

४—पुस्तकों की रक्षा

१—ज्ञान के जितने साधन हैं, उनमें पुस्तक एक प्रधान साधन है। विद्वान् अपने अनुभव से जो ज्ञान पाते हैं वह पुस्तकों में ही सुरक्षित रहता है। सृष्टिकाल से लेकर आज तक संसार में जितने ज्ञान के विषय हैं वे सभी पुस्तकों में ही सुरक्षित हैं।

२—यदि संसार में लेखन की प्रणाली अविष्कृत नहीं होती, यदि लेखक पुस्तकों को नही लिखते, यदि लिखित पुस्तकें सुरक्षित नहीं रखी जाती तो ज्ञान की प्राप्ति सर्वथा दुर्लभ होती।

३—यदि रामायणस्य पुस्तकं न अभविष्यत् तर्हि कथं राम-कथायाः अद्य ज्ञानम् अभविष्यत् ? यदि वेदपुस्तकानि सुलभानि न अभविष्यन् तर्हि केन प्रकारेण ऋषीणां ज्ञान-विज्ञानवैभवं (लब्धम्) अभविष्यत् ? अत एव ज्ञानार्जनविषये पुस्तकानां महती उपयोगिता वर्तते ।

४—प्राचीनकाले जनानां स्मृतिशक्तिः धारणशक्तिः च प्रबला भवति स्म । अतः तस्मिन् काले श्रवणपरम्परया अपि ज्ञानं सुलभं भवति स्म । परन्तु अधुना उपर्युक्ते उभे अपि शक्ती शनैः शनैः ह्रासं गते स्तः । अतः साम्प्रतं तु पुस्तकानि विशेषरूपेण हित-कराणि सन्ति ।

५—अत एव पुस्तकानां रक्षायाः विषये पाठकानां ध्यानदानं परमावश्यकं वर्तते । बहवः जनाः पुस्तकानि पठन्ति परन्तु ते तानि सम्यक् न रक्षन्ति । केचन पुस्तकानि मोटयन्ति । केचन पुस्तकानि त्रोटयन्ति । केचन तानि भूमौ पोथयन्ति । केचन पुस्तकेषु एव शिरः निधाय शेरते । केचन पुस्तकेषु एव खाद्यवस्तूनि खादन्ति । केचन पुस्तकेषु एव लवणं मरिच च स्थापयन्ति । केचन पुस्तकेषु अनावश्यकं लिखन्ति । केचन च सुन्दरादपि सुदन्रं पुल्तकम् एकेन एव दिनेन मलिनयन्ति । न केवलम् एतावदेव, अनेके जनाः पुस्त-केभ्यः पत्राणि तथा चित्राणि अपि विदारयन्ति ।

६—इमे सर्वे पुस्तकैः सह (क्रियमाणाः) दुर्व्यवहाराः सन्ति । न च इमे सर्वे व्यवहाराः स्वपुस्तकैः सह एव (विधीयन्ते) प्रत्युत परेषां पुस्तकैः सह अपि । परन्तु इदं सर्वथा अनुचितं वर्तते ।

७—यथा पुस्तकेभ्यः अस्माकं महान् लाभः अस्ति तथैव तेषां सुरक्षायाम् अपि महती सावधानता (वर्तनीया) ।

●

३—यदि रामायण की पुस्तक न होती तो कैसे रामकथा का आज ज्ञान होता ? यदि वेदों की पुस्तकें सुलभ नहीं होती, तो किस प्रकार ऋषियों का ज्ञान-विज्ञान-वैभव प्राप्त होता ? अत एव ज्ञानार्जन के विषय में पुस्तकों की महती उपयोगिता है ।

४—प्राचीन काल में मनुष्यों की स्मृतिशक्ति और धारणशक्ति प्रबल होती थी । अतः उस समय सुनने की परम्परा से भी ज्ञान सुलभ होता था । परन्तु इस समय उपर्युक्त दोनों शक्तियों का धीरे-धीरे ह्रास हो गया है । इसलिए पुस्तकें इस समय तो विशेष रूप से हितकर हैं ।

५—अतः पुस्तकों की रक्षा के विषय में पाठकों को ध्यान देना परम आवश्यक है । बहुत लोग पुस्तकें पढ़ते हैं परन्तु वे उनकी अच्छी तरह रक्षा नहीं करते हैं । कुछ लोग पुस्तकों को मड़ोरते हैं । कुछ लोग पुस्तकों को तोड़ते हैं । कुछ लोग उनको भूमि पर पटक देते हैं । कुछ लोग पुस्तकों पर ही सिर रखकर सोते हैं । कुछ लोग पुस्तकों पर ही खाद्य-वस्तुओं को खाते हैं । लोग पुस्तकों पर नमक और मरिच रखते हैं । कुछ लोग पुस्तकों पर अनावश्यक लिखते हैं और कुछ लोग सुन्दर से भी सुन्दर पुस्तकों को एक ही दिन में मलिन कर देते हैं । केवल इतना ही नहीं, बहुत लोग पुस्तकों से पन्नों को तथा चित्रों को भी फाड़ देते हैं ।

६—ये सभी पुस्तकों के साथ किये जा रहे दुर्व्यवहार हैं । ये सभी व्यवहार अपनी पुस्तकों के साथ ही नहीं किये जाते हैं बल्कि दूसरों की पुस्तकों के साथ भी । परन्तु यह सर्वथा अनुचित है । जैसे पुस्तकों से हम लोगों का महान लाभ है वैसे ही उनकी सुरक्षा में भी बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए ।

●

५—व्यायामः

१—शारीरिकशक्तिवृद्धये यः विविधः श्रमः (क्रियते) सः व्यायामः इति (निगद्यते)।

२—अस्माकं जीवने शारीरिकशक्तेः अपि महती आवश्यकता भवति। यथा जीवनस्य सफलतायै विद्याबलं वा, धनबलं वा, जनबलं वा आवश्यकं भवति तथैव शारीरिकं बलमपि आवश्यकं भवति। यस्य शरीरे बलं नास्ति, यस्य अंगप्रत्यंगानि हृष्टपुष्टानि न भवन्ति सः साधारणमपि कार्यं कर्तुं न शक्नोति। अतः मनुष्यस्य कृते शारीरिक-शक्तिसंचयः अपि एकं परमावश्यकं कार्यं भवति। अस्याः शारीरिकशक्तेः साधनेषु व्यायामः एकं प्रमुखं साधनं वर्तते।

३—व्यायामस्य अनेके प्रकाराः सन्ति। यथा—नियमतः प्रतिदिनं धावनम्, सायं प्रातः नियमितं भ्रमणम्, दण्ड-मुद्गरादीनां चालनम्, उत्थानम्, उपवेशनम्, प्राणायामकरणम्, जले सन्तरणम्, विविधानाम् आसनानाम् अभ्यासः, सूर्य-नमस्कारः, खेलन-कूर्दनादिकं च। एतदतिरिक्तं अन्येऽपि अनेके व्यायामस्य प्रकाराः व्यायामशालासु प्रचलिताः सन्ति।

४—एतेषां नियमपूर्वकम् अनुष्ठानेन अनेके लाभाः भवन्ति। शक्तिसञ्चयः भवति, अंग-प्रत्यंगानि हृष्ट-पुष्टानि भवन्ति, शरीरं सुघटितं जायते, श्रमशक्तिः वर्द्धते, स्वास्थ्यं शोभनं तिष्ठति, आलस्यं नश्यति, शिथिलता अपयाति, स्फूर्तिः सञ्जायते, रोगः अपि झटिति तस्योपरि आक्रमणं न करोति, जरा शीघ्रतया शरीरं न अभिभवति तथा पाचनक्रिया अपि प्रायेण दूषिता न भवति। इमे बहुविधाः लाभाः सन्ति व्यायामकरणस्य।

५—व्यायाम

१—शारीरिक शक्ति वृद्धि के लिए जो विविध श्रम किया जाता है, वह व्यायाम कहलाता है।

१—हम लोगों के जीवन में शारीरिक-शक्ति की भी महान आवश्यकता होती है। जैसे जीवन की सफलता के लिए विद्या का बल, धन का बल या जन का बल आवश्यक होता है, वैसे ही शारीरिक बल की आवश्यकता होती है। जिसके शरीर में बल नहीं है, जिसके अंग-प्रत्यंग हृष्ट-पुष्ट नहीं होते है वह साधारण कार्य भी नहीं कर सकता है। अतः मनुष्य के लिए शारीरिक-शक्ति का संचय भी एक परम आवश्यक कार्य होता है। इस शारीरिक शक्ति के साधनों में व्यायाम एक प्रमुख साधन है।

३—व्यायाम अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे नियम से प्रतिदिन दौड़ना, सायं और प्रातः नियमित रूप से घूमना, दण्ड-मुद्गर आदि चलाना, उठना बैठना, प्राणायाम करना, जल में तैरना, विविध आसनों का अभ्यास, सूर्य-नमस्कार और खेलना-कूदना इत्यादि। इसके अतिरिक्त दूसरे भी व्यायाम के अनेक प्रकार व्यायामशालाओं में प्रचलित हैं।

४—इनका नियमपूर्वक पालन करने से अनेक लाभ होते हैं, शक्तिसंचय होता है, अंग-प्रत्यंग हृष्ट-पुष्ट होते हैं, शरीर गठीला होता है, श्रम की शक्ति बढ़ती है, स्वास्थ्य अच्छा रहता है, आलस्य नष्ट होता है, शिथिलता दूर होती है, स्फूर्ति आती है, रोग भी शीघ्र उसके ऊपर आक्रमण नहीं करता, बुढ़ापा शीघ्रता से शरीर को नहीं दबाती है तथा पाचनक्रिया भी प्रायः दूषित नहीं होती है। ये बहुत से लाभ व्यायाम करने के हैं।

५—व्यायामे न कश्चित् व्ययः वर्तते न च बाह्यसाधनानाम् एव आवश्यकता भवति। यदि शरीरं नीरोगं स्यात् तदा सर्वे जनाः सर्वत्र यत् किञ्चित् व्यायामं कर्तुं शक्नुवन्ति एव। अतः सर्वैः अपि जनैः यथासम्भवं व्यायामद्वारा शारीरिकशक्ति-संवर्द्धनाय प्रयासः (कर्तव्यः)।



६—स्वास्थ्यम्

१—शरीरस्य चित्तस्य च निर्विकारा स्थितिः एव स्वास्थ्यम् इति (कथ्यते)। यदा मनुष्यस्य शरीरे मनसि वा कश्चित् विकारः न भवति तदा मनुष्यः स्वस्थः इति (उच्यते)।

२—मनुष्यजीवने बहूनि वस्तूनि आवश्यकानि भवन्ति। शिक्षा आवश्यकी भवति। धनम् आवश्यकं भवति। गृहम् आवश्यकं भवति तथा परिवारः आवश्यकः भवति। परन्तु एषु सर्वेषु अपि वस्तुषु सर्वापेक्षया आवश्यकं वस्तु स्वास्थ्यं भवति। मनुष्यस्य इदं सर्वोत्तमं धनं वर्तते। यावत् मनुष्यस्य स्वास्थ्यं शोभनं न भवति तावत् सः किमपि अन्यत् कार्यं कर्तुं समर्थः न भवति। विद्याध्ययनं वा, धनोपार्जनं वा, धर्मानुष्ठानं वा, लोक-सेवा वा, परदेशगमनं वा, सर्वमपि कार्यं स्वस्थः एव मनुष्यः कर्तुं शक्नोति। अतएव महाकविना कालिदासेन कुमारसम्भवे (कथितम्)—

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

३—ये मनुष्याः स्वस्थाः न भवन्ति ते स्वार्थं परार्थं वा कार्यं कर्तुं न पारयन्ति। तेषां कृते स्वकीयानि नित्यकर्माणि

५—व्यायाम में कोई खर्च नहीं है और बाह्य-साधनों की आवश्यकता नहीं होती है। यदि शरीर नीरोग हो तो सब लोग सर्वत्र थोड़ा व्यायाम कर सकते हैं। अतः सभी को यथासम्भव व्यायाम द्वारा शारीरिक शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रयास करना चाहिए।



६—स्वास्थ्य

१—शरीर और चित्त की निर्विकार स्थिति ही स्वास्थ्य कहा जाता है। जब मनुष्य के शरीर में अथवा मन में कोई विकार नहीं होता है तब मनुष्य स्वस्थ कहा जाता है।

२—मनुष्य के जीवन में बहुत वस्तुएँ आवश्यक होती हैं। शिक्षा आवश्यक होती है। धन आवश्यक होता है। घर आवश्यक होता है तथा परिवार आवश्यक होता है। परन्तु इन सभी वस्तुओं में सबकी अपेक्षा आवश्यक वस्तु स्वास्थ्य होता है। मनुष्य का यह सर्वोत्तम धन है। जब तक मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता है तब तक वह कुछ भी दूसरा कार्य करने में समर्थ नहीं होता। विद्याध्ययन अथवा धनोपार्जन अथवा .धर्मानुष्ठान अथवा लोकसेवा अथवा परदेश गमन, सभी कार्य स्वस्थ मनुष्य ही कर सकता है। अतएव महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव में कहा है—

शरीर ही धर्म का सर्वप्रथम साधन है

३—जो लोग स्वस्थ नहीं होते हैं वे स्वार्थ अथवा परार्थ कोई भी कार्य नहीं कर सकते हैं। उनके लिए अपने नित्य कर्म

अपि असाध्यानि भवन्ति। स्वास्थ्यहीनानां मनुष्याणां कृते शरीर-धारणम् अपि कष्टकरं भवति। अस्वस्थाः मनुष्याः गृहे सुखसाधनेषु विद्यमानेषु अपि सुखोपभोगं कर्तुं न शक्नुवन्ति। तेषां कृते निखिलानि अपि सुखसाधनानि निरर्थकानि भवन्ति। अतः सुखोपभोगाय अपि स्वास्थ्यस्य महती आवश्यकता अस्ति।

४—अनेन कारणेन सर्वैः अपि सुखाभिलाषिभिः स्त्रीपुरुषैः स्वास्थ्यस्य उपरि पूर्णरूपेण ध्यानं (दातव्यम्)। स्वास्थ्यरक्षायाः ये ये नियमाः स्वास्थ्यपुस्तकेषु लिखिताः सन्ति तेषां सम्यक् प्रकारेण पालनं (कर्तव्यम्)। आहारे विहारे, शयने जागरणे च कालातिक्रमः न (कर्तव्यः)। स्वास्थ्यविरोधिनां वस्तूनां भोजने पाने वा उपभोगः न (विधातव्यः)। शरीरे, मनसि, मस्तिके च अत्यधिकः भारः न (देयः)। प्रतिदिवसं यथाशक्ति व्यायामः (कर्तव्यः)। स्थानस्य, शरीरस्य, वस्त्रादीनां च स्वच्छतायां ध्यानं (दातव्यम्)। एतेषां नियमानां पालनेन स्वास्थ्यं समीचीनं तिष्ठति।



७—समयस्य सदुपयोगः

१—समयस्य समुचिते रूपे उपयोगः एव समयस्य सदुपयोगः (कथ्यते)। समयस्य सदुपयोगः मानवसमाजस्य हितसाधकेषु साधनेषु सर्वप्रमुखं साधनं वर्तते।

२—संसारे बहूनि वस्तूनि बहुमूल्यानि सन्ति परं तेषु सर्वापेक्षया बहुमूल्य वस्तु समयः एव वर्तते। यतः अन्यानि वस्तूनि विनष्टानि अपि पुनः लब्धुं (शक्यन्ते) परन्तु व्यतीतः समयः केनापि उपायेन पुनः लब्धुं न (शक्यते)। विद्या विनष्टा पुनः

भी असाध्य होते हैं। स्वस्थ्यहीन मनुष्यों के लिए शरीर धारण करना भी कष्टकर होता है। अस्वस्थ मनुष्य घर पर सुख साधनों के रहते हुए भी सुखोपभोग नहीं कर सकते हैं। उनके लिए सम्पूर्ण सुखसाधन भी निरर्थक हो जाते हैं। अतः सुखोपभोग के लिए भी स्वास्थ्य की महती आवश्यकता है।

४—इस कारण सभी सुख चाहने वाले स्त्री-पुरुषों को स्वस्थ्य के ऊपर पूर्णरूप से ध्यान देना चाहिए। स्वास्थ्यरक्षा के जो जो नियम स्वास्थ्य को पुस्तकों में लिखे गये हैं उनका अच्छी तरह पालन करना चाहिए। आहार-विहार में और सोने-जागने में समय का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। स्वास्थ्यविरोधी वस्तुओं के भोजन में अथवा पान में उपभोग नहीं करना चाहिए। शरीर मन और मस्तिष्क पर अत्यधिक भार नहीं देना चाहिए। प्रतिदिन यथाशक्ति व्यायाम करना चाहिए। स्थान की, शरीर की और वस्त्रादि की स्वच्छता पर ध्यान देना .चाहिए। इन नियमों का पालन करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है।



७—समय का सदुपयोग

१—समय का समुचितरूप में उपयोग ही समय का सदुपयोग कहा जाता है। समय का सदुपयोग मानव-समाज के हितसाधक साधनों में सर्वप्रमुख साधन है।

२—संसार में बहुत-सी वस्तुएँ बहुमूल्य हैं परन्तु उनमें सबकी अपेक्षा बहुमूल्य वस्तु समय ही है। क्योंकि अन्य वस्तुएँ विनष्ट होने पर भी प्राप्त की जा सकती है किन्तु बीता हुआ समय किसी भी उपाय से फिर नहीं पाया जा सकता है। विद्या

अभ्यासेन लब्धुं (शक्यते) धनं विनष्टं पुनः उपार्जनेन लब्धुं शक्यते, यशः विनष्टं पुनः सत्कर्मणा उपार्जयितुं शक्यते परं विनष्टः समयः सहस्रै रपि प्रयत्नैः दुर्लभः एव ।

३—अतएव समयः सर्वाधिकं बहुमूल्यं वस्तु (मन्यते)। तस्मात् सर्वैः मनुष्यैः तथा प्रयत्नः (कर्तव्यः) यथा एकमपि क्षणं निरर्थकं न स्यात्। विश्रामस्य समयं परित्यज्य दिने वा रात्रौ वा सदैव स्वकर्तव्यपालने समयस्य सदुपयोगः (कर्तव्यः)। समयः स्वल्पः अस्ति परं कर्तव्यानि बहूनि सन्ति। अस्यामपि अवस्थायां ये जनाः समयस्य सदुपयोगं न कुर्वन्ति ते बुद्धिमन्तः अपि मूर्खाः एव मन्यन्ते। ये मनुष्याः एकैकस्य क्षणस्य बहु मूल्यं मन्यन्ते, एकमपि क्षणं वृथा न यापयन्ति, सर्वदैव कार्यकरणे निरताः तिष्ठन्ति ते एव बुद्धिमन्तः सन्ति। एतादृशाः एव जनाः आत्मनः समाजस्य देशस्य च समुन्नतिं कुर्वन्ति गौरवं च वर्द्धयन्ति।

४-एभिः कारणैः समयस्य सदुपयोगकरणं कियत् परमावश्यकं कार्यं वर्तते इति विषये लेशमात्रस्यापि सन्देहस्य अवसरः नास्ति। तथापि दुःखस्य इयं वार्ता वर्तते यत् अस्माकं देशे बहवः जनाः समयस्य महान्तं दुरुपयोगं कुर्वन्ति। भूयांसः जनाः वृथाशयने, वृथाभ्रमणे, व्यर्थकार्यकरणे, निरर्थकवार्तालापे, इतस्ततो वृथा उपवेशने, वृथा कलहे, व्यर्थविवादे च स्वजीवनस्य अधिकतरं भागं वृथा यापयन्ति। न ते स्वार्थमेव साधयन्ति न परार्थमेव। ईदृशाः जनाः स्व-दिनचर्याम् अपि यथासमयं न सम्पादयन्ति, का पुनः वार्ता अन्यकार्याणाम्। ईदृशाः जनाः न केवलं स्वस्य एव

विनष्ट होने पर फिर अभ्यास से आ सकती है, धन विनष्ट होने पर फिर उपार्जन से मिल सकता है, यश विनष्ट होने पर फिर सत्कर्मों से अर्जित किया जा सकता है परन्तु विनष्ट हुआ समय हजारों प्रयत्नों से भी फिर दुर्लभ नहीं है।

३—अत एव समय सबसे अधिक बहुमूल्य वस्तु माना जाता है। इस लिये सभी मनुष्यों को वैसा प्रयत्न करना चाहिए जिससे एक भी क्षण निरर्थक न हो। विश्राम के समय को छोड़ कर दिन में अथवा रात में सर्वदा अपने कर्तव्य का पालन करने में समय का सदुपयोग करना चाहिए। समय थोड़ा है पर कर्तव्य बहुत हैं। इस अवस्था में भी जो लोग समय का सदुपयोग नहीं करते हैं, वे बुद्धिमान होते हुए भी मूर्ख होते हैं। जो लोग एक-एक क्षण को बहुमूल्य मानते हैं, एक भी क्षण बेकार नहीं बिताते हैं, हमेशा ही काम करने में संलग्न रहते हैं वे ही बुद्धिमान हैं। ऐसे ही लोग अपने समाज और देश की उन्नति करते हैं और गौरव बढ़ाते हैं।

४—इन कारणों से समय का सदुपयोग करना कितना परम आवश्यक कार्य है, इस विषय में लेशमात्र भी सन्देह का अवसर नहीं है। तब भी दुःख की यह बात है कि हम लोगों के देश में बहुत लोग समय का महान दुरुपयोग करते हैं। बहुत लोग बेकार सोने में, वृथा घूमने में, व्यर्थ कार्य करने में, निरर्थक वार्तालाप करने में, निरर्थक बात-चीत में, इधर-उधर बेकार बैठने में, वृथा कलह में और व्यर्थ विवाद में अपने जीवन के अधिकतर भाग को बेकार बिता देते हैं। न वे स्वार्थ ही साधते हैं न परार्थ ही। ऐसे मनुष्य अपनी दिनचर्या भी यथासमय नहीं सम्पादित करते हैं, अन्य कार्यों की तो बात ही क्या है!

हानिं कुर्वन्ति प्रत्युत सम्पूर्णस्यापि समाजस्य देशस्य च हानिं कुर्वन्ति ।

५—अस्माकं भारतीयानां कृते अयं राष्ट्रनिर्माणस्य कालः वर्तते । अस्माकं स्कन्धेषु राष्ट्रनिर्माणस्य महान् भारः वर्तते । अस्मिन् समये तु विशेषरूपेण अस्माभिः समयस्य सदुपयोगे ध्यानं (दातव्यं) येन शीघ्रतया राष्ट्रस्य समुन्नतिः स्यात् । अस्मिन् विषये छात्रैः विशेषरूपेण ध्यानं (देयम्) । यतः ते एव भारतस्य भाविनः कर्ण-धाराः तथा भाग्यविधातारः सन्ति ।



८—व्यवहार-ज्ञानम्

१—अन्येन जनेन सह केन प्रकारेण व्यवहारः (कर्तव्यः) एतस्य ज्ञानं व्यवहार-ज्ञानं (कथ्यते) ।

२—मनुष्यः एकः सामाजिकः प्राणी अस्ति । सः एकाकी वस्तुं न शक्नोति । सः समाजे जन्म गृह्णाति, समाजे जीवति, समाजे निवसति तथा समाजे एव मृत्युमपि प्राप्नोति । अतएव जन्मना सहैव तस्य अनेकैः पुरुषैः सह सम्बन्धः भवति ।

३—पुनः मनुष्याणां कृते बहूनि कर्तव्यानि अपि आव-श्यकानि भवन्ति । तेषु कानिचित् वैयक्तिकानि, कानिचित् पारिवारिकाणि, कानिचित् सामाजिकानि, कानिचित् राष्ट्री-याणि तथा कानिचित् अन्यविधानि अपि भवन्ति । अनेन कार-णेन अपि मनुष्यस्य अनेकैः मनुष्यैः सह सम्बन्धस्थापनस्य, अनेकैः मनुष्यैः सह निवासस्य, अनेकैः मनुष्यैः सह वार्तालापस्य तथा अनेकैः मनुष्यैः सह कार्यकरणस्य अनिवार्या आवश्यकता

ऐसे मनुष्य न केवल अपनी ही हानि करते हैं बल्कि सम्पूर्ण समाज और देश की हानि करते हैं।

५—हम भारतीयों के लिये यह राष्ट्रनिर्माण का समय है। हमलोगों के कन्धों पर राष्ट्रनिर्माण का महान भार है। इस समय तो विशेष रूप से हम लोगों को समय के सदुपयोग पर ध्यान देना चाहिए जिससे शीघ्रता से राष्ट्र की उन्नति हो। इस विषय में छात्रों को विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि वे ही भारत के भावी कर्णधार तथा भाग्यविधाता हैं।



८—व्यवहार का ज्ञान

१—दूसरे मनुष्य के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिये, इसका ज्ञान व्यवहार-ज्ञान कहा जाता है।

२—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेले नहीं रह सकता है। वह समाज में जन्म लेता है, समाज में जीता है, समाज में रहता है तथा समाज में ही मरता भी है। अतः जन्म के साथ ही उसका अनेक पुरुषों के साथ सम्बन्ध होता है!

३—फिर मनुष्यों के लिये बहुत से कर्तव्य भी आवश्यक होते हैं। उनमें कुछ व्यक्तिगत, कुछ पारिवारिक, कुछ सामाजिक कुछ राष्ट्रीय तथा कुछ अन्य प्रकार के भी होते हैं। इस कारण से भी मनुष्य को अनेक मनुष्यों के साथ सम्बन्ध रखने की, अनेक मनुष्यों के साथ रहने की तथा अनेक मनुष्यों के साथ काम करने की अनिवार्य आवश्यकता होती है। इस परिस्थिति में किस पुरुष के साथ कहाँ कैसा व्यवहार करना चाहिए इसका,

भवति। अस्यां परिस्थितौ केन पुरुषेण सह कुत्र कीदृशः व्यवहारः (कर्तव्यः) इत्यस्य समुचितं ज्ञानं सर्वेषां मनुष्याणां कृते परमावश्यकं भवति । व्यवहारज्ञानम् एका जीवनोपयोगिनी महती कला अस्ति। अस्यां कलायां ये जनाः कुशलाः भवन्ति ते एव समाजे बुद्धिमन्तः, (गण्यन्ते) समाजस्य नेतृत्वं कुर्वन्ति, इतः विपरीतं ये जनाः व्यवहारज्ञानेन शून्याः भवन्ति ते सकलशास्त्रनिष्णाताः अपि समाजे मूर्खाः (मन्यन्ते) सर्वत्र अनादरं लभन्ते तथा जीवने सर्वेषु अपि कार्येषु असफलाः एव भवन्ति। अतएव समाजे सम्मानाय कार्येषु सफलताप्राप्तये च सर्वैः अपि जनैः व्यावहारिकज्ञानस्य अर्जनाय तदनुकूलम् आचरणाय च प्रयत्नः (कर्तव्यः)।

४—व्यवहारस्य क्षेत्रम् अतीव विस्तृतं वर्तते । अतएव तत्र सफलतायै ज्ञानमपि विस्तृतमेव (अपेक्ष्यते) । तथापि यत् यत् ज्ञानं व्यवहारक्षेत्रे नितान्तम् आवश्यकं भवति तस्य तस्य ज्ञानाय अवश्यं प्रयत्नः (कर्तव्यः)।



६—स्वावलम्बनम्

१—अन्येषाम् अवलम्बनं विहाय स्वशक्त्या निजकार्यसंपादनं स्वावलम्बनं (कथ्यते)। एतस्य एव द्वितीयः पर्यायवाची शब्दः आत्मनिर्भरता अस्ति।

२—आत्मनिर्भरता स्वावलम्बनं वा मनुष्यस्य एकः महान् गुणः अस्ति। स्वावलम्बनं मनुष्यस्य शारीरिकीणां मानसिकीनां

समुचित ज्ञान सभी मनुष्यों के लिए परम आवश्यक होता है। व्यवहार-ज्ञान एक जीवनोपयोगी महान कला है। इस कला में जो लोग कुशल हैं, वे ही समाज में बुद्धिमान गिने जाते हैं, समाज का नेतृत्व करते हैं, सर्वत्र आदर पाते हैं तथा सभी कार्यों में सफलता पाते हैं। इसके विपरीत जो लोग व्यवहार-ज्ञान से शून्य होते हैं वे सम्पूर्ण-शास्त्रों में कुशल होते हुए भी समाज में मूर्ख माने जाते हैं। सर्वत्र अनादर पाते हैं तथा जीवन में सभी कार्यों में असफल ही होते हैं। अतएव समाज में सम्मान के लिए और कार्यों में सफलता प्राप्ति के लिए, सभी मनुष्यों को व्यावहारिक-ज्ञान के अर्जन के लिए और तदनुकूल आचरण के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

४—व्यवहार का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। अत एव उसमें सफलता के लिये विस्तृत ज्ञान अपेक्षित है। फिर भी जो-जो ज्ञान व्यवहारक्षेत्र में नितान्त आवश्यक होता है उसके ज्ञान के लिए अवश्य प्रयत्न करना चाहिये।

□

६—स्वावलम्बन

१—दूसरों का सहारा छोड़कर अपनी शक्ति से अपना कार्य करना स्वावलम्बन कहा जाता है। इसका ही दूसरा पर्यायवाची शब्द आत्मनिर्भरता है।

२—आत्मनिर्भरता अथवा स्वावलम्बन मनुष्य का एक गुण है। स्वावलम्बन मनुष्य की शारीरिक और मानसिक शक्तियों

च शक्तीनां विकासस्य सर्वोत्तमः उपायः अस्ति। स्वावलम्बिनां पुरुषाणां शरीरे स्फूर्तिः आयाति, चिन्तनशक्तिः वर्द्धते, बुद्धेः विकासः भवति, नव-नवाः अनुभवाः जायन्ते तथा आत्मगौरवस्य आनन्द-दायिनी अनुभूतिः भवति।

३—ये मनुष्याः स्वावलम्बिनः भवन्ति, आत्मनिर्भराः भवन्ति, पदे पदे अन्येषां मुखं न अवलोकयन्ति ते एव समाजे आदर्श-पुरुषाः (मन्यन्ते)। एतादृशाः एव पुरुषाः साहसिकाः, सहिष्णवः प्रत्युत्पन्न-मतयः, प्रतिभासम्पन्नाः, कार्यकुशलाः, कर्तव्यपरायणाः च भवन्ति। स्वावलम्बनस्य प्रभावेण निर्धनाः अपि धनवन्तः भवन्ति, निरक्षराः अपि महापण्डिताः जायन्ते, अप्रतिष्ठिताः अपि महतीं प्रतिष्ठां लभन्ते, दुःखिनः अपि महत् सुखं प्राप्नुवन्ति तथा अकिञ्चनाः अपि महान्ति कार्याणि सम्पादयन्ति। एतादृशानां स्वावलम्बिनां पुरुषरत्नानां न केवलं मनुष्यः प्रत्युत ईश्वरोऽपि सहायतां करोति। ईदृशाः एव जनाः जगति सुखपूर्वकं जीवन्ति, सर्वत्र समादरं लभन्ते, सर्वेषां च प्रीति-भाजनानि भवन्ति।

४—इमे सर्वे स्वावलम्बनस्य लाभाः सन्ति। ये मनुष्याः अनेन गुणेन वञ्चिताः भवन्ति ते उपर्युक्तैः लाभैः अपि वञ्चिताः एव तिष्ठन्ति। दुःखस्य अयं विषयो वर्तते यत् अस्माकं समाजे बहवः जनाः अनेन गुणेन रहिताः वर्तन्ते। ते एतस्य आवश्यकताम् अपि न अनुभवन्ति। ते स्वबुद्धया स्वशरीरेण च किमपि कार्यं कर्तुं न इच्छन्ति। ते सर्वदैव परावलम्बनं प्रतीक्षन्ते। अस्माकं देशे बहवः जनाः भाग्यवादिनः अपि सन्ति। ते भाग्यनिर्भराः भूत्वा पुरुषार्थं कर्तुं न समीहन्ते। परन्तु समाजस्य अयं महान् दोषः अस्ति। एतादृशाः परावलम्बिनः मनुष्याः न आत्मनः उन्नतिं कर्तुं पारयन्ति

के विकास का सर्वोत्तम उपाय है। स्वावलम्बी पुरुषों के शरीर में स्फूर्ति आती है, चिन्तन-शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है नये-नये अनुभव होते हैं तथा आत्मगौरव की आनन्ददायिनी अनुभूति होती है।

३—जो लोग स्वावलम्बी होते हैं, आत्मनिर्भर होते हैं, पग-पग पर दूसरों का मुख नहीं देखते हैं वे ही समाज में आदर्श पुरुष माने जाते हैं। ऐसे ही मनुष्य साहसिक, सहिष्णु, प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभा-सम्पन्न, कार्यकुशल और कर्तव्यपरायण होते हैं। स्वावलम्बन के प्रभाव से निर्धन भी धनवान होते हैं, निरक्षर भी महापण्डित हो जाते हैं, अप्रतिष्ठित भी महान प्रतिष्ठा को पाते हैं, दुखी लोग भी महान सुख पाते हैं तथा अकिंचन भी महान कार्य करते हैं। ऐसे स्वावलम्बी पुरुषरत्नों की न केवल मनुष्य बल्कि ईश्वर भी सहायता करता है। ऐसे ही लोग संसार में सुखपूर्वक जीते हैं, सर्वत्र आदर पाते हैं और सबके प्रेम-पात्र होते हैं।

४—ये सभी स्वावलम्बन के लाभ हैं। जो मनुष्य इस गुण से वंचित होते हैं, वे उपरोक्त लाभों से भी वंचित ही रहते हैं। दुःख का यह विषय है कि हमलोगों के समाज में बहुत लोग इस गुण से वञ्चित हैं। वे इसकी आवश्यकता का भी अनुभव नहीं करते हैं। वे अपनी बुद्धि से और अपने शरीर से कोई भी कार्य करना नहीं चाहते हैं। वे सदा परावलम्बन की प्रतीक्षा करते हैं। हमलोगों के देश में बहुत लोग भाग्यवादी भी हैं। वे भाग्य पर निर्भर होकर पुरुषार्थ करना नहीं चाहते। परन्तु समाज का यह महान दोष है। ऐसे परावलम्बी मनुष्य न अपनी

न वा समाजस्य। ईदृशाः पुरुषाः यस्मिन् देशे निवसन्ति सः देशः कदापि समुन्नतः भवितुं न शक्नोति। अद्यावधि सः एव देशः, सा एव च जातिः संसारे समुन्नतिं कृतवती अस्ति यस्यां सर्वे अपि जनाः स्वावलम्बिनः परिश्रमशीलाः च जाताः सन्ति।

५—अनेन कारणेन आत्मनः समाजस्य देशस्य च हिताय सर्वैः अपि मनुष्यैः पूर्णतया स्वावलम्बिभिः (भवितव्यम्)।



१०—अतिथिसत्कारः

१—स्वयं समागतानां समाहूतनां वा मान्यजनानां समुचितः सत्कारः "अतिथिसत्कारः" आतिथ्यम् इति वा (कथ्यते)। सम्प्रति अतिथिसत्कारस्य कृते स्वागतशब्दस्य बाहुल्येन प्रचारः अस्ति।

२—अन्येषां सत्कारकरणं खलु मनुष्याणाम् एकः महान् सामाजिकः गुणः अस्ति। विनयस्य, विवेकस्य, सामाजिकतायाः च इदं प्रधानं चिह्नं भवति। महत्त्वप्राप्तेः च इदं प्रधानं सोपानमस्ति। यः पुरुषः अन्येषां सत्कारं करोति सः सर्वेषां प्रीतिभाजनं भवति। सर्वे जनाः तं प्रशंसन्ति, सर्वे सम्मानयन्ति, सर्वे स्नेहं कुर्वन्ति, सर्वे च तस्य कृतज्ञाः भवन्ति। यथा सः अन्येषां सत्कारं करोति तथैव अन्ये अपि तस्य सत्कारं कुर्वन्ति।

३—धार्मिकदृष्ट्या अपि अतिथिसत्कारस्य महीयसी महत्ता वर्तते। शास्त्रकारैः अतिथिसत्कारस्य पञ्चमहायज्ञेषु गणना कृता वर्तते। अस्माकं शास्त्रेषु गृहागतस्य शत्रोः अपि

उन्नति कर सकते हैं न समाज की। ऐसे लोग जिस देश में रहते हैं वह देश कभी समुन्नत नहीं हो सकता। आज तक उसी देश और उसी जाति ने संसार में उन्नति की है, जिसमें सभी लोग स्वावलम्बी और परिश्रमशील हुए हैं।

५—इस कारण से अपने समाज और देश के हित के लिये सभी मनुष्यों को पूर्णरूप से स्वावलम्बी होना चाहिए।



१०—अतिथि-सत्कार

१—स्वयं आये हुए अथवा बुलाये गये मान्यजनों के समुचित सत्कार को "अतिथि-सत्कार" या आतिथ्य कहते हैं। इस समय अतिथि-सत्कार के लिए स्वागत-शब्द का बहुत प्रचार है।

२—दूसरों का सत्कार करना मनुष्य का एक सामाजिक गुण है। विनम्रता का, विवेक का और समाजिकता का यह प्रधान चिह्न होता है। महत्व प्राप्ति की यह प्रधान सीढ़ी है। जो पुरुष दूसरों का सत्कार करता है वह सबका प्रेम-पात्र बनता है। सभी उसकी प्रशंसा करते हैं, सभी सम्मान करते हैं, सभी स्नेह करते हैं और सभी उसके कृतज्ञ रहते हैं। जैसे वह दूसरों का सत्कार करता है वैसे ही दूसरे भी उसका सत्कार करते हैं।

३—धार्मिक दृष्टि से भी अतिथि-सत्कार की बहुत बड़ी महत्ता है। शास्त्रकारों ने अतिथि-सत्कार की पंचमहायज्ञों में गणना की है। हम लोगों के शास्त्रों में घर आये हुए शत्रु का भी

सत्कारः कर्तव्यकोटौ निहितः अस्ति। का पुनः वार्ता अन्य-पुरुषाणां सत्कारस्य। अतएव उपनिषदि लिखितं वर्तते—

"अतिथिदेवो भव" इति।

४—अस्य अतिथिसत्कारस्य अनेके विधयः सन्तिः। यथा—दूरादेव आयान्तं श्रेष्ठपुरुषं दृष्ट्वा आसनात् उत्थानम्, तस्य समीपे गमनम्, विनयपूर्वकं प्रणामः,, प्रीतिपुरस्सरं भाषणम्, कुशलप्रश्नः, गृहे आनयनम्, समुचिते आसने उपवेशनम्, भोजनशयनादीनां सुव्यवस्था, व्यजनादिना श्रमापनयनम्, आवश्यक-सेवायै पुनः पुनः पृच्छा, समीपे अवस्थानम्, स्वकार्यक्रमाणां परित्यागः सङ्कोचो वा, मधुराः अलापाः, आगमनाय प्रसन्नतायाः सूचनम्, अधिकनिवासाय आग्रहः, गमनकाले किञ्चिद्दूरं यावत् अनुगमनम् पुनः दर्शनदानाय अनुरोधः, तथा सस्नेहं विसर्जनं च।

५—अयं सत्कारविधिः दूरात् समागतानां परपुरुषाणां वर्तते। परं मातापितृप्रभृतयः ये गुरुजनाः ज्येष्ठकनिष्ठाः भ्रातरः, ग्राम वासिनः वा भद्रपुरुषाः सर्वदैव समीपे निवसन्ति तेषामपि यथोचितैः प्रणामाशीर्वादैः, विनयपूर्वकेण व्यवहारेण, कुशलप्रश्नेन, आसनादिना च सत्कारः विधातव्यः। एवमेव वयसा कनिष्ठानां, भृत्यानां, क्षुद्रपुरुषाणां च प्रेमालापेन, कुशलप्रश्नेन, आसनप्रदानेन, भोजनपानादिना, सम्मानदानेन च सत्कारः कर्तव्यः।

६—समष्टिरूपेण अस्माकं देशः अतिथिसत्कारे अतीव प्रसिद्धः अस्ति। तथापि व्यक्तिगतरूपेण बहवः जनाः अतिथीनां सत्कारकरणे नितराम् उदासीनाः भवन्ति। बहवस्तु कस्यापि आगमनस्य

सत्कार कर्तव्य की कोटि में रखा गया है। फिर दूसरे पुरुषों के सत्कार की बात ही क्या ? अत एव उपनिषद् में लिखा है --

अतिथि को देवता समझना चाहिए।

४—इस अतिथि-सत्कार की अनेक विधियाँ हैं। जैसे—दूर से ही आते हुए श्रेष्ठ-पुरुष को देखकर आसन से उठ जाना, उसके समीप जाना, विनय-पूर्वक प्रणाम करना, प्रेम-पूर्वक बोलना, कुशल पूछना, घर में लाना, उचित आसन पर बैठाना, भोजन-शयनादि की सुव्य-वस्था करना, पंखे आदि से थकावट दूर करना, आवश्यक सेवा के लिए बार-बार पूछना, पास में रहना, अपने कार्यक्रमों को छोड़ना अथवा संक्षेप करना, मीठी बातचीत करना, आने की प्रसन्नता को सूचित करना, अधिक रहने के लिए आग्रह करना, जाते समय कुछ दूर तक पीछे-पीछे जाना, फिर दर्शन देने के लिए अनुरोध करना तथा स्नेहपूर्वक विदाई करना।

५—यह सत्कारविधि दूर सेआये हुए दूसरे लोगों की है। परन्तु माता-पिता आदि जो गुरुजन हैं, बड़े-छोटे भाई, ग्रामवासी या भद्रपुरुष हमेशा ही समीप में रहते हैं उनका भी यथोचित प्रणाम और आशीर्वादों से, नियम पूर्वक व्यवहार से, कुशल पूछने से और आसन आदि से सत्कार करना चाहिए। इसी तरह अवस्था से छोटों का, नौकरों का और छोटे पुरुषों का प्रेमालाप से, कुशल-प्रश्न से, आसन प्रदान से, और भोजन-पानादि से सम्मान देकर सत्कार करना चाहिए।

६—समष्टिरूप से हमलोगों का देश अतिथिसत्कार में बहुत ही प्रसिद्ध है। तो भी व्यक्तिगतरूप से बहुत लोग अतिथि के सत्कार में एकदम उदासीन होते हैं। बहुत लोग तो किसी के

समाचारमपि श्रुत्वा दुःखिताः भवन्ति। ते व्ययभयात् इतस्ततः निलीयन्ते अन्यत्र वा गच्छन्ति। ईदृशाः जनाः मुखेन मधुरं वचनमपि न वदन्ति। किं पुनः (वक्तव्यं) भोजनपानादिविषये ? परन्तु ईदृशः व्यवहारः अस्माकं कृते धर्मविरुद्धः, संस्कृतिविरुद्धः, परम्पराविरुद्धः च अस्ति। अस्याः पवित्र-परम्परायाः पालनाय सर्वैः अपि ध्यानं (दातव्यम्)।



११—नम्रता

१—विनयः नम्रता (कथ्यते)। नम्रता एकः मनुष्याणां महान् गुणः अस्ति। गुणेभ्यः मनुष्याः महत्त्वं प्राप्नुवन्ति, सर्वत्र आदरं लभन्ते, सर्वेषां प्रीतिभाजनानि च भवन्ति तेषु नम्रतायाः महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते।

२—येषु पुरुषेषु अयं गुणः भवति तेषाम् उपरि ईश्वरस्य महती कृपा मन्तव्या। नम्रता हि मनुष्याणां भाविनः महत्त्वस्य परिचयं ददाति। ये पुरुषाः यावदेव नम्राः भवन्ति तावदेव समाजे प्रतिष्ठां प्राप्नुवन्ति। विनम्रस्वभावाणां पुरुषाणां उपरि सर्वे जनाः स्नेहं कुर्वन्ति। विनयवन्तः मनुष्याः यत्रैव गच्छन्ति तत्रैव स्वकीयेन विनयपूर्णेन व्यवहारेण सर्वान् वशीकुर्वन्ति। ते कठोरतरम् अपि हृदयं मृदुलतरं कुर्वन्ति, प्रतिकूलान् अपि जनान्

□

भी आगमन के समाचार को सुनकर दुःखित होते हैं! वे खर्च के भय से इधर-उधर छिप जाते हैं या अन्यत्र चले जाते हैं। ऐसे लोग मुख से मधुर वचन भी नहीं बोलते हैं भोजन पानादि के विषय में फिर कहना ही क्या। परन्तु ऐसा व्यवहार हमलोगों के लिए धर्म-विरुद्ध, संस्कृति-विरुद्ध और परम्परा विरुद्ध है। इस पवित्र परम्परा के पालन के लिए सभी को ध्यान देना चाहिए।



११—नम्रता

१—विनय को नम्रता कहते हैं। नम्रता एक मनुष्यों का महान गुण है। जिन गुणों से मनुष्य महत्त्व पाते हैं, सर्वत्र आदर पाते हैं, सबके प्रेम-पात्र होते हैं उनमें नम्रता का महत्वपूर्ण स्थान है।

२—जिन पुरुषों में यह गुण होता है उनके ऊपर ईश्वर की महती कृपा माननी चाहिए। नम्रता ही मनुष्यों के भावी महत्त्व का परिचय देती हैं। जो पुरुष जब तक नम्र होते हैं तभीतक समाज में वे प्रतिष्ठा पाते हैं। विनम्र स्वभाव वाले पुरुषों के ऊपर सभी लोग स्नेह करते हैं। विनय युक्त मनुष्य जहाँ ही जाते हैं वही अपने विनयपूर्ण व्यवहार से सबको वश में कर लेते हैं। वे कठोर हृदय को कोमल बना लेते हैं, प्रतिकूल लोगों को भी

अनुकूलान् विदधति, विपक्षिणोऽपि स्वपक्षे आनयन्ति तथा नीरसेऽपि हृदये रसधाराः प्रवाहयन्ति ।

३—नम्रतायाः विपरीतः यः दोषः वर्तते सः उद्दण्डता इति (कथ्यते) । बहवः जनाः स्वभावतः उद्दण्डाः भवन्ति । तेषु नम्रतायाः स्पर्शमात्रमपि न भवति । तेषां गमनम् आगमनम् प्रश्नः उत्तरम्, हासः, परिहासः, वार्ता, विनोदः, सेवा-सत्कारः, भोजनं पानं चेति सर्वमपि कार्यम् उद्दण्डतापूर्णं विनयविहीनम् असभ्यतापूर्णं च भवति । एतादृशेषु जनेषु केऽपि जनाः स्नेहं न कुर्वन्ति । एतादृशाः उद्दण्डस्वभावाः जनाः यत्रैव गच्छन्ति तत्रैव अप्रियाः भवन्ति । एते आत्मनः स्वभावदोषेण मित्राणि अपि शत्रुतां नयन्ति, अनुकूलान् अपि प्रतिकूलान् कुर्वते, शांतमपि जनं कुपितं कुर्वन्ति, सुसिद्धमपि कार्यं क्षणमात्रेण नाशयन्ति । उद्दण्डतया कुत्रापि ते सफलाः न भवन्ति । पदे-पदे च विवदमानाः कलहायमानाश्च नाविधानि सङ्कटानि आपदश्च आवाहयन्ति ।

४—अयम् एव नम्रतायाः उद्दण्डतायाः च भेदः अस्ति । अतः ये जनाः आत्मनः महत्त्वं समीहन्ते, सर्वत्र सफलतां कामयन्ते, समाजे समादरम् अभिलषन्ति, सर्वेषां च स्नेहभाजनानि भवितुं वाञ्छन्ति तैः उद्दण्डताम् अशिष्टतां च परित्यज्य सर्वैः सह विनयपूर्वकः व्यवहारः (विधातव्यः) । बहवः जनाः आत्मनः विद्यामदेन वा, रूपमदेन वा कुलमदेन वा अधिकारमदेन वा मत्ताः सन्तः माननीयैः अपि जनैः सह सम्मानपूर्णं विनयपूर्णं च व्यवहारं न कुर्वन्ति । ते अन्यैः सह विनयपूर्वकं व्यवहारकरणे आत्मनः प्रतिष्ठायाः हानिं मन्यन्ते ।

अनुकूल कर लेते हैं, विरोधियों को भी पक्ष में कर लेते हैं तथा नीरस हृदय में भी रस की धारा प्रवाहित कर देते हैं।

३—नम्रता के विपरीत जो दोष है उसे उद्दण्डता कहते हैं बहुत लोग स्वभाव से ही उद्दण्ड होते हैं। उनमें नम्रता का स्पर्श मात्र भी नहीं होता है। उन लोगों का जाना-आना, प्रश्न-उत्तर, हास-परिहास, वार्ता-विनोद, सेवा-सत्कार, और भोजन पान सभी कार्य उद्दण्डतापूर्ण, विनयविहीन, और असभ्यतापूर्ण होता है। इन लोगों पर कोई भी स्नेह नहीं करते हैं। ऐसे उद्दण्डस्वभाव वाले लोग जहाँ ही जाते हैं वहाँ ही अप्रिय होते हैं। ये अपने स्वभाव के दोष से मित्रों को भी शत्रु बनाते हैं, अनुकूलों को भी प्रतिकूल करते हैं, शान्त पुरुष को भी क्रोधित करते हैं, सुसिद्ध कार्य को भी क्षणमात्र में नष्ट कर देते हैं। उद्दण्डता से कहीं भी वे सफल नहीं होते हैं। पग-पग पर झगड़ते हुए और कलह करते हुए नाना प्रकार के संकट और आपत्तियों को बुलाते हैं।

४—यही नम्रता और उद्दण्डता का भेद है। इसलिए जो लोग अपना महत्त्व चाहते हैं, सर्वत्र सफलता चाहते हैं, समाज में समादर की अभिलाषा करते हैं और सबके स्नेहभाजन होना चाहते हैं, उन्हें उद्दण्डता और अशिष्टता छोड़कर सबके साथ विनयपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। बहुत लोग अपने विद्यामद से या रूपमद से या धनमद से, या कुलमद से या अधिकारमद से मतवाले बने हुए माननीयजनों के साथ सम्मानपूर्ण और विनयपूर्ण व्यवहार नहीं करते हैं। वे दूसरों के साथ विनयपूर्वक व्यवहार करने में अपनी प्रतिष्ठा की हानि मानते हैं।

परन्तु अयं विचारः विवेकपूर्णः नास्ति। विनयेन एव मनुष्याणां प्रतिष्ठायाः वृद्धिर्भवति न तु गर्वेण। अतः यस्य यावती अधिका प्रतिष्ठा स्यात् तेन तावान् एव विनयपूर्णः व्यवहारः (कर्तव्यः)।

५—वर्तमानसमये बालकेषु, युवकेषु, छात्रेषु च नम्रतायाः अभावः (दृश्यते)। ते गुरुजनैः सह अपि अविनयपूर्णान् अशिष्टान् च व्यवहारान् कुर्वन्तः (विलोक्यन्ते)। परन्तु अयं स्वभावः तेषां कृते हितकरः नास्ति। अतः तैः सर्वैः अपि जनैः विशेषतः च युवकैः आत्मनः एव हिताय औद्धत्यम् अविनयम् अशिष्टतां च विहाय लघुभिः सह, समानैः सह, गुरुजनैः च सह यथासंभवं विनम्रतया एव व्यवहारः (कर्तव्यः)।



१२-सदाचार पालनं

१—सत् आचरणं सदाचारः इति (कथ्यते)! गुरुजनानां सेवा, श्रेष्ठजनानां समादरः सत्यवादिता, सरलता, निष्कपटः व्यवहारः, सत्पुरुषाणां संगतिः, परधने परस्त्रीषु च अस्पृहा, इन्द्रियाणां निग्रहः, शीलं, सुजनता चेत्यादिगुणानां सदाचारे गणना भवति। एतेषां पालनं सदाचारपालनं (निगद्यते)।

२—मनुष्यस्य उन्नतिसाधकेषु गुणेषु सदाचारस्य सर्वोत्कृष्टं स्थानं वर्तते। ये जनाः गुरुजनान् सेवन्ते, श्रेष्ठजनान् सत्कुर्वन्ति, माननीयान् मानयन्ति, मातुः पितुश्च आज्ञायाः पालनं कुर्वन्ति, सदा सत्यं वदन्ति, परेषां वञ्चनां न कुर्वन्ति, परधनं न समीहन्ते, परस्त्रियः न कामयन्ते, सत्पुरुषाणां संगतिं कुर्वन्ति, इन्द्रियाणि वशे रक्षन्ति

परन्तु यह विचार विवेकपूर्ण नहीं है। विनम्रता से ही मनुष्यों की प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है गर्व से नहीं। अत एव जिसकी जितनी अधिक प्रतिष्ठा हो, उसे उतना ही विनयपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

५—वर्तमान समय में बालकों, युवकों और छात्रों में नम्रता का अभाव दिखायी पड़ता है। वे गुरुजनों के साथ भी अविनयपूर्ण और अशिष्ट व्यवहार करते हुए देखे जाते हैं। परन्तु यह स्वभाव उन लोगों के लिये हितकर नहीं है। अतः उन सभी लोगों और विशेषकर युवकों को अपने ही हित के लिये उद्दण्डता, अविनय और अशिष्टता को छोड़ कर छोटों के साथ, समवयस्कों के साथ और गुरुजनों के साथ यथा-सम्भव विनम्रता से ही व्यवहार करना चाहिए।



१२—सदाचार का पालन

१—अच्छे आचरण को सदाचार कहते हैं। गुरुजनों की सेवा, श्रेष्ठजनों का समादर, सत्य बोलना, सरलता, निष्कपट-व्यवहार, अच्छे पुरुषों की संगति, दूसरों के धन में और दूसरों की स्त्रियों में इच्छा न रखना, इन्द्रियों का निग्रह, शील और सुजनता इत्यादि गुणों की सदाचार में गणना होती है इनका पालन सदाचार पालन कहा जाता है।

२—मनुष्य के उन्नतिसाधक गुणों में सदाचार का सर्वोत्कृष्ट स्थान है। जो लोग गुरुजनों की सेवा करते हैं, श्रेष्ठजनों का सत्कार करते हैं, माननीयों को मानते हैं, माता पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, सदा सत्य बोलते हैं, दूसरों को ठगते नहीं है, दूसरे के धन को नही चाहते हैं, पर स्त्रियों की कामना नहीं करते हैं, सत्पुरुषों की सङ्गति करते हैं, इन्द्रियों को वश में रखते हैं

तथा सङ्कटे अपि सन्मार्गं न परित्यजन्ति तेषामेव जीवनं श्रेष्ठं, वरिष्ठं, सुखमयं, शान्तिमयं चं भवति । एतादृशानां सदाचारपरायणानां समाजे सर्वत्र समादरः भवति । ते यत्रैव गच्छन्ति तत्रैव सत्कारं पूजां प्रतिष्ठां सर्वोत्तमं च पदं प्राप्नुवन्ति । ईदृशाः पुरुषाः लोके परलोके वा, मित्रगृहे वा, स्वदेशे परदेशे वा सर्वत्र निर्भयाः निरापदाश्च विचरन्ति ।

३—इतो विपरीतं ये जनाः सदाचारविरुद्धम् आचरन्ति, गुरुजनानां सेवां न कुर्वन्ति, श्रेष्ठजनानां समादरं न कुर्वन्ति, पित्रोः आज्ञायाः उल्लंघनं कुर्वन्ति, सदा असत्यं वदन्ति, परजनान् वञ्चयन्ति, परधने परस्त्रीषु-च लोलुपाः भवन्ति, दुर्जनानां संगतिं कुर्वन्ति, कुमार्गे चलन्ति, सन्मार्गं च परित्यजन्ति तेषां जीवनं सर्वथा गर्हितं अपमानितं सुखशान्ति-रहितं च भवति । ईदृशानां पुरुषाणां न लोके सद्गतिः भवति न परलोके । ते इतोऽपि भ्रष्टाः भवन्ति ततोऽपि भ्रष्टाः भवन्ति ।

४—महतः दुःखस्य अयं विषयः वर्तते यत् सदाचारप्रधाने अस्माकं देशे अपि सम्प्रति सदाचारपालने महती शिथिलता आगता वर्तते । सर्वत्र दुराचारस्य एव दृश्यं (दृश्यते) । चौर्यस्य, लुण्ठनस्य, हिंसायाः, वञ्चनायाः, व्यभिचारस्य, भ्रष्टाचारस्य च सर्वत्र साम्राज्यं वर्तते । समाजे सदाचारसंरक्षणार्थं दुराचारस्य च निरोधार्थं ये ये विभागाः प्रशासनेन नियतीकृताः सन्ति तत्रापि भ्रष्टाचारस्य न्यूनता नास्ति । इदमेव कारणं वर्तते यत् साम्प्रतिकः भारतीयसमाजः नितान्तं सङ्कटावस्थायां पतितः वर्तते । सुखं शान्तिः वा समाजात् सर्वथा दूरं पलायिता अस्ति ।

तथा संकट में भी सन्मार्ग को नहीं छोड़ते हैं, उन लोगों का ही जीवन श्रेष्ठ, वरिष्ठ, सुखमय और शान्तिमय होता है। ऐसे सदाचार में निरत रहने वालों का समाज में सर्वत्र आदर होता है। वे जहाँ भी जाते हैं, वहीं सत्कार, पूजा प्रतिष्ठा और सर्वोत्तम पद पाते हैं। ऐसे पुरुष संसार में अथवा परलोक में या मित्र के घर पर, स्वदेश या परदेश में सर्वत्र निर्भय और आपत्ति-रहित होकर विचरण करते हैं।

३—इससे विपरीत जो लोग सदाचार विरुद्ध आचरण करते हैं, गुरुजनों की सेवा नहीं करते हैं, श्रेष्ठजनों का आदर नहीं करते हैं, माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, सदा झूठ बोलते हैं, दूसरों को ठगते हैं, परधन में और परस्त्री में लालची होते हैं, दुर्जनों की सङ्गति करते हैं, कुमार्ग पर चलते हैं और सन्मार्ग को छोड़ देते हैं, उन लोगों का जीवन सर्वथा निन्दित, अपमानित और सुख-शान्ति से रहित होता है। ऐसे पुरुष की न लोक में सद्‌गति होती है न परलोक में। वे इधर से भी भ्रष्ट होते हैं और उधर से भी भ्रष्ठ होते हैं।

४—महान दुःख का विषय है कि सदाचार प्रधान हम लोगों के देश में भी इस समय सदाचार के पालन में महान शिथिलता आ गई है। सर्वत्र दुराचार का ही दृश्य दिखाई देता है। चोरी, लूट, हिंसा, ठगी, व्यभिचार और भ्रष्टाचार का सर्वत्र साम्राज्य है। समाज में सदाचार के संरक्षण के लिये और दुराचार के निरोध के लिये जो-जो विभाग प्रशासन के द्वारा निश्चित किये गये हैं, उसमें भी भ्रष्टाचार की कमी नहीं हैं। यही कारण है कि इस समय का भारतीय समाज घोर संकट की अवस्था में गिर गया है। सुख या शान्ति समाज से सर्वथा दूर भाग गई है। इस परिस्थिति में समाज में सदाचार के नियमों की पुनः स्थापना

अस्यां परिस्थितौ समाजे सदाचारस्य नियमानां पुनः प्रतिष्ठापनस्य महती आवश्यकता अस्ति। यावत् देशस्य जने जने सदाचारपालनं प्रति गरीयसी निष्ठा न भविष्यति तावत् देशस्य केनापि उपायेन वास्तविकी समुन्नतिः न भविष्यति। अतः प्रशासनस्य, सामाजिकपुरुषाणां जननायकानां च इदं सर्वापेक्षया प्रधानं कर्तव्यं वर्तते यत् पुनरपि समाजे सदाचारप्रतिष्ठापनाय ते यथाशक्ति प्रयत्नं कुर्वन्तु तथा स्वयं च सदाचारान् पालयन्तु इति।



१३ - स्वच्छता

१—मलिनतायाः अभावः स्वच्छता इति (कथ्यते)। इयं च स्वच्छता द्विविधा भवति। एका बाह्य-स्वच्छता, द्वितीया आभ्यन्तर-स्वच्छता। स्थानस्य स्वच्छता, शरीरस्य स्वच्छता, वस्त्रस्य स्वच्छता, कूप-तडागादीनां स्वच्छता तथा अन्येषां व्यावहारिक-वस्तूनां स्वच्छता बाह्यस्वच्छता (कथ्यते)। मनसि च रागद्वेषादीनां विकाराणाम् अभावः आभ्यन्तरस्वच्छता (कथ्यते)।

२—जीवने स्वच्छतायाः अनेकदृष्टिभिः महती उपयोगिता वर्तते, महती आवश्कता वर्तते। सर्वप्रथमं स्वास्थ्यरक्षायाः एव कृते स्वच्छतायाः महती आवश्यकता भवति। येषां मनुष्याणां स्थानं शरीरं वस्त्रादिकं वा स्वच्छं न भवति तेषां स्वास्थ्यं कथमपि शोभनं न तिष्ठति। ईदृशाः जनाः प्रायेण स्वास्थ्यहीनाः रोगिणः च तिष्ठन्ति। एतद्विपरीतं ये जनाः स्वच्छे गृहे निवसन्ति, स्वच्छं शरीरं रक्षन्ति, स्वच्छानि वस्त्राणि धारयन्ति, स्वच्छेषु पात्रेषु

की महान आवश्यकता है। जब तक देश के जन-जन में सदाचार-पालन के प्रति महती निष्ठा नहीं होगी तब तक देश की किसी भी उपाय से वास्तविक उन्नति नहीं होगी। अतः प्रशासन का, सामाजिक -पुरुषों का, और जन-नायकों का यह सबकी अपेक्षा प्रधान कर्तव्य है कि फिर से समाज में सदाचार के प्रतिष्ठापन के लिए वे यथाशक्ति प्रयत्न करें तथा स्वयं सदाचार का पालन करें।



१३—स्वच्छता

१—गन्दगी के अभाव को स्वच्छता कहते हैं। यह स्वच्छता दो प्रकार की होती है। एक बाह्य-स्वच्छता और दूसरी भीतरी स्वच्छता। स्थान की स्वच्छता, शरीर की स्वच्छता, वस्त्र की स्वच्छता, कुएँ, तालाब आदि की स्वच्छता तथा अन्य व्यावहारिक-वस्तुओं की स्वच्छता बाह्य-स्वच्छता है। मन में राग-द्वेष आदि के विकारों का अभाव, आभ्यन्तर-स्वच्छता कही जाती है।

२—जीवन में स्वच्छता की अनेक दृष्टियों से महती उपयोगिता है, महती आवश्यकता है। सर्वप्रथम स्वास्थ्य-रक्षा के ही लिये स्वच्छता की महान आवश्यकता होती है। जिन मनुष्यों का स्थान, शरीर या वस्त्र आदि स्वच्छ नहीं होता है, उनका स्वास्थ्य किसी तरह भी अच्छा नहीं रहता है। ऐसे मनुष्य प्रायः स्वास्थ्यहीन और रोगी रहते हैं। इसके विपरीत जो लोग स्वच्छ घर में रहते हैं, शरीर को स्वच्छ रखते हैं, स्वच्छ

भोजनं कुर्वन्ति, स्वच्छं जलं पिबन्ति स्वच्छानि खाद्यवस्तूनि भुञ्जन्ते तथा सर्वाणि व्यवहारोपयोगीनि वस्तूनि स्वाच्छानि सुपरिष्कृतानि च रक्षन्ति ते प्रायेण सर्वदा नीरोगाः प्रसन्नमनसश्च तिष्ठन्ति ।

३—सभ्यतायाः अपि दृष्टया स्वच्छता नितान्तम् आवश्यकं वस्तु वर्तते । येषां निवासस्थानं स्वच्छं न भवति, येषां शरीरं स्वच्छं न भवति, ये स्वच्छवस्त्राणि न धारयन्ति, तेषां गणना सभ्यसमाजे न जायते । एतादृशानां जनानां समीपे न तु सभ्यजनाः गच्छन्ति न च ते एव सभ्यसमाजे गन्तुं साहसं कुर्वन्ति । एवम्भूताः मलिनाः मलिन-वस्त्रधारिणश्च जनाः सभा-सम्मेलनेभ्यः भयभीताः भूत्वा दूरे एव तिष्ठन्ति । परं ये स्वच्छशरीराः स्वच्छवस्त्र-धारिणः च जनाः भवन्ति तेषां सर्वत्र अप्रतिहतः प्रवेशः भवति । ते सर्वत्र सभ्यसमाजे सादरम् (आहूयन्ते), सादरम् (उपवेश्यन्ते) तथा सादरं (सत्क्रियन्ते) ।

४—एतस्याः वाह्यस्वच्छतायाः मानसिकप्रसन्नतायाः उपरि अपि महान् प्रभावः भवति । स्थानं, शरीरं, वस्त्रादिकं वा यदा स्वच्छं, समुज्ज्वलं सुपरिष्कृतं च भवति तदैव मनसि अपि प्रसन्नता भवति ।

५—इमे सर्वे स्वच्छतायाः गुणाः सन्ति, अस्वच्छतायाः च दोषाः सन्ति । अतः ये नराः नार्यः च स्वस्थाः भत्वा जीवितुं समीहन्ते समाजे च समादरं लब्धुं कामयन्ते तैः पूर्णरूपेण वाह्य-स्वच्छतायाः आभ्यन्तरस्वच्छतायाः च उपरि पूर्णरूपेण ध्यानं (दातव्यम्) ।

□

वस्त्र धारण करते हैं, स्वच्छपात्रों में भोजन करते हैं. स्वच्छ जल पीते हैं, स्वच्छ-खाद्य-वस्तुओं को खाते हैं, तथा सभी व्यवहारोपयोगी वस्तुओं को स्वच्छ और सुपरिष्कृत रखते हैं, वे प्रायः सर्वदा नीरोग और प्रसन्नचित्त रहते हैं।

३—सभ्यता की दृष्टि से भी स्वच्छता नितान्त आवश्यक वस्तु है। जिनका निवास स्थान स्वच्छ नहीं होता है, जिनका शरीर स्वच्छ नहीं होता है, जो स्वच्छ-वस्त्रों को धारण नहीं करते हैं, उनकी गणना सभ्यसमाज में नहीं होती है। ऐसे मनुष्यों के पास न तो सभ्यजन जाते हैं और न वे ही सभ्य समाज में जाने का साहस करते हैं। ऐसे गन्दे और मलिन-वस्त्रधारी लोग सभा सम्मेलनों से भयभीत होकर दूर ही रहते हैं। परन्तु जो स्वच्छ शरीर वाले और स्वच्छवस्त्र धारण करने वाले होते हैं उनका सर्वत्र बिना रोक-टोक के प्रवेश होता है। वे सर्वत्र सभ्य-समाज में आदरपूर्वक बुलाये जाते हैं, आदरपूर्वक बैठाये जाते हैं तथा आदरपूर्वक सत्कार पाते हैं।

४—इस बाह्य स्वच्छता का मानसिक प्रसन्नता के ऊपर भी महान प्रभाव पड़ता है। स्थान शरीर या वस्त्र आदि जब स्वच्छ, उज्ज्वल और सुपरिष्कृत होता है तभी मन में भी प्रसन्नता होती है।

५—ये सभी स्वच्छता के गुण हैं, और अस्वच्छता के दोष हैं : इसलिए जो पुरुष और महिलायें स्वस्थ होकर जीना चाहते हैं और समाज में आदर पाना चाहते हैं उन्हें पूर्णरूप से बाह्यस्वच्छता और भीतरी स्वच्छता के ऊपर ध्यान देना चाहिए।



१४—परिश्रमः

१—आलस्यं विहाय निरन्तरं कार्यपरायणता परिश्रमः इति (कथ्यते)।

२—मानवजीवनस्य सफलतायै ये ये गुणाः आवश्यकाः भवन्ति तेषु परिश्रमस्य अतीव महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। ये मनुष्याः आलस्यं परित्यज्य दिवानिशं परिश्रमं कुर्वन्ति ते एव स्वकीयं जीवनं सफलं कर्तुं शक्नुवन्ति। परिश्रमं विना कस्यापि कार्यस्य सिद्धिः न भवितुं शक्नोति। विद्या, बलं, धनं, कीर्तिः वा सर्वम् अपि परिश्रमेण एव लब्धुं (शक्यते)।

३—विद्यार्थिनः अपि यदा सम्यक् प्रकारेण परिश्रमं कुर्वन्ति तदैव ते प्रतिवर्षं परीक्षायां समुत्तीर्णाः भवन्ति, सुयोग्याः विद्वांसः भवन्ति, संसारे यशः सम्पत्तिं प्रतिष्ठां च उपार्जयन्ति तथा आत्मनः जीवनं सफलं कुर्वन्ति। किं बहुना, परिश्रमी मनुष्यः गृहे बहिः वा यत्रैव निवसति तत्रैव सुखपूर्वकं निवसति, सम्मानस्य च भाजनं भवति।

४—एतद्विपरीतं ये जनाः परिश्रमं न कुर्वन्ति, आलस्येन, शयनेन, यत्र-तत्र वृथा भ्रमणेन, इतस्ततः उपवेशनेन, निद्रया तन्द्रया च समयं यापयन्ति तेषां जीवनं निरर्थकं एव भवति। एतादृशाः जनाः स्वजीवने किमपि लौकिकं पारलौकिकं वा कार्यं साधयितुं न शक्नुवन्ति। न ते विद्वांसः भवन्ति, न धनिकाः भवन्ति, न यशस्विनः भवन्ति, न वा परोपकारिणः एव भवन्ति। एतादृशाः पुरुषार्थहीनाः परिश्रमहीनाः अलसाः जनाः समाजस्य भारभूताः भवन्ति। एते यत्रैव गच्छन्ति ततः एव (दूरीक्रियन्ते)।

१४—परिश्रम

१—आलस्य को छोड़कर सदा काम में लगे रहना परिश्रम कहा जाता है।

२—मानव-जीवन की सफलता के लिए जो-जो गुण आवश्यक होते हैं उनमें परिश्रम का बहुत ही महत्त्व-पूर्ण स्थान है। जो मनुष्य आलस्य को छोड़कर दिन-रात परिश्रम करते हैं, वे ही अपने जीवन को सफल कर सकते हैं। परिश्रम के बिना किसी भी कार्य की सिद्धि नहीं हो सकती है। विद्या, बल, धन, कीर्ति या सब कुछ परिश्रम से ही पाया जा सकता है।

३—विद्यार्थी भी जब अच्छी प्रकार परिश्रम करते हैं, तभी वे प्रतिवर्ष परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं, सुयोग्य विद्वान होते हैं, संसार में यश, सम्पत्ति और प्रतिष्ठा पाते हैं तथा अपना जीवन सफल करते हैं। अधिक क्या, परिश्रमी मनुष्य घर में या बाहर जहाँ भी रहता है वहीं सुख-पूर्वक रहता है और सम्मान का पात्र होता है।

४—इसके विपरीत जो लोग परिश्रम नहीं करते हैं, आलस्य में, सोने में, यत्र तत्र वृथा भ्रमण में, इधर-उधर बैठने में, निद्रा और झपकी में समय को बिताते हैं, उनका जीवन निरर्थक ही होता है। ऐसे लोग अपने जीवन में कुछ भी लौकिक वा पारलौकिक कार्य नहीं कर सकते हैं। वे न विद्वान होते हैं, न धनिक होते हैं, न यशस्वी होते हैं, अथवा न परोपकारी ही होते हैं। ऐसे पुरुषार्थहीन, परिश्रमहीन, आलसी लोग समाज के भार होते हैं। ये जहाँ भी जाते हैं, वहाँ से ही दूर किये जाते हैं।

५—बहवः जनाः पूर्वजैः उपार्जितेन धनेन परिश्रमस्य आवश्यकतां न अनुभवन्ति। परन्तु अयं विचारः उचितः नास्ति। धने विद्यमाने अपि पुरुषैः परिश्रमः (कर्तव्यः)। वस्तुतस्तु यः स्वयं परिश्रमं न करोति तस्य अन्यजनानां परिश्रमेण उपार्जितस्य धनस्य उपभोगे अधिकारः एव नास्ति। अन्यच्च, सुखस्य वास्तविकः स्वादः तदैव मिलति यदा मनुष्यः स्वयं परिश्रमं करोति।

६—परिश्रमकरणेन अन्ये अपि अनेके लाभाः भवन्ति। परिश्रमेण स्वास्थ्यरक्षा भवति, शरीरं बलिष्ठं भवति, शरीरे स्फूर्तिः आयाति, आलस्यं नश्यति, आत्मनिर्भरता आगच्छति तथा आत्मगौरवस्य अनुभूतिः भवति। व्यक्तेः, समाजस्य राष्ट्रस्य च समुन्नतिः परिश्रमाधीना एव अस्ति। यस्मिन् देशे परिश्रमशीलाः जनाः निवसन्ति तस्य देशस्य समुन्नतिः भवति।

७—अतः सर्वैः अपि मनुष्यैः पूर्णरूपेण परिश्रमः (कर्तव्यः)। सर्वविधायाः समुन्नतेः प्रधानं कारणं परिश्रमः एव वर्तते इति कदापि न (विस्मर्तव्यम्)।



१५—कर्तव्यपालनम्

१—यस्य मनुष्यस्य यत् कर्तव्यं वर्तते तस्य समुचितरूपेण पालनमेव कर्तव्यपालनं (कथ्यते)।

२ अयं संसारः कर्मभूमिः अस्ति, कर्तव्यभूमिः अस्ति। अस्मिन् संसारे यावन्तः जनाः जन्म गृह्णन्ति तेषां सर्वेषामपि पृथक्-पृथक् कर्तव्यानि भवन्ति। तानि कर्तव्यानि अनेकविधानि भवन्ति। कानिचित् व्यक्तिगतानि, कानिचित् पारिवारिकाणि

५—बहुत लोग पूर्वजों के द्वारा उपार्जित धन के कारण परिश्रम की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते हैं। परन्तु यह विचार उचित नहीं हैं। धन के रहने पर भी मनुष्य को परिश्रम करना चाहिए। वस्तुतः जो स्वयं परिश्रम नहीं करता है, उसका अन्य जनों के परिश्रम से उपार्जित धन के उपभोग में अधिकार नहीं है। और भी, सुख का वास्तविक स्वाद तभी मिलता है जब मनुष्य स्वयं परिश्रम करता है।

६—परिश्रम करने से दूसरे भी अनेक लाभ हैं। परिश्रम से स्वास्थ्यरक्षा होती है, शरीर बलवान होता है, शरीर में स्फूर्ति आती है, आलस्य का नाश होता है, आत्मनिर्भरता आती है तथा आत्मगौरव की अनुभूति होती है। व्यक्ति की, समाज की, और राष्ट्र की अच्छी उन्नति परिश्रम के अधीन ही है। जिस देश में परिश्रमी मनुष्य रहते हैं उस देश की उन्नति होती है।

७—अतएव सभी लोगों को पूर्णरूप से परिश्रम करना चाहिए। सभी प्रकार की उन्नति का प्रधान कारण परिश्रम ही है, यह कभी भी नहीं भूलना चाहिए।



१५—कर्तव्य-पालन

१—जिस मनुष्य का जो कर्तव्य है, उसका समुचित रूप से पालन करना ही कर्तव्य पालन कहा जाता है।

२—यह संसार कर्मभूमि है, कर्तव्यभूमि है। इस संसार में जितने लोग जन्म लेते हैं, उनके भी अलग-अलग कर्तव्य होते हैं। वे कर्तव्य अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ व्यक्तिगत, कुछ पारिवारिक

कानिचित् सामाजिकानि, कानिचित्, नित्यानि, कानिचित् नैमित्तिककानि च भवन्ति। जीविकार्थं अपि कृषिर्वा, वाणिज्यं वा, कला वा, भृतिर्वा इति बहुविधानि कर्माणि (कर्तव्यानि) भवन्ति। एवं च प्रत्येकं मनुष्यस्य उपरि अनेकविधानां कर्तव्यानां पालनस्य महान् भारो वर्तते। एकोऽपि एवंविधः मनुष्यः न भविष्यति यस्य किमपि कर्तव्यं न स्यात्-यदि तस्य शरीरं बुद्धिर्वा व्यापन्ना नास्ति।

३—एतेषां कर्तव्यानां पालनं मनुष्यस्य व्यक्तिगत-हिताय देशहिताय च परमावश्यकं भवति। ये मनुष्याः स्वकर्तव्यानां समुचितरूपेण पालनं कुर्वन्ति तेषामेव श्रेष्ठपुरुषेषु गणना भवति। ये सत्पुरुषाः परिश्रमपूर्वकं श्रद्धापूर्वकं च स्वकर्तव्यानि पालयन्ति ते न केवलं आत्मनः एव प्रत्युत सम्पूर्णस्यापि देशस्य हितसाधनं कुर्वन्ति।

४ - यदि जनाः स्वकर्तव्यानां पालनं न कुर्युः तर्हि समाजस्य काऽपि व्यवस्था सफला भवितुं न अर्हति। कल्पना क्रियताम्—यदि अध्यापकाः सम्यक् न अध्यापयेयुः, यदि विद्यार्थिनः परिश्रमेण न पठेयुः, यदि न्यायाधीशाः समुचितरूपेण न्यायं न कुर्युः, यदि शासकाः समीचीनतया शासनकार्यं न सम्पादयेयुः, यदि कर्मकराः स्वानि स्वानि कर्माणि सम्यक्तया न विदध्युः, यदि कृषकाः कृषिकार्यं श्रमेण न कुर्युः तर्हि किं देशस्य एकमपि कार्यं समीचीनरूपेण सम्पन्नं भवितुमर्हति ?

५—देशस्य कृते महतः दुर्भाग्यस्य अयं विषयः वर्तते यत् साम्प्रतिकेषु जनेषु कर्तव्यपालनं प्रति महती शिथिलता समागता वर्तते। केऽपि श्रमेण, सत्यतया, निष्ठया च कार्यं कर्तुं न

कुछ सामाजिक, कुछ नित्य और कुछ नैमित्तिक होते हैं। जीविका के लिए भी कृषि या व्यापार या कला या नौकरी, ये बहुत प्रकार के कर्म करने होते हैं। इस तरह प्रत्येक मनुष्य के ऊपर अनेक प्रकार के कर्तव्यों के पालन का महान बोझ है! एक भी इस प्रकार का मनुष्य नहीं होगा जिसका कुछ कर्तव्य न हो, यदि उसका शरीर या बुद्धि बिगड़ी हुई नहीं है।

३—इन कर्तव्यों का पालन मनुष्य के व्यक्तिगत हित के लिए और देश के लिए परम आवश्यक होता है। जो मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन समुचित रूप से करते हैं उनकी ही श्रेष्ठ पुरुषों में गणना होती है। जो सज्जन परिश्रम-पूर्वक और श्रद्धापूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं वे न केवल अपना ही बल्कि समूचे देश का भी हितसाधन करते हैं।

४—यदि लोग अपने कर्तव्यों का पालन न करें तो समाज की कोई भी व्यवस्था सफल नही हो सकती है। कल्पना करें, यदि अध्यापक अच्छी तरह न पढ़ावें, यदि विद्यार्थी परिश्रम से न पढ़ें, यदि न्यायाधीश समुचितरूप से न्याय न करें, यदि शासक अच्छी तरह शासन कार्य का सम्पादन न करें, यदि मजदूर अपने-अपने कर्मों को अच्छी तरह न करें, यदि किसान परिश्रम से कृषि न करें, तो क्या देश का एक भी कार्य अच्छी तरह सम्पन्न हो सकता है?

५—देश के लिए बड़े दुर्भाग्य का यह विषय है कि इस समय के मनुष्यों में कर्तव्य-पालन के प्रति शिथिलता आ गयी हैं। कोई श्रम से, सच्चाई से, और निष्ठा से कार्य

वाञ्छन्ति सर्वेऽपि वञ्चनया एव स्वार्थसाधनं कर्तुं कामयन्ते। अधिकाराय तु सर्वे एव कलहं कुर्वन्ति परं कर्तव्यपालने कोऽपि ध्यानं न ददाति। इदमेव कारणं वर्तते यत् देशस्य राजकीया अराजकीया वा कापि उन्नतियोजना समुचितरूपेण फलवती न भवति। यावान् अर्थव्ययः समयव्ययश्च भवति तावती कार्यसिद्धिः न भवति।

६—वस्तुतः अस्माकं देशस्य समाजस्य च इदं महद् दौर्भाग्यं वर्तते। यावत् सर्वे जनाः स्व-स्व-कर्तव्यपालनं निष्ठापूर्वकं न करिष्यन्ति तावत् न तेषां कल्याणं भविष्यति न देशस्य एव। कर्तव्यपालनमेव आत्मनः देशस्य वा समुन्नतेः मूलमन्त्रः अस्ति।

□

१६—देशसेवा

१—आत्मनः देशस्य तथा देशवासिनां सेवा देशसेवा इति (कथ्यते)।

२—कस्यापि देशस्य निवासिनां कृते स्वस्य देशस्य सेवा एकं परमावश्यकं कर्तव्यं भवति। यस्मिन् देशे मनुष्यः जन्म गृह्णाति, यस्य देशस्य अन्नेन जलेन वायुना च जीवति तथा यत्रत्यैः साधनैः सुखोपभोगं करोति तस्य देशस्य सेवाकरणं मनुष्यस्य परमः धर्मः अस्ति।

३—यः मनुष्यः स्वस्य देशस्य सेवां न करोति, स्वस्य देशस्य कृते त्यागं न करोति, स्वस्य देशस्य सुखदुःखाभ्यां निश्चिन्तः तिष्ठति, स्वस्य देशस्यकृतेप्राणान् अपि न परित्यजति तस्य

करना नहीं चाहते हैं। सभी ठगी से ही स्वार्थ साधन करना चाहते हैं। अधिकार के लिए तो सभी कलह करते हैं, परन्तु कर्तव्य पालन में कोई ध्यान नहीं देता है। यही कारण है कि देश की राजकीय अथवा अराजकीय कोई उन्नतियोजना समुचित रूप से फलवती नहीं होती है। जितने धन का खर्च और समय का व्यय होता है, उतनी कार्यसिद्धि नहीं होती है।

६—वस्तुतः हम लोगों के देश और समाज का यह महान दुर्भाग्य है। जब तक सभी लोग अपने-अपने कर्तव्य का पालन निष्ठापूर्वक नहीं करेंगे तबतक न उनका कल्याण होगा न देश का ही। कर्तव्यपालन ही अपनी या देश की उन्नति का मूल मन्त्र है।



१६—देश-सेवा

१—अपने देश की तथा देशवासियों की सेवा देश सेवा कही जाती है।

२—किसी भी देश के निवासियों के लिए अपने देश की सेवा एक परम आवश्यक कर्तव्य होता है। जिस देश में मनुष्य जन्म लेता है, जिस देश के अन्न से, जल से और वायु से जीता है, तथा जहाँ के साधनों से सुखोपभोग करता है, उस देश की सेवा करना मनुष्य का परम धर्म है।

३—जो मनुष्य अपने देश की सेवा नहीं करता है, अपने देश के लिए त्याग नहीं करता है, अपने देश के सुख-दुःखों से निश्चिन्त रहता है, अपने देश की उन्नति के लिए प्रयत्न नहीं करता है, तथा अवसर पर अपने देश के लिए प्राण का त्याग

मनुष्यस्य जीवनं निरर्थकम् एव (मन्तव्यम्)। सः देशे वृथा जीवति तथा अखिलान् अपि देशवासिनः कलङ्कयति ।

४—अस्मात् विपरीतं ये जनाः स्वस्य देशस्य सेवां कुर्वन्ति, स्वस्य देशस्य कृते त्यागं कुर्वन्ति, स्वस्य देशस्य सुखदुःखयोः चिन्तया चिन्तिताः तिष्ठन्ति, स्वस्य देशस्य उन्नतये प्रयत्नं विदधति तथा अवसरे उपस्थिते सति देशसेवायाः बलिवेदिकायाम् आत्मार्पणं यावत् कुवन्ति तेषाम् एव जीवनं सफलं भवति । एतादृशानि पुरुषरत्नानि कस्यापि देशस्य शिरोभूषणानि भवन्ति । अतः सर्वैः अपि देशवासिभिः यथासम्भवं स्वस्वदेशस्य सेवा अवश्यमेव (कर्तव्या)।

५—देशसेवायाः अनेके प्रकाराः सन्ति । यथा—देशहिताय सञ्चालितेषु आन्दोलनेषु सहयोगप्रदानम्, देशे वर्तमानानां दोषाणां निर्मूलनम्, युद्धकाले देशस्य कृते आत्मसर्पणम्, स्वस्वकर्तव्यानां समुचितरूपेण निष्ठापूर्वकं पालनम्, न्यायस्य रक्षा, उत्कृष्ट-साहित्यनिर्माणम्, शिल्पकलादीनां सम्बर्द्धनम्, देशस्य स्वतन्त्रतायाः संरक्षणम्, देशवासिषु परस्परं संघटनस्य सहकारितायाः शिक्षायाः तथा सदाचारस्य प्रचारश्च । एभिः कार्यैः स्वशक्त्यनुसारं सर्वैः मनुष्यैः देशसेवां कर्तुं (शक्यते)।

६—यस्य देशस्य निवासिषु देशसेवायाः उत्कृष्टा भावना भवति ते अल्पेन एव कालेन स्वकीयं देशं समुन्नतेः उच्चतमं शिखरं प्रापयन्ति । संसारस्य इतिहासे एतस्य अनेकानि उदाहरणानि (लभ्यन्ते)।

७—सम्प्रति एषः कर्तव्यभारः अस्माकं शिरसि आपतितः वर्तते । अयं समयः भारतीयानां देशभक्तेः परीक्षायाः समयः

नहीं करता है, उस मनुष्य का जीवन निरर्थक ही मानना चाहिए। वह देश में व्यर्थ जीता है तथा सम्पूर्ण देशवासियों को कलंकित करता है।

४—इसके विपरीत जो लोग अपने देश की सेवा करते हैं, अपने देश के लिए त्याग करते हैं, अपने देश के सुख-दुःखों की चिन्ता से चिन्तित रहते हैं, अपने देश की उन्नति के लिए प्रयत्न करते हैं तथा अवसर आने पर देशसेवा की बलिवेदी पर अपने को अर्पित तक करते हैं, उनका ही जीवन सफल होता है। ऐसे पुरुष रत्न किसी भी देश के शिरोभूषण होते हैं। अतः सभी देशवासियों को यथासम्भव अपने देश की सेवा अवश्य ही करनी चाहिए।

५ - देशसेवा के अनेक प्रकार होते हैं। जैसे - देशहित के लिए संचालित आन्दोलन में सहयोग देना, देश में वर्तमान दोषों का निर्मूलन, युद्ध के समय देश के लिए आत्मसमर्पण, अपने-अपने कर्तव्यों का समुचित रूप से निष्ठापूर्वक पालन, न्याय की रक्षा, उत्कृष्ट साहित्य का निर्माण, शिल्पकलादि का बढ़ाना, देश की स्वतन्त्रता की रक्षा, देशवासियों में परस्पर संघटन, सहकारिता, शिक्षा तथा सदाचार का प्रचार। इन कार्यों से अपनी शक्ति के अनुसार सभी मनुष्य देशसेवा कर सकते हैं।

६—जिस देश के निवासियों में देशसेवा की उत्कृष्ट भावना होती है, वे थोड़े ही समय में अपने देश को उन्नति के ऊँचे-ऊँचे से शिखर पर पहुँचाते हैं। संसार के इतिहास में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

७—इस समय यह कर्तव्य-भार हमलोगों के सिर पर आ पड़ा है। यह समय भारतीयों की देशभक्ति की परीक्षा का समय

अस्ति। अतः सर्वेषां भारतनिवासिनां जनानाम् इदं परमं कर्तव्यं वर्तते यत् ते अपि उपरिलिखितेन मार्गेण देशसेवां विधाय स्वदेशस्य स्वदेशवासिनां तथा आत्मनश्च हितं सम्पादयेयुः।

□

१७–एकता

१ – मतभेदस्य विरोधस्य वा अभावः एकता इति (उच्यते)। एकतायाः अपरं नाम 'ऐक्यं 'सङ्घटनं" वा इत्यपि वर्तते।

२—मनुष्याणां सांसारिकजीवनस्य कृते एकता महान् लाभकारी गुणः अस्ति। यदि संसारे मनुष्येषु एकता न स्यात् तर्हि तेषाम् एकदिनस्यापि जीवनं कठिनं सम्पद्येत। परिवारस्य एव उदाहरणम् (गृह्यताम्)—परिवारस्य सर्वासु अपि व्यक्तिषु यदि एकता न स्यात् तर्हि सः परिवारः एकमपि दिनं सुखेन निवसितुं न शक्नोति। यस्मिन् परिवारे एकता न भवति, यस्य परिवारस्य सर्वे जनाः पदे पदे विवदन्ते, क्षणे क्षणे कलहायन्ते तस्य परिवारस्य कीदृशी दुरवस्था भवति इति वयं प्रतिदिनं प्रत्यक्षीकुर्मः।

३—यथा परिवारे एकतायाः आवश्यकता वर्तते तथैव समाजे देशे तथा सम्पूर्णे संसारे अपि एकतायाः आवश्यकता वर्तते।

४ – एकतायां महती शक्तिः भवति। यत् कार्यम् एकेन न कर्तुं शक्यते तद् बहूनां सम्मिलितेन समुदायेन सुगमतया एव भवति। एकेन तृणेन किमपि कार्यं भवितुं न शक्नोति परं यदा तेषाम् एव तृणानां समुदायेन रज्जुः (निर्मीयते) तदा तया गजाः

है। अतः सभी भारतवासी लोगों का यह परम कर्तव्य है कि वे भी ऊपर लिखे गये मार्ग से देश की सेवा करके अपने देश का, अपने देशवासियों का तथा अपना हित करें।



१७-एकता

१—मतभेद अथवा विरोध के अभाव को एकता कहते हैं। एकता का दूसरा नाम "ऐक्य" या "संगठन" भी है।

२—मनुष्यों के सांसारिक जीवन के लिए एकता महान लाभकारी गुण है यदि संसार में मनुष्यों में एकता न हो तो उनके एक दिन का भी जीवन कठिन हो जाय। परिवार का ही उदाहरण लीजिए परिवार के सभी व्यक्तियों में यदि एकता न हो तो वह परिवार एक दिन भी सुख से निवास नहीं कर सकता है। जिस परिवार में एकता नहीं होती है, जिस परिवार के सभी लोग पग-पग पर झगड़ते हैं, क्षण-क्षण में कलह करते हैं, उस परिवार की कैसी दुरवस्था होती है, यह हम लोग प्रतिदिन प्रत्यक्ष देखते हैं।

३—जैसे परिवार में एकता की आवश्यकता है वैसे ही समाज में, देश में तथा सम्पूर्ण संसार में भी एकता की आवश्यकता है।

४—एकता में महान शक्ति होती है। जो कार्य एक के द्वारा नहीं हो सकता है, वह बहुतों के द्वारा सम्मिलित समूह से सुगमता से ही हो जाता है। एक तृण से कुछ भी कार्य नहीं हो सकता है परन्तु जब उन्हीं घासों के समुदाय से रस्सी बनाई

अपि (वध्यन्ते)। एकताया: बलेन असाध्यमपि सुसाध्यम्, दुर्लभमपि सुलभं, कठिनमपि सरलं तथा दुष्करमपि सुकरं भवति। अतएव नीतिकारैः (कथितम्)—

संहतिः कार्यसाधिका।

५ – येषु एकता भवति ते एव सुखपूर्वकं जीवन्ति, तेषामेव समुन्नतिः भवति, ते एव विकासं प्राप्नुवन्ति, तेषामेव गृहे शान्तिः विराजते, तत्रैव सम्पदः निवसन्ति, तेभ्यः एव शत्रवः अपि बिभ्यति, तान् एव जनाः मानयन्ति, ते एव समाजे प्रतिष्ठिताः भवन्ति, तेषामेव कार्याणि सिद्ध्यन्ति, तेषामेव मनोरथाः पूर्यन्ते, तेषामेव वचः श्रूयते, तेषामेव च समाजे प्रभावः भवति। एतद्विपरीतं येषु एकता न भवति तेषां सर्वमपि इतः विपरीतमेव भवति।

६—अतः यथासम्भवं सर्वैः अपि जनैः परिवारे समाजे देशे तथा विश्वस्मिन् भूमण्डलेऽपि एकतायाः स्थापनाय प्रयत्नः (विधेयः) येन सम्पूर्णमपि विश्वं सुखशान्तिमयं स्नेहसौहार्दमयं च सम्पद्येत।

७—वर्तमानसमये एकतायाः महान् अभावः अस्ति। परिवारे समाजे देशे तथा सम्पूर्णे संसारे सर्वत्रैव अनेकतायाः, मतभेदस्य, अविश्वासस्य, वैरविद्वेषयोः, हिंसायाः प्रतिहिंसायाः च भयंकरः झञ्झावातः प्रवहमानः दृश्यते। एतस्य प्रधानं कारणं तु स्वार्थपरता एव अस्ति। सर्वे स्वकीयमेव हितं पश्यन्ति न अन्येषाम्। अस्यां दशायां कथं नाम एकता सम्भवति। अतः एकतायाः स्थापनाय परस्परं स्नेह-सौहार्द-वर्द्धनाय च स्वार्थसाधनेन सहैव परेषामपि स्वार्थ-रक्षणस्य उपरि ध्यानदानं परमावश्यकं वर्तते।

□

जाती है, तब उसी से हाथी भी बाँधे जाते हैं। एकता के बल से असाध्य भी सुसाध्य, दुर्लभ भी सुलभ, कठिन भी सरल तथा दुष्कर भी सुकर होता है। इसलिए नीतिकारों ने कहा है—संगठन से काम सिद्ध होते हैं।

५— जिनमें एकता होती है वे ही सुख से जीते हैं, उनकी ही उन्नति होती है, वे ही विकास को पाते हैं, उन्हीं के घर में शान्ति रहती है, वहाँ ही सम्पत्तियाँ निवास करती है, उन्हीं से शत्रु भी डरते हैं, उनको ही लोग मानते हैं, वे ही समाज में प्रतिष्ठित होते हैं, उन्हीं के कार्य सिद्ध होते हैं, उन्हीं के मनोरथ पूर्ण होते हैं, उन्हीं की बातें सुनी जाती है और उन्हीं का समाज में प्रभाव रहता है। इसके विरुद्ध जिनमें एकता नहीं होती है उनका सब कुछ इसके विपरीत होता है।

६—अतः यथासम्भव सभी लोगों को परिवार में, समाज में, देश में तथा सम्पूर्ण भूमण्डल पर एकता की स्थापना के लिए प्रयत्न करना चाहिये जिससे सम्पूर्ण विश्व सुखशान्तिमय और स्नेह-सौहार्दमय हो जाये।

७—वर्तमान समय में एकता का महान अभाव है। परिवार में, समाज में, देश में तथा सम्पूर्ण संसार में सर्वत्र ही अनेकता की, मतभेद की, अविश्वास की, वैर-विद्वेषकी, हिंसा और प्रतिहिंसा की महाभयङ्कर आँधी बहती हुई दिखाई पड़ती है। इसका प्रधान कारण तो स्वार्थपरता ही है। सभी अपना ही हित देखते हैं, दूसरों का नहीं। इस दशा में कैसे एकता हो सकती है? अतः एकता के स्थापनार्थ और परस्पर स्नेह-सौहार्द बढ़ाने के लिये स्वार्थ-साधन के साथ ही दूसरों की भी स्वार्थरक्षा के ऊपर ध्यान देना परम आवश्यक है।

□

१८-स्त्री-शिक्षा

१—मनुष्यसमाजः द्विधा विभक्तः अस्ति—स्त्रीसमाजे पुरुषसमाजे च। स्त्रियः पुरुषाश्च उभये अपि मिलित्वा समाजस्य निर्माणं कुर्वन्ति तथा समाजस्य भारं वहन्ति। परन्तु समाजस्य कल्याणं तदा एव भवितुम् अर्हति यदा अयं उभयविधः अपि समाजः शिक्षितः भवति। अतएव समाजस्य यथा पुरुषसमाजे शिक्षाप्रसारस्य आवश्यकता अस्ति तथैव स्त्रीसमाजे अपि शिक्षाप्रसारस्य आवश्यकता अस्ति। यदा स्त्रियः पुरुषाश्च उभये अपि साक्षराः शिक्षिताः सुयोग्याश्च भविष्यन्ति तदैव समाजस्य पूर्णरूपेण कल्याणं भविष्यति।

२—वस्तुतस्तु पुरुषसमाजस्य शिक्षायाः अपि स्त्रीसमाजस्य शिक्षा विशेषरूपेण आवश्यकी भवति। यतः स्त्रियः एव बाल्यकाले बालानां लालनं पालनं च कुर्वन्ति। मनुष्याणां शैशवं मातृणाम् एव क्रोडे व्यतीतं भवति। अस्यां अवस्थायां यदि मातरः शिक्षिताः भवन्ति तदा ताः शैशवाद् एव स्वशिशून् अपि शिक्षयन्ति। शिक्षिताः मातरः लालन-पालनाभ्यां सहैव स्वबालकान् सदाचारं शिक्षयन्ति, सद्गुणान् उपदिशन्ति, दुर्गुणेभ्यः निवारयन्ति, सन्मार्गे प्रवर्तयन्ति, तथा नानाविधाः शिक्षाप्रदाः कथाः कथयित्वा तेषां हृदयेषु उत्तमोत्तमानां गुणानां बीजानि वपन्ति। एवं प्रकारेण शिक्षितानां महिलानां बालकाः बालिकाश्च बाल्यकालात् एव शिष्टाः सभ्याः सद्गुणसम्पन्नाश्च भवन्ति। एतादृशाः एव बालकाः अग्रे समाजस्य भूषणानि नेतारः, गौरववर्द्धकाः च जायन्ते। अतः सभ्यानां सुयोग्यानां नागरिकाणां निर्माणाय स्त्रीशिक्षायाः महती आवश्यकता वर्तते।

१८—स्त्री-शिक्षा

१—मनुष्य समाज दो प्रकार विभक्त है—स्त्री समाज में ौर पुरुष समाज में। स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर समाज ा निर्माण करते हैं तथा समाज का भार ढोते हैं। परन्तु समाज ा कल्याण तभी हो सकता है, जब यह दोनों प्रकार का समाज ाक्षित हो। अतः समाज के हित के लिए जैसे पुरुष समाज में ाक्षा के प्रसार की आवश्यकता है, वैसे ही स्त्री समाज में भी ाक्षाप्रसार की आवश्यकता है। जब स्त्री और पुरुष दोंनों ही ाक्षर, शिक्षित और सुयोग्य होंगे तभी समाज का पूर्णरूप से ल्याण होगा।

२—वस्तुतः पुरुषसमाज की अपेक्षा स्त्रीसमाज की शिक्षा ाशेषरूप से आवश्यक होती है। क्योंकि स्त्रियाँ ही बाल्यकाल में ालकों का लालन और पालन करती हैं। मनुष्यों का बचपन ाताओं की ही गोद में व्यतीत होता है। इस अवस्था में यदि ाताएँ शिक्षित होतीं है तो वे बचपन से ही अपने बच्चों को भी ाक्षा देती हैं। शिक्षित माताएँ लालन-पालन के साथ ही अपने ालकों को सदाचार की शिक्षा देती हैं, अच्छे गुणों का उपदेश ाी हैं, दुर्गुणों से हटाती हैं, सन्मार्ग पर ले चलती हैं तथा नाना कार की शिक्षाप्रद कथाओं को कहकर उनके हृदयों में उत्तम से त्तम गुणों के बीज बोती हैं। इस प्रकार शिक्षित महिलाओं के ालक और बालिकाएँ बाल्यकाल से ही शिष्ट, सभ्य और द्गुणसम्पन्न होती हैं। इस तरह के ही बालक आगे चलकर माज के भषण, नेता और गौरव बढ़ाने वाले होते हैं। अतः भ्य सुयोग्य नागरिकों के निर्माण के लिये स्त्रीशिक्षा की महती ावश्यकता है।

३—अस्माकं देशे स्त्रीसमाजस्य दशा अतीव शोचनीया वर्तते। स्त्रीसमाजे बाहुल्येन अनेके दोषाः सन्ति। अशिक्षा अस्ति, अस्वास्थ्यं अस्ति, अस्वच्छता अस्ति, कुसंस्काराः सन्ति, कुरीतयः सन्ति, कुरूढयश्च सन्ति। ईर्ष्या, द्वेषः, असूया, असहिष्णुता, कलहप्रियता, मूढ़ता, अन्धविश्वासः, गालिप्रदानपटुता, दुराग्रहः, शपथकारिता चेति अनेके दोषाः दुर्गुणाः च वर्तन्ते। विशेषतश्च ग्रामीणासु महिलासु ! इदं सर्वं च अशिक्षायाः एव फलं वर्तते। अतः एतेषां दोषाणां दूरीकरणाय सभ्यमहिला—समाजस्य निर्माणाय च स्त्रीणां शिक्षणं सर्वाधिकं महत्त्वपूर्णं कार्यं वर्तते।

४—प्रसन्नतायाः अयं विषयः वर्तते यत् सम्प्रति शनैः शनैः स्त्रीशिक्षां प्रति समाजस्य रुचिः वर्द्धमाना (विलोक्यते)। तथापि बहवः जनाः एतादृशाः अपि सन्ति ये अद्यापि स्त्रीशिक्षायाः उपेक्षां कुर्वन्ति। स्त्रीशिक्षायाः प्रचाराभावे अन्यानि अपि कारणानि सन्ति। अध्यापिकानां न्यूनता अस्ति। कन्यापाठशालानां प्रचुरता नास्ति। सर्वेषां च समीपे बालानां बालिकानां च शिक्षायाः भारवहनस्य सामर्थ्यं नास्ति। एभिः कारणैः स्त्रीशिक्षायां यादृशी प्रगतिः (अपेक्ष्यते) तादृशी न अस्ति ! अतः शिक्षाधिकारिभिः समाजहितैषिभिश्च पुरुषैः एतस्मिन् विषये विशेषरूपेण ध्यानं (देयम्)। एतादृशी च शिक्षापद्धतिः स्त्रीणां कृते (निर्मातव्या) यथा स्त्रियः आदर्शपत्न्यः आदर्शमातरः च भवेयुः। भारतीयसंस्कृतेः परिज्ञानाय तथा तदनुकूलाचरणाय च संस्कृतभाषायाः अपि अध्ययनं स्त्रीणां कृते नितान्तम् आवश्यकं वर्तते इत्यपि न (विस्मर्तव्यम्)।

□

३—हमलोगों के देश में स्त्रीसमाज की दशा अत्यन्त ही शोचनीय है। स्त्रीसमाज में बहुत से दोष हैं। अशिक्षा है, स्वास्थ्य-हीनता है, अपवित्रता है, कुसंस्कार है, कुरीतियाँ हैं और कुरूढ़ियाँ हैं। ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा, असहिष्णुता, कलहप्रियता, मूढता, अन्ध-विश्वास, गाली देने में निपुणता, दुराग्रह और शपथकारिता ये अनेक दोष और दुर्गुण हैं। विशेषकर देहाती महिलाओं में। और यह सब अशिक्षा का फल है। अतः इन दोषों को दूर करने के लिये और सभ्य महिलासमाज के निर्माण के लिये स्त्रियों का शिक्षण सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

४—प्रसन्नता का यह विषय है कि इस समय धीरे-धीरे स्त्री-शिक्षा के प्रति समाज की रुचि बढ़ती हुई दिखाई पड़ रही है। तो भी बहुत लोग ऐसे भी हैं जो आज भी स्त्रीशिक्षा की उपेक्षा करते हैं। स्त्रीशिक्षा के अभाव के दूसरे भी कारण हैं। अध्या-पिकाओं की कमी है। कन्यापाठशालाएँ अधिक नहीं हैं। और सभी के पास बालक और वालिकाओं की शिक्षा के भारवहन की क्षमता नहीं है। इन कारणों से स्त्रीशिक्षा में जैसी प्रगति अपेक्षित है वैसी नहीं है। अतः शिक्षाधिकारियों और समाज के शुभेच्छु पुरुषों को इस विषय में विशेषरूप से ध्यान देना चाहिए और ऐसी शिक्षा-पद्धति स्त्रियों के लिये बनायी जाय जिससे स्त्रियाँ आदर्श पत्नी और आदर्श माताएँ हों। भारतीय संस्कृति के ज्ञान के लिये तथा उसके अनुकूल आचरण के लिये संस्कृत भाषा का भी अध्ययन स्त्रियों के लिये नितान्त आवश्यक है, इसे भी नहीं भूलना चाहिए।

□

१६—चल-चित्रम्

१—आधुनिकविज्ञानेन सम्प्रति बहूनि विस्मयकराणि वस्तूनि (आविष्कृतानि) सन्ति। तेषु एकं महत्त्वपूर्णं वस्तु चलचित्रम् अपि वर्तते। चलचित्रम् आङ्ग्लभाषायां सिनेमा [Cinema] इति (कथ्यते)।

२—चलचित्रे एकं विस्तृतं शुक्लवर्णं वस्त्रं भवति। तस्मिन् एव वस्त्रे यन्त्रद्वारा चित्राणि प्रतिबिम्बितानि (क्रियन्ते)। तानि चित्राणि पूर्वं स्थिराणि भवन्ति। परन्तु यदा चित्रपटे प्रतिबिम्बितानि (विधीयन्ते) तदा यन्त्रसाहाय्येन तानि चलन्ति। अत एव एतस्य नाम "चलचित्रम्" इति वर्तते।

३—पूर्वं इमानि चित्राणि केवलं चलानि एव आसन् परन्तु सम्प्रति तानि शब्दोच्चारणम् अपि कुर्वन्ति। अतः इदानीं इदं सवाक् चलचित्रम् अपि (कथ्यते)। साम्प्रतिकेषु चलचित्रेषु यानि चित्राणि प्रतिबिम्बितानि भवन्ति तानि हसन्ति, विलपन्ति, गायन्ति, नृत्यन्ति, चुम्बन्ति, आलिङ्गन्ति, वदन्ति, आलपन्ति, एवं सर्वाणि शारीरिकाणि वाचिकानि च कर्माणि कुर्वन्ति। एवमेव पशवः तथा पक्षिणः अपि धावन्तः उड्डीयमानाः शब्दायमानाः च दृष्टिपथं आयान्ति।

४—देशे विदेशे च सम्प्रति चलचित्राणां महान् प्रचारः वर्तते। एकैकस्मिन् नगरे पञ्च-पञ्च सप्त-सप्त दश-दश चलचित्रगृहाणि सन्ति। साधारणे नगरेऽपि द्वित्राणि चलन्ति (दृश्यन्ते)। प्रतिदिनं अस्य प्रचारः वर्द्धमानः एव (दृश्यते)।

५—एतेषां चलचित्राणां प्रचारेण सम्प्रति समाजस्य महान् लाभः वर्तते। सर्वप्रथमं तु मनोविनोदस्य इदं सुमहत् साधनम् अस्ति।

१६—सिनेमा

१—आधुनिक विज्ञान के द्वारा इस समय बहुत-सी आश्चर्य-जनक चीजें आविष्कृत हुई हैं। उनमें एक महत्त्वपूर्ण वस्तु चलचित्र (सिनेमा) भी है। चलचित्र को अंग्रेजी में सिनेमा कहते हैं।

२—सिनेमा में एक फैला हुआ सफेद वस्त्र होता है। उसी वस्त्र पर यन्त्र द्वारा चित्रों को प्रतिबिम्बित करते हैं। वे चित्र पहले स्थिर होते हैं। परन्तु जब चित्रपट पर प्रतिबिम्बित होते हैं तब यन्त्र की सहायता से वे चित्र चलते हैं। अत: इसका नाम "चलचित्र" ऐसा है।

३—पहले ये चित्र केवल चलते ही थे परन्तु आज-कल वे बोलने भी लगे हैं। अत: इस समय इसे "बोलता सिनेमा" भी कहते हैं। इस समय के चलचित्रों में जो चित्र प्रतिबिम्बित होते हैं, वे हँसते हैं, रोते हैं, गाते हैं, नाचते हैं, चूमते हैं, आलिङ्गन करते हैं, बोलते हैं, बात करते हैं, इसी तरह सभी शारीरिक और वाचिक कर्मों को करते हैं। इसी तरह पशु तथा पक्षी भी दौड़ते हुए, उड़ते हुए और शब्द करते हुए देखे जाते हैं।

४—देश-विदेश में इस समय सिनेमा का महान प्रचार है। एक-एक शहर में पाँच-पाँच सात-सात दस-दस सिनेमा घर हैं। साधारण शहर में भी दो-तीन चलते हुए दिखाई पड़ते हैं। प्रतिदिन इसका प्रचार बढ़ता हुआ ही दिखाई पड़ता है।

५—इन चलचित्रों के प्रचार से इस समय समाज का महान लाभ है। सर्वप्रथम तो मनोविनोद का यह महान साधन है।

एतस्य सरस-मधुराणां गीतानां श्रवणेन, मनोहराणां दृश्याणां दर्शनेन, चित्ताकर्षकाणां चित्राणाम् अवलोकनेन, कौतूहलवर्द्धकानां कथोपकथानाम् आकर्णनेन च दर्शकानां महान् आनन्दः जायते ।

६—एतदतिरिक्तं ज्ञानविस्तारे अपि एतस्य महती उपयोगिता वर्तते । कृषिः, उद्योगः, शिल्पं, स्वास्थ्यम्, विज्ञानम्, चिकित्सा, पशुपालनम्, गृहव्यवस्था, शिक्षा चेति नानाविधानां उपयोगिनां ज्ञातव्यविषयाणां तथा विभिन्नदेश - जातानां दर्शनीय-वस्तूनाम् अपि व्यापके ज्ञाने चलचित्राणि बहु उपकारीणि भवन्ति ।

७—समाजसुधारस्य अपि इदमेकं महत् साधनं वर्तते । समाजे परम्परागताः अनेके दोषाः वर्तन्ते । तेषां निवारणस्य महती आवश्यकता अस्ति । एतस्मिन् विषये अपि चलचित्रेभ्यः महती सहायता (लभ्यते) । समये-समये एषु समाजसुधारसम्बन्धीनि अपि अनेकानि एतादृशानि दृश्यानि आगच्छन्ति येषां दर्शनेन दर्शकानां हृदये समाजसुधारस्य भावना जागर्ति ।

८—इमे सर्वे चलचित्रैः जायमानाः लाभाः सन्ति । परन्तु समाजस्य एका महती हानिः अपि अस्ति । एषु अनेकानि एतादृशानि अपि दृश्यानि आगच्छन्ति यानि सर्वथा अश्लीलानि, असभ्यतापूर्णानि, भारतीयसंस्कृति-विरुद्धानि च भवन्ति । एषु दृश्येषु अर्धनग्नाः नार्यः (प्रदर्श्यन्ते), अश्लीलानि गीतानि (गीयन्ते) अश्लीलप्रायः चेष्टाः च (विधीयन्ते) । सर्वेषां समक्षं चुम्बनालिङ्गनादीनि कामोत्तेजकानि कार्याणि (क्रियन्ते) । दृश्यानां दर्शने दर्शकेषु, विशेषतः च नवयुवतीषु, बालकेषु बालिकासु

इसके सरस मधुर गीतों के सुनने से, मनोहर दृश्यों के देखने से, चित्ताकर्षण-चित्रों को देखने से और कौतूहल बढ़ानेवाले कथोपकथनों के सुनने से दर्शकों को महान आनन्द होता है।

६—इसके अतिरिक्त ज्ञान के विस्तार में भी इसकी महान उपयोगिता है। कृषि, उद्योग, शिल्प, स्वास्थ्य, विज्ञान, चिकित्सा, पशुपालन, गृह-व्यवस्था और शिक्षा आदि नानाप्रकार के उपयोगी जानने योग्य विषयों के तथा विभिन्न देशों में होने वाले दर्शनीय-वस्तुओं के भी व्यापक-ज्ञान में चलचित्र उपकारी होता है।

७—समाजसुधार का भी यह एक महान साधन है। समाज में परम्परागत अनेक दोष हैं। उनके सुधार की महान आवश्यकता है। इस विषय में भी सिनेमा से बड़ी सहायता मिलती है। समय-समय पर इनमें समाज-सुधार सम्बन्धी भी अनेक ऐसे दृश्य आते हैं जिनके दर्शन से दर्शकों के हृदय में समाज-सुधार की भावना जग जाती है।

८—ये सभी सिनेमा से होनेवाले लाभ हैं। परन्तु इससे समाज की महान हानि भी होती है। इनमें अनेक ऐसे भी दृश्य आते हैं जो सर्वथा अश्लील, असभ्यतापूर्ण और भारतीय संस्कृति के विरुद्ध होते हैं। इन दृश्यों में आधी नंगी स्त्रियाँ दिखलाई जाती हैं, अश्लील गीत गाये जाते हैं और अश्लील चेष्टायें की जाती हैं। सभी के समक्ष चुम्बन, आलिङ्गनादि कामोत्तेजक कार्य किए जाते हैं। ऐसे दृश्यों के देखने से दर्शकों में, विशेषकर नवयुवतियों में, बालक और बालिकाओं में

च कीदृशाः भावाः जागरिष्यन्ति इति सर्वे एव ज्ञातुं शक्नुवन्ति। समाजे सम्प्रति सर्वत्र प्रतिदिनं या चरित्रहीनता वर्द्धमाना (दृश्यते) तत्र इमानि चलचित्राणि प्रधानकारणानि सन्ति।

९—अतः यावत् अस्य महतः दोषस्य निराकरणं न भवति तावत् चलचित्रेभ्यः लाभापेक्षया हानिः एव अधिका (मंस्यते)। चलचित्रं खलु एकम् एतादृशं तीक्ष्णं विषं वर्तते यत् देशस्य भाविनां नागरिकाणां मनांसि बाल्यकालतः एव दूषितानि करोति। अतः प्रशासनद्वारा सामाजिकसंस्थाभिः च अस्य शीघ्रातिशीघ्रं निराकरणाय प्रयत्नः (कर्तव्यः)।



२०—पुरस्कार-वितरणम्

१—प्रायः सर्वेषु विद्यालयेषु वर्षस्य अन्ते एकः वार्षिकोत्सवः भवति। तस्मिन् उत्सवे ये छात्राः पठने, लेखने, वादे, विवादे, खेलने कूर्दने, स्वास्थ्ये सदाचारे च सर्वश्रेष्ठाः भवन्ति तेभ्यः विद्यालयद्वारा पुरस्काराः (प्रदीयन्ते)। इदम् एव कार्यं पुरस्कार-वितरणं पारितोषिकवितरणं वा (कथ्यते)।

२—पुरस्काररूपेण नानाविधानि वस्तूनि (दीयन्ते)। साधारणेषु विद्यालयेषु प्रायेण पुस्तकानि, लेखन्यः, मसीपात्राणि च पुरस्कारे (प्रदीयन्ते)। महत्सु विद्यालयेषु पुस्तकाद्यतिरिक्तं रजतमयानि सुवर्णमयानि च पदकानि अपि (वितीर्यन्ते)। क्वचित् क्वचित् रूप्यकाणाम् अपि पुरस्काररूपेण प्रदानं भवति।

३—वर्षान्ते यः वार्षिकोत्सवः भवति तत्र एका सभा भवति। तस्यां सभायां यः सभापतिः भवति सः एव पुरस्कारप्रदानं

कैसे भाव जगते होंगे, यह सभी जान सकते हैं। समाज में इस समय सर्वत्र प्रतिदिन जो चरित्रहीनता बढ़ती हुई दिखाई पड़ती है उसमें ये सिनेमा प्रधान कारण हैं।

९—अतः जब तक इस महान दोष का निराकरण नहीं होता है तब तक सिनेमा से लाभ की अपेक्षा हानि ही मानी जायेगी। सिनेमा एक ऐसा तेज विष है, जो कल के भावी नागरिकों के मन को बचपन से ही दूषित कर देता है। अतः सरकार और सामाजिक सस्थाओं को इसे शीघ्र से शीघ्र दूर करने के लिये प्रयत्न करना चाहिए।



२०—पुरस्कार-वितरण

१—प्रायः सभी विद्यालयों में वर्ष के अन्त में एक वार्षिकोत्सव होता है। उस उत्सव में जो छात्र पढ़ने-लिखने में, वाद-विवाद में, खेल-कूद में और स्वास्थ्य-सदाचार में, सर्व-श्रेष्ठ होते हैं, उनके लिये विद्यालय द्वारा पुरस्कार दिये जाते हैं। यही कार्य पुरस्कार-वितरण अथवा पारितोषिक-वितरण कहा जाता है।

२—पुरस्कार में नाना-प्रकार की वस्तुएँ दी जातो हैं। साधारण-विद्यालयों में प्रायः पुस्तकें कलम और दावात पुरस्कार में दिये जाते हैं। महान विद्यालयों में पुस्तकों के अतिरिक्त चाँदी के और सोने के पदक भी दिये जाते हैं। कहीं-कहीं पूरस्काररूप में रुपये भी प्रदान किये जाते हैं।

३—वर्षान्त में जो वार्षिकोत्सव होता है उसमें एक सभा होती है। उस सभा में जो सभापति होता है, वही पुरस्कार प्रदान

करोति। विद्यालयस्य कश्चित् कर्मचारी पुरस्कारप्रदानाय निर्वाचितानां विद्यार्थिनां एकैकशः नाम पठति। ततः सभापतिः तेभ्यः पुरस्कारान् प्रददाति। कर्मचारी यस्य छात्रस्य नाम गृह्णाति सः छात्रः विनयपूर्वकं सभापतेः सम्मुखं गच्छति, तं सविनयं प्रणमति तथा पुरस्कारं च गृहीत्वा पुनः प्रसन्नमानसः स्वस्थानं गत्वा उपविशति। क्वचित् पुरस्कार-प्रदानानन्तरं तत्रत्याः सभासदः तालिकाः अपि वादयन्ति। अनन्तरं सभापतेः भाषणस्य पश्चात् सभा विसर्जिता भवति।

४—पुरस्कारप्रदानस्य प्रथा छात्राणाम् उत्साहवर्धनस्य दृष्टया अतीव लाभकारिणी अस्ति। बहवः छात्राः पुरस्कारप्राप्तेः आशया परिश्रमपूर्वकं पठन्ति तथा प्रथमश्रेण्याः लाभाय प्रयत्नं कुर्वन्ति। अनेके छात्राः वादविवादप्रतियोगितायां, खेलने कूर्दने वा पुरस्कारप्राप्तये एव कठोरं परिश्रमं कुर्वन्ति अहोरात्रं च तन्मयाः भूत्वा तस्य अभ्यासं विदधति।

५—यदा छात्राः पुरस्कारं लभन्ते तदा तेषां मनसि महती प्रसन्नता जायते, मुखमण्डलं प्रफुल्लितं भवति। तेषां गुरुजनाः मित्राणि, सहपाठिनः, बन्धु-बान्धवाश्च तम् अभिनन्दन्ति तत्रत्याः जनाः च तं छात्रं समादरदृष्टया अवलोकयन्ति। एभिः कारणैः पुरस्कारप्रापकाणां छात्राणाम् उत्साहः द्विगुणितः जायते। ते पुनरपि तथैव परिश्रमं कर्तुं प्रारभन्ते। तेषां सर्वत्र सम्मानं दृष्ट्वा अन्येषाम् अपि छात्राणां हृदये तथैव परिश्रमं कर्तुं प्रेरणा जायते।

६—परन्तु क्वचित् क्वचित् पुरस्कारदातृभिः पुरस्कारप्रदाने अनुचितः पक्षपातः अपि (विधीयते)। तेन अयोग्याः छात्राः पुरस्कारं लभन्ते योग्याश्च पुरस्कारप्राप्त्या वञ्चिताः भवन्ति।

करता है। विद्यालयका कोई कर्मचारी पुरस्कार प्रदान के लिये चुने गये विद्यार्थियों के नाम को एक-एक करके पढ़ता है। उसके बाद सभापति उन विद्यार्थियों को पुरस्कार देता है। कर्मचारी जिस छात्र का नाम लेता है वह छात्र विनयपूर्वक सभापति के सम्मुख जाता है, उसको विनम्रताके साथ प्रणाम करता है तथा पुरस्कार लेकर फिर प्रसन्न चित्त से अपने स्थान पर जाकर बैठ जाता है। कहीं पुरस्कार देने के बाद वहाँ के सभासद तालियाँ भी बजाते हैं। उसके बाद सभापति के भाषण के बाद सभा विसर्जित होती है।

४—पुरस्कार प्रदान की प्रथा छात्रों के उत्साहवर्द्धन की दृष्टि से बहुत ही लाभकारी है। बहुत से छात्र पुरस्कार पाने की आशा से परिश्रम-पूर्वक पढ़ते हैं तथा प्रथम श्रेणी पाने के लिये प्रयत्न करते हैं। अनेक छात्र वाद-विवाद प्रतियोगिता में, खेलने अथवा कूदने में पुरस्कार पाने के लिये ही कठोर परिश्रम करते हैं और दिन-रात तन्मय होकर उसका अभ्यास करते हैं।

५—जब छात्र पुरस्कार पाते हैं तब उनके मन में महती प्रसन्नता होती है, मुखमण्डल प्रफुल्लित होता है। उनके गुरुजन, मित्र, सहपाठी और बन्धु-बान्धव अभिनन्दन करते हैं। और वहाँ के सभी लोग उस छात्र को आदर की दृष्टि से देखते हैं। इन कारणों से पुरस्कार पानेवाले छात्रों का उत्साह दुगुना हो जाता है। वे फिर वैसे ही परिश्रम करना प्रारंभ करते हैं। उनका सर्वत्र सम्मान देखकर दूसरे छात्रों के भी हृदय में वैसा ही परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है।

६—परन्तु कहीं-कहीं पुरस्कार देनेवाले पुरस्कार-प्रदान में अनुचित पक्षपात भी करते हैं। उससे अयोग्य छात्र पुरस्कार पाते हैं और योग्य छात्र पुरस्कार पाने से वंचित हो जाते हैं।

एतेन योग्यानां छात्राणां उत्साहभङ्गः जायते मध्यस्थाः च पक्षपातदोषेण कलङ्किताः भवन्ति। अतः पुरस्कारप्रदाने यथा पक्षपातः न स्यात् तथा प्रयत्नः (कर्तव्यः)।



२१—वैज्ञानिकाः आविष्काराः

१—विश्ववाङ्मये अनेकानि शास्त्राणि सन्ति तेषु एकं विज्ञानशास्त्रमपि वर्तते। अस्य शास्त्रस्य मुख्यं प्रयोजनं सर्वेषामपि भौतिकपदार्थानां अध्ययनम्, तत्त्वान्वेषणं तथा तेषां लोकहितकार्येषु नियोजनं च वर्तते। सम्प्रति एतस्य शास्त्रस्य प्राचीनकालापेक्षया महती आश्चर्यमयी च समुन्नतिः जाता वर्तते।

२—अस्य शास्त्रस्य पारङ्गतैः पण्डितैः यैः अनेके नवीनाः विज्ञानसम्बद्धाः आविष्काराः कृताः सन्ति ते एव वैज्ञानिकाः आविष्काारः (उच्यन्ते)। तेषु केचन मुख्यतमाः इमे सन्ति--यथा वैद्युतशक्तेः उत्पादनम्, तद्द्वारा नानाविधानां कार्याणां साधनम्, मुद्रणयन्त्राणि, सवाक् चित्रपटम्, ध्वनिप्रसारकं यन्त्रम्, विविधानि विमानानि, साइकिल-मोटर-रेलवेप्रभृतीनि नानाविधानि यानसाधनानि, अणुबम्-प्रभृतीनि महान्ति युद्धसाधनानि तथा अनेकानि कृषिसाधनानि च।

३—एतेषां आविष्काराणां कारणेन मनुष्याणां जीवने महती सरलता, महत् सौविध्यं च (समागतं) वर्तते। गमने आगमने, भोजने पाने, क्रीडायां कौतुके, खेलने कूर्दने, पठने लेखने, व्यवसाये वाणिज्ये, किमधिकं जीवनस्य सर्वेषु अपि क्षेत्रेषु यद्वयं सुखं सौविध्यं च अनुभवामः तत्र विज्ञानशास्त्रमेव

स्थापना के पक्ष में स्वमत दें तो वैज्ञानिक आविष्कारों से निःसंदेह महान लाभ होगा।



२२—ग्राम की उन्नति

१—हमलोगों का देश ग्राम प्रधान देश है। इस देश में शहरों की अपेक्षा गाँवों की संख्या अधिक है। देश की सबसे अधिक जनता ग्रामों में रहती है। अतः यह निश्चित है कि जब तक ग्रामों की उन्नति नहीं होगी, तब तक भारत की उन्नति नहीं हो सकती है। इसलिये ग्रामों की उन्नति के विषय में ध्यान देने की इस समय महान आवश्यकता है।

२—दुःख का यह विषय है कि हमलोगों के ग्रामों की वर्तमान दशा बहुत ही शोचनीय है। इसका यही प्रधान कारण है कि उन्नति के लिए जो साधन आवश्यक हैं, उन साधनों का ग्रामों में नितान्त अभाव है। शिक्षा के लिए अच्छा प्रबन्ध नहीं है। पुस्तकालयों का अभाव है। व्यायामशाला का तो नाम भी बहुत लोग नहीं जानते हैं। स्वच्छता के ऊपर ध्यान नहीं है। दवाखाने दूर-दूर हैं। गृह उद्योगों के विकास के लिये कोई सुविधा नहीं है। मार्ग टूटे-फूटे, विषम और संकीर्ण हैं। नये आविष्कार वाले कृषि साधनों की सुलभता नहीं है। तथा भूमि के विषय में और सम्पत्ति के विषय में महान विषमता है। ये ही कारण हैं जिससे ग्रामों में अशिक्षा का, कुसंस्कारों का, अस्वास्थ्य का, अस्वच्छता का, दरिद्रता का तथा दुःख का सभी जगह साम्राज्य है।

३--एतदतिरिक्तं गोवंशस्य ह्रासः, शिक्षितानां श्रमकर्मणि, उदासीनता, ग्रामीणेषु सहकारितायाः अभावः, परस्परम्, ईर्ष्या-द्वेषादीनां बहुलता, भाग्यवादस्य अवलम्बनम्, उत्साहसम्पत्तेः अभावः, सांस्कृतिकचेतनायाः शून्यता, विवाहादिषु संस्कारेषु अनावश्यकः व्ययः, मादकद्रव्याणां सेवनम्, अकर्मण्यता चेति दोषाः अपि ग्रामाणाम् अवनतेः प्रमुखानि कारणानि सन्ति। इमानि च कारणानि न केवलं ग्रामाणाम् एव प्रत्युत परम्परया सम्पूर्णस्य अपि देशस्य समुन्नतौ महान्ति बाधकानि सन्ति।

४—अस्यां स्थितौ ग्रामोन्नतिविषये ध्यानदानस्य कियती आवश्यकता वर्तते, इति विषये विशेषकथनस्य किमपि प्रयोजनं नास्ति।

५—यद्यपि ग्रामाणां समुन्नतये वर्तमानप्रशासनं, सर्वोदय-समाजः तथा अन्यानि राजनीतिकदलानि च महान्तं प्रयत्नं कुर्वाणानि (दृश्यन्ते), ग्रामपञ्चायतेभ्यः अपि ग्रामसुधारस्य प्रशासनेन महान् कार्यभारः (प्रदत्तः) अस्ति तथापि अधिकारिषु, समाज-सेवकेषु, जनतायां च सत्यनिष्ठायाः, सेवाभावस्य, निःस्वार्थतायाः, पारस्परिक-सहयोगस्य च अभावेन कापि योजना सम्यक् प्रकारेण सफलीभूता न भवति। यावत् राजकीयाः अधिकारिणः, सामाजिकाः पुरुषाः, राजनीतिकदलानां नेतारः, ग्रामीणाः जनाः च निष्ठया, उत्साहेन, परस्परं सहयोगेन, परिश्रमेण, निःस्वार्थ-भावेन च मिलित्वा कार्यं न करिष्यन्ति तावत् ग्रामोन्नतेः सर्वम् अपि कल्पितं सुन्दरं दृश्यं योजनापुस्तकेषु एव स्थितं स्थास्यति।

□

३—इसके अतिरिक्त गोवंश का ह्रास, शिक्षितों के श्रमकार्य में उदासीनता, ग्रामीणों में सहकारिता का अभाव, परस्पर ईर्ष्याद्वेषादि की बहुलता, भाग्य का सहारा, उत्साहरूपी संपत्ति का अभाव, सांस्कृतिक चेतना की शून्यता, विवाहादि संस्कारों में अनावश्यक व्यय, मादक द्रव्यों का सेवन और अकर्मण्यता ये दोष भी ग्रामों की अवनति के प्रमुख कारण हैं। ये कारण न केवल ग्रामों के बल्कि परम्परा से सम्पूर्ण देश की भी समुन्नति में महान बाधक हैं।

४--इस स्थिति में ग्रामोन्नति के विषय में ध्यान देने की कितनी आवश्यकता है, इस विषय में विशेष कहने का कोई प्रयोजन नहीं है।

५--यद्यपि ग्रामों की उन्नति के लिये वर्तमान सरकार, सर्वोदय समाज तथा अन्य राजनीतिक दल महान प्रयत्न करते हुए देखे जाते हैं, ग्रामपंचायतों पर भी ग्रामसुधार का प्रशासन के द्वारा महान् कार्यभार दिया गया है, तथापि अधिकारियों में, समाज सेवकों में और जनता में सत्यनिष्ठा, सेवाभाव, निःस्वार्थता और पारस्परिक सहयोग के अभाव से कोई योजना अच्छी तरह सफल नहीं होती है। जबतक सरकारी अधिकारी सामाजिक पुरुष, राजनीतिक दलों के नेता और ग्रामीण निष्ठा से, उत्साह से, परस्पर सहयोग से, परिश्रम से और निःस्वार्थ भाव से मिलकर कार्य नहीं करेंगे तब तक ग्राम की उन्नति के सभी कल्पित सुन्दर दृश्य योजना-पुस्तकों में ही पड़े रहेंगे।

□

२३—स्वतन्त्रता-दिवसः

१—एकस्य कस्यापि राष्ट्रस्य सम्प्रभुतायाः उपरि अन्यस्य कस्यापि देशस्य अनधिकारः स्वतंत्रता इति (कथ्यते)। स्वतंत्रता सर्वेभ्यः प्राणिभ्यः प्रिया भवति । जीवजन्तवोऽपि पराधीनतायां कष्टस्य अनुभवं कुर्वन्ति। लघुजीवः पिपीलिका अपि पराधीनतां न सहते, तदा मनुष्याणां वार्तैव का ?

२—दुर्दैववशात् अस्माकं देशः अनेकानि वर्षाणि यावत् यवनानां आङ्ग्लशासकानां च परतन्त्रतायाः पाशेन (बद्धः) आसीत्। परन्तु महात्मागांधि-जवाहरलालनेहरू-सुबासचन्द्रबोस-भगतसिंह-चन्द्रशेखरआजाद-प्रभृतयः वीराः स्वकीयं सर्वस्वं समर्प्य, आत्माहुतिं च प्रदाय स्वदेशं मुक्तं कर्तुं घोरप्रयासं कृतवन्तः, अनेकशः कारागारं च गतवन्तः। परिणामस्वरूपंअगस्तमासस्य पञ्चदशे दिनाङ्के सप्तचत्वारिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे वर्षे अस्माकं देशः स्वतंत्रः जातः। अतः अयं दिवसः "स्वतंत्रतादिवसः', इति (कथ्यते) । देशभक्ताः इमं राष्ट्रीयपर्वरूपेण स्मरन्ति।

३—यद्यपि अस्माकं देशे अनेकानि राष्ट्रीयपर्वाणि सन्ति परन्तु इदं एकम् अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं राष्ट्रीयं पर्वं विद्यते। अयं दिवसः इतिहासे सुवर्णाक्षरैः अङ्कितः अस्ति । इमं दिवसं सर्वे जनाः महता उत्साहेन सम्मानयन्ति । बालाः वृद्धाः युवानश्च सर्वे प्रसन्नाः (दृश्यन्ते)। सर्वत्र भारतमातुः जयस्य तुमुलध्वनिः (श्रूयते)।

इससे योग्य छात्रों का उत्साह-भंग हो जाता है और मध्यस्थ लोग पक्षपात दोष से कलंकित होते हैं। अतः पुरस्कार प्रदान में जिस तरह पक्षपात न हो वैसा प्रयत्न करना चाहिए।



२१—वैज्ञानिक आविष्कार

१—विश्व के वाङ्मय में अनेक शास्त्र है उनमें एक विज्ञान-शास्त्र भी है। इस शास्त्र का मुख्य प्रयोजन सभी भौतिक पदार्थों का अध्ययन, तत्त्वों का अन्वेषण तथा उनका लोकहित-कार्यों में नियोजन करना है। इस समय इस शास्त्र की प्राचीनकाल की अपेक्षा महान और आश्चर्यमयी उन्नति हुई है।

२—इस शास्त्र के पारंगत पण्डितों के द्वारा जो-जो अनेक नये आविष्कार किए गये हैं उसे ही वैज्ञानिक आविष्कार कहते हैं। उनमें कुछ मुख्य ये हैं—जैसे बिजली का उत्पादन, उसके द्वारा अनेक प्रकार के कार्यों के साधन, मुद्रणयन्त्र, बोलता सिनेमा, लाउडस्पीकर, विविध प्रकार के विमान, साइकिल-मोटर-रेल इत्यादि नाना-प्रकार के सवारी के साधन, अणुबम इत्यादि महान युद्ध-साधन तथा अनेक कृषि-साधन।

३—इन आविष्कारों के कारण मनुष्यों के जीवन में बड़ी सरलता और सुविधा आ गई है। जाने-आने में, भोजन-पान में, क्रीडा-कौतुक में, खेलने-कूदने में, पढ़ने-लिखने में, व्यवसाय-वाणिज्य में और अधिक क्या जीवन के सभी क्षेत्रों में जो हम लोग सुख और सुविधा का अनुभव करते हैं, उसमें विज्ञानशास्त्र ही

प्रमुखं कारणं वर्तते। विज्ञानबलेनैव सम्प्रति अगम्यमपि सुगमम्, असाध्यमपि सुसाध्यम्, दुर्लभमपि सुलभम्, दुष्करमपि सुकरम्, अदृश्यमपि सुदृश्यम्, दुष्प्रवेश्यमपि सुप्रवेश्यम्, दुरारोहमपि सुखारोहम्, दुःश्रव्यमपि सुश्रव्यम्, दुर्बोधमपि सुबोधं तथा असम्भवमपि सम्भवं (सम्वृत्तं) वर्तते। एवं च वैज्ञानिकसमुन्नत्या संसारस्य महान् लाभः वर्तते, अगणनीयाः उपकाराः सन्ति। अस्मिन् विषये विशेषलेखनस्य आवश्यकता नास्ति। इदं सर्वं वयं प्रत्यक्षमेव अनुभवामः।

४—परन्तु यथा विज्ञानशास्त्रस्य समुन्नत्या तदीयैः आविष्कारैः च अस्माकं अनेके उपकाराः लाभाः च (सञ्जाताः) सन्ति तथैव अस्माकं समाजस्य अनेकाः हानयः अपि (सम्वृत्ताः) वर्तन्ते। यथा-विध्वंसकानां अस्त्रशस्त्राणां आविष्कारेण जनसंहारः, नानाविधानां विलासवस्तूनां निर्माणेन विलासितायाः अभिवृद्धिः, महामहायन्त्राणाम् निर्माणेन लघूनां कुटीरशिल्पानां विनाशः, कृत्रिमरूपेण गर्भस्थापनादिना अनैतिकतायाः प्रसारश्चेत्यादि। यदि इमे समाजहानिकराः दोषाःनस्युःतदा वैज्ञानिकी समुन्नतिः विश्वस्य कृते भगवतः वरदानरूपा भवितुमर्हति इत्यत्र नास्ति सन्देहावसरः।

५—भौतिकविज्ञानक्षेत्रे आइन्स्टीन एकः शीर्षस्थः वैज्ञानिकः आसीत्। स्वमृत्योः त्रिचतुराणि दिनानि एव पूर्वं दिवंगतस्य भारतस्य प्रधानमन्त्रिश्रीनेहरूमहोदयस्य विश्वशान्तिस्थापनायै (क्रियमाणस्य) प्रयत्नस्य प्रशंसा कुर्वता आइन्स्टीन महोदयेन कथितं यत् "वैज्ञानिकानां आविष्काराणाम् शान्तिकार्येषु एव प्रयोगः (कर्तव्यः) न विध्वंसात्मकेषु कार्येषु"। यदि सर्वेऽपि वैज्ञानिकाः आइंस्टीनमहोदय इव शान्ति-

प्रमुख कारण है। विज्ञान बल से ही इस समय अगम्य भी सुगम, असाध्य भी सुसाध्य, दुर्लभ भी सुलभ, दुष्कर भी सुकर, अदृश्य भी दृश्य, दुष्प्रवेश्य भी सुप्रवेश्य, कठिनाई से चढ़ने योग्य भी सुख से चढ़ने योग्य, कठिनाई से सुनने योग्य भी अच्छी तरह सुनने योग्य, दुर्बोध भी सुबोध तथा असम्भव भी संभव हो गया है। इस तरह वैज्ञानिक-उन्नति से संसार का महान लाभ है, अनगिनत उपकार हैं। इस विषय में विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है। यह सब हमलोग प्रत्यक्ष ही अनुभव करते हैं।

४—परन्तु जैसे विज्ञानशास्त्र की उन्नति से और उसके आविष्कारों से हम लोगों के अनेक उपकार और लाभ हुए हैं वैसे ही हम लोगों के समाज की अनेक हानियाँ भी हुई हैं जैसे—विध्वंसक अस्त्र-शस्त्रों के आविष्कार से जनसंहार, नाना-प्रकार की विलास-वस्तुओं के निर्माण से विलासिता की अभिवृद्धि, बड़े-बड़े यन्त्रों के निर्माण से छोटे कुटीर शिल्पों का विनाश और कृत्रिमरूप से गर्भस्थापनादि से अनैतिकता का प्रसार इत्यादि। यदि ये समाज की हानि करनेवाले दोष न हों, तब वैज्ञानिक उन्नति विश्व के लिये भगवान का वरदानरूप हो सकती है, इसमें संदेह का अवसर नहीं है।

५—भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में आइन्स्टीन एक शीर्षस्थ वैज्ञानिक थे। अपनी मृत्यु के तीन-चार दिन ही पूर्व भारत के स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री नेहरूमहोदय के विश्वशान्ति स्थापना के लिये किये जा रहे प्रयत्न की प्रशंसा करते हुए आइन्स्टीन महोदय ने कहा कि "वैज्ञानिक-आविष्कारों का शान्ति कार्यों में ही प्रयोग करना चाहिए, विध्वंसात्मक कार्यों में नहीं"। यदि सभी वैज्ञानिक आइन्स्टीन महोदय के समान शांति

स्थापनपक्षे स्वमतं दद्युः तर्हि वैज्ञानिकैः आविष्कारैः निःसंशयं महान् लाभः भविष्यति ।

●

२२—ग्रामोन्नतिः

१—अस्माकं देशः ग्रामप्रधानदेशः अस्ति । अस्मिन् देशे नगराणाम् अपेक्षया ग्रामाणां संख्या अधिका वर्तते । देशस्य सर्वाधिका जनता ग्रामेषु एव निवसति । अतः इदं निश्चितं वर्तते यत् यावत् ग्रामाणां समुन्नतिः न भविष्यति तावत् भारतस्य उन्नतिर्न भवितुमर्हति । अतएव ग्रामोन्नतिविषये ध्यानदानस्य सम्प्रति महती आवश्यकता वर्तते ।

२—दुःखस्य अयं विषयः वर्तते यत् अस्माकं ग्रामाणां वर्तमानदशा अतीव शोचनीया वर्तते । एतस्य इदम् एव प्रधानं कारणं वर्तते यद् उन्नतये यानि साधनानि आवश्यकानि सन्ति तेषां साधनानां ग्रामेषु नितान्तम् अभावः अस्ति । शिक्षायाः कृते समीचीनः प्रबन्धः नास्ति । पुस्तकालयानाम् अभावः अस्ति । व्यायामशालायाः तु नाम अपि बहवः जनाः न जानन्ति । स्वच्छतायाः उपरि ध्यानं नास्ति । औषधालयाः दूरे दूरे सन्ति । गृहशिल्पानां विकासस्य कृते काचन सुविधा नास्ति । मार्गाः त्रुटिताः स्फुटिताः विषमाः सङ्कीर्णाः च वर्तन्ते । नवाविष्कृतानां कृषिसाधनानां सुलभता नास्ति । तथा भूमिविषये सम्पत्तिविषये च महती विषमता वर्तते । इमानि एव कारणानि सन्ति येन ग्रामेषु अशिक्षायाः, कुसंस्काराणां, अस्वास्थ्यस्य, अस्वच्छतायाः, दरिद्रतायाः तथा दुःखस्य च सर्वत्र साम्राज्यं वर्तते ।

४३— स्वतन्त्रता-दिवस

१— एक किसी भी राष्ट्र के सम्प्रभुता के ऊपर अन्य किसी भी देश का अनधिकार "स्वतंत्रता" कही जाती है। स्वतंत्रता सभी प्राणियों को प्रिय होती है। जीवजंतु भी पराधीनता में कष्ट का अनुभव करते हैं। छोटा जीव चींटी भी पराधीनता को सहन नहीं करती तो मनुष्यों की बात ही क्या ?

२—दुर्भाग्यवश हमारा देश अनेक वर्षों तक मुसलमानों एवं अंग्रेजीशासकों की परतंत्रता के पास से बंधा हुआ था। परंतु महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुबासचंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद इत्यादि वीरों ने अपना सब कुछ समर्पित करके, आत्माहुति देकर अपने देशको मुक्त करने के लिए घोर प्रयास किया, अनेक बार जेल भी गये। परिणामस्वरूप अगस्त महीने के १५ तारीख को १९४७ ई० में हमारा देश स्वतंत्र हुआ। इसलिए यह दिन "स्वतंत्रता-दिवस" कहा जाता है। देशभक्त इसे राष्ट्रीय पर्व के रूप में स्मरण करते हैं।

३—यद्यपि हमारे देश में अनेक राष्ट्रीय पर्व हैं किंतु यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्णं राष्ट्रीय पर्व है। यह दिन इतिहास में सुवर्णाक्षरों से अङ्कित है। इस दिन को सभी लोग महान उत्साह से मनाते हैं। बाल, वृद्ध तथा युवक सभी प्रसन्न दिखाई देते हैं। सब जगह "भारत माता की जय" की तुमुलध्वनि सुनाई देती है।

४—अस्मिन् दिने प्रत्येकं विद्यालये महाविद्यालये विश्व-विद्यालये च ध्वजोत्तोलनं भवति । अस्मिन् ध्वजे एकं चक्रं वर्णत्रयं च भवति, येषां विशिष्टं महत्त्वम् अस्ति । ध्वजम् अधः सर्वे छात्राः, अध्यापकाः, असंख्याः नरनार्यश्च एकत्रीभूय ध्वजं नमन्ति, राष्ट्रगानं गायन्ति, स्वतंत्रतायाः रक्षणाय प्रतिज्ञां च कुर्वन्ति । अस्मिन् अवसरे विविधानि आकर्षकानि आयोजनानि अपि भवन्ति । अनेके कार्यक्रमाः च संजायन्ते । बालकाः बालिकाश्च क्रीडन्ति, विविधं मनोरंजनादिकार्यं च कुर्वन्ति । उत्सवस्यान्ते मिष्टान्नादीनां वितरणं च भवति । अनेन प्रकारेण अयं उत्सवः उल्लासेन हर्षेण च (मान्यते) ।

५—भारतस्य राजधान्यां दिल्लीनगर्यां अस्य उत्सवस्य आयोजनम्, लालकिलानामके सुप्रसिद्धे स्थाने महता समारोहेण भवति । सुदूरतः जनाः इदम् आयोजनं द्रष्टुम् आगच्छन्ति, आनन्दं च गृह्णन्ति । अस्मिन् दिवसे प्रधानमंत्री देशस्य नाम्ना सन्देशं प्रसारयति । सः स्वकीये सन्देशे राष्ट्रस्य स्वतंत्रतायाः ऐक्यस्य च रक्षणाय, नैतिकमूल्यस्य स्थापनाय, चारित्रिकविकासाय, शैक्षिक-विकासाय, देशे समुत्पन्नानां समस्यानां साम्मुख्याय च समेषां देशवासिनाम् आह्वानं करोति ।

६—वस्तुतः अयं दिवसः अस्माकं देशस्य देशभक्तानां त्यागस्य, आत्म-बलिदानस्य च स्मारकः अस्ति । अतः अस्माभिः सर्वैः अपि अस्याः स्वतंत्रतायाः रक्षा (कर्तव्या) । देशस्य सर्वविध-उन्नतये च यत्नः (विधेयः) ।

□

४—इस दिन प्रत्येक विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्व-विद्यालय में ध्वजोत्तोलन होता है। इस ध्वज (पताका) में एक चक्र तथा तीन रंग होता है जिनका विशिष्ट महत्त्व है। ध्वज के नीचे सभी छात्र, अध्यापक तथा अनगिनत नरनारी इकट्ठा होकर ध्वज को प्रणाम करते हैं, राष्ट्रगान गाते हैं और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्रतिज्ञा करते हैं। इस अवसर पर विविध आकर्षक आयोजन भी होते हैं। अनेक कार्यक्रम होते हैं। बालक, बालिकायें खेलती हैं और विविध मनोरंजनादि कार्य करती हैं। उत्सव के अंत में मिष्टान्नादि का वितरण होता है। इस प्रकार यह उत्सव उल्लास एवं हर्ष के साथ मनाया जाता है।

५—भारत की राजधानी दिल्ली में इस उत्सव का आयोजन लालकिला नामक सुप्रसिद्ध स्थान पर महान समारोह के साथ होता है। दूर-दूर से लोग इस आयोजन को देखने के लिए आते हैं और आनंद लेते हैं। इस दिन प्रधान मंत्री "देश के नाम" संदेश प्रसारित करता है। वह अपने संदेश में देश की स्वतंत्रता तथा एकता की रक्षा के लिए, नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए, चारित्रिक विकास के लिए, शैक्षिक विकास के लिए तथा देश में उत्पन्न समस्याओं का सामना करने के लिए सभी देशवासियों का आह्वान करता है।

६—वास्तव में यह दिन हमारे देश के देशभक्तों के त्याग का तथा आत्म-बलिदान का स्मरण करानेवाला है। इसलिए हम सभी को भी इस स्वतंत्रता की रक्षा करनी चाहिए तथा देश की सभी प्रकार की उन्नति के लिए प्रयास करना चाहिए।

□

२४—गणतन्त्रदिवसः

अस्माकं देशः अगस्तमासस्य पञ्चदशे दिनाङ्के सप्तचत्वारिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे वर्षे स्वतंत्रः जातः। परन्तु तदानीं अस्य किमपि स्वकीयं संविधानं न आसीत्। अतः डा० राजेन्द्रप्रसादमहोदयानाम् अध्यक्षतायां संविधाननिर्माणाय एकस्याः परिषदः स्थापना जाता, या संविधानस्य निर्माणं कृतवती। जनवरीमासस्य षड्विंशतितमे दिनाङ्के पञ्चाशदधिकैकोनविंशतिशततमे ईश्वीये अस्माकं संविधानं पूर्णरूपेण (निर्मितं) देशे (प्रतिष्ठापितञ्च)। वास्तविके अर्थे अस्मिन् एव दिने अस्माभिः पूर्णरूपेण स्वतंत्रता प्राप्ता। यतोहि इतः पूर्वं तु आङ्ग्लानामेव शासनसूत्रस्य प्रचलनम् आसीत्। अतः अयं दिवसः बहुमहत्त्वपूर्णः विद्यते।

२—इतिहासस्य अवलोकनेन (ज्ञायते) यत् अस्य दिवसस्य महत्त्वं पूर्वतः एव आगच्छत् अस्ति। यतः ऊर्नात्रिशदधिकएकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे षड्विंशतितमे एव दिनाङ्के स्वर्गीयप्रधानमंत्रिणा श्रीजवाहरलालनेहरूमहोदयेन लाहौराधिवेशने पूर्णस्वतंत्रतायाः प्राप्तये प्रतिज्ञा (गृहीता) आसीत्। अतः तस्मात् कालात् अयं दिवसः प्रतिज्ञादिवसरूपेण देशवासिभिः (मान्यते) स्म। परन्तु संविधाने निर्मिते सति तत्कालीनः वायसरायः लार्डमाउण्टवेटनमहोदयः अस्मिन्नेव दिवसे संविधानस्य समस्तमपि अधिकारं नवनिर्वाचिताय भारतस्य राष्ट्रपतये डा० राजेन्द्रप्रसादाय समर्पितवान्। तस्मात् अयं दिवसः गणतन्त्रदिवसरूपेण प्रचलति।

३—स्वतंत्रतादिवसमिव अस्मिन् अपि दिवसे सर्वासु शिक्षणसंस्थासु ध्वजोत्तोलनं भवति, विविधाः कार्यक्रमाः (आयोज्यन्ते), राष्ट्रगानं (गीयते), मिष्टान्नादीनां वितरणं च (क्रियते)। सर्वेषु अद्भुतः आनन्दः, उत्साहः, देशभक्तिश्च (दृश्यते)।

२४--गणतन्त्र-दिवस

१—हमारा देश अगस्त महीने की पंद्रह तारीख १९४७ को स्वतंत्र हुआ। परंतु उस समय इसका अपना कोई संविधान नहीं था। इसलिए डा० राजेंद्रप्रसाद की अध्यक्षता में संविधान का निर्माण करने के लिए एक परिषद् की स्थापना हुई, जिसने संविधान का निर्माण किया। जनवरी महीने के २६ तारीख सन् १९५० को हमारा संविधान पूर्णरूप से निर्मित हुआ तथा देश में लागू कर दिया गया। वास्तविक अर्थ में इसी दिन हम लोगों ने पूर्णरूप से स्वतंत्रता प्राप्त की। क्योंकि इसके पहले तो अंग्रेजी शासन-सूत्र का ही प्रचलन था। इसलिए यह दिन बहुत महत्वपूर्ण है।

२—इतिहास के अवलोकन से ज्ञात होता है कि इस दिन का महत्त्व पहले से ही आ रहा है। क्योंकि सन् १९२९ में २६ तारीख को ही लाहौर-अधिवेशन में स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए प्रतिज्ञा ली थी। इसलिए उस समय से यह दिन प्रतिज्ञा-दिवस के रूप में देशवासियों के द्वारा मनाया जाता था। किंतु संविधान के निर्मित हो जाने पर तत्कालीन वायसराय लार्ड माउण्ट बेटन महोदय ने इसी दिन नवनिर्वाचित भारत के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद को संविधान का समस्त अधिकार समर्पित किया। उस समय से यह दिवस गणतंत्र दिवस के रूप में प्रचलित है।

३—स्वतंत्रता दिवस की तरह इस दिन भी सभी शिक्षण संस्थाओं में ध्वजोत्तोलन होता है, विविध कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, राष्ट्रगान गाया जाता है तथा मिष्टान्नादि का वितरण किया जाता है। सभी में अद्भुत उत्साह, आनन्द एवं देशभक्ति दिखाई देती है।

४—अयम् उत्सवः दिल्लीनगरे महता उल्लासेन हर्षेण च सह मान्यते। अस्मिन् दिवसे एकं भव्यं दृश्यं राष्ट्रपतिभवनात् (प्रारभ्यते) यत् लालकिलानामके प्रसिद्धे स्थाने गत्वा समाप्तं भवति। प्रातः सार्द्धसप्तवादने एव अयं कार्यक्रमः प्रारम्भः भवति तथा च दशवादनपर्यन्तं चलति। सेनायाः अङ्गत्रयम् अपि उत्सवेऽस्मिन् भागं गृह्णाति, परेडादिकं च करोति। कार्यक्रमोऽयं बहु-रमणीयः, मनोहरः, आनन्ददायकश्च भवति। स्वतंत्रतादिवसे यथा प्रधानमंत्री राष्ट्रस्य नाम्ना सन्देशं प्रसारयति तथैव अस्मिन् अवसरे राष्ट्रपतिः राष्ट्रस्य नाम्ना सन्देशं प्रसारयति। अस्य उत्सवस्य सर्वेऽपि कार्यक्रमाः रेडियो-दूरदर्शन-प्रभृतियन्त्राणां माध्यमेन समग्रेऽपि देशे श्राव्यन्ते दर्श्यन्ते च।

५—अयं दिवसः उत्साहस्य हर्षस्य च अस्ति। अस्माकं देशस्य उन्नतेः परिज्ञानम् अस्मिन्नेव दिवसे भवति। वयं कामयामहे यत् अस्माकं देशः चतुर्दिक्षु-उन्नतिं कुर्यात्, विश्वस्य अन्य-देशानां समक्षं स्व-गौरवं च वर्धयेत्।



२५—अस्माकं देशः

१—अस्माकं देशस्य प्राचीनं नाम "भारतं" वर्तते। सम्प्रति अस्य हिन्दुस्तान, हिन्द, इण्डिया इत्यपि नामानि सन्ति। अस्य पूर्वदिशायां ब्रह्मदेशः अस्ति। दक्षिणदिशायां लंका अस्ति। पश्चिमदिशायां अफगानिस्थानं वर्तते। उत्तरदिशायां च हिमालयः।

४—यह उत्सव दिल्ली नगर में महान उल्लास तथा हर्ष के साथ मनाया जाता है। इस दिन एक भव्य झाँकी राष्ट्रपति भवन से प्रारम्भ होती है, जो लालकिला नामक प्रसिद्ध स्थान पर जाकर समाप्त होती है। सुबह ६.३० बजे से ही यह कार्यक्रम शुरू होता है तथा १० बजे तक चलता है। सेना का तीनों अंग इस उत्सव में भाग लेता है और परेड आदि करता है। यह कार्यक्रम बहुत रमणीय मनोहर तथा आनंददायक होता है। स्वतंत्रता दिवस पर जिस प्रकार प्रधान मंत्री देश के नाम से संदेश प्रसारित करता है उसी प्रकार इस अवसर पर राष्ट्रपति देश के नाम संदेश प्रसारित करता है। इस उत्सव के सभी कार्यक्रम रेडियो, दूरदर्शनादि यंत्रों के माध्यम से समग्र देश में सुनाये तथा दिखाये जाते हैं।

५—यह दिन उत्साह एवं हर्ष का है। हमारे देश की उन्नति का परिज्ञान इसी दिन होता है। हम लोग कामना करते हैं कि हमारा देश चतुर्दिक उन्नति करे तथा विश्व के अन्य देशों के सामने अपने गौरव को बढ़ावे।



२५--हमारा देश

१—हमलोगों के देश का प्राचीन नाम 'भारत' है। इस समय हिन्दुस्तान, हिन्द, इण्डिया भी इसके नाम हैं। इसके पूरब दिशा में वर्मा है। दक्षिण दिशा में लंका है। पश्चिम दिशा में अफगानिस्तान और उत्तर दिशा में हिमालय है।

२—अयं देशः पूर्वम् एकःमहान् अखण्डः विशालदेशः आसीत् । परन्तुसम्प्रति अयं गौराङ्गाणां दुर्नीत्या यवनानां दुराग्रहेणच खण्डितः (संवृत्तः) वर्तते । अस्य खण्डितः भागः पाकिस्तान इति (कथ्यते) । अपरः भागः पाकिस्तानम् अस्ति—यस्य विस्तारः—चित्राल-पेशावर-इस्लामाबाद - रावलपिण्डी-लाहौर-फोर्दसण्डमन-मुलतान-क्वेटा-डेरागाजीखान-ब्हावलपुर-खानपुर-तुरको-कलात-शिकारपुर - सामो खैरपुर-बेला - सिन्धु - रावी - सतलज - चनावप्रभृति क्षेत्रपर्यन्तम् अस्ति ।

३—सम्प्रति अस्माकं देशः यत् भारतं विद्यते तस्य भागद्वयम् अस्ति। एकं दक्षिणभारयम्, द्वितीपम् उत्तरभारतञ्च दक्षिणभारते आन्ध्रप्रदेशः, केरलः, कर्नाटकः, तामिलनाडुः चेति इमे चत्वारः प्रदेशाः सन्ति। उत्तरभारते निम्नलिखितानि एर्कांवशतिः राज्यानि सन्ति। यथा अरुणाचलप्रदेशः, आसामः महाराष्ट्रम्, मणिपुरम्, मिजोरमः, मेघालयः, नागालैण्डः, त्रिपुरा, उड़ीसा, पंजाबः, राजस्थानम्, सिक्किमः, उत्तरप्रदेशः, पश्चिमबंगालः, मध्यप्रदेशः, जम्मू-काश्मीरश्च। एवं पञ्चविंशतिः राज्यानि सम्प्रति भारते विद्यन्ते।

४—एतदतिरिक्तं सप्त संघशासितप्रदेशाः अपि सन्ति । यथा—अण्डमान-निकोबारद्वीपसमूहः, चण्डीगढ़ः, दादराव नगरहवेली, दमन व द्वियु, लक्षद्वीपः, पण्डिचेरी च ।

५—अस्माकं देशः संसारस्य देशेषु अति पुरातनः देशः अस्ति । अयं देशः ज्ञानस्य धर्मस्य च आदिजन्मभूमिः अस्ति। अत्रैव वेदानां प्रादुर्भावः बभूत्र। अत्रैव मानवसभ्यता सर्वप्रथमं जन्म लेभे । इतः एव संसारे सर्वत्र सभ्यतायाः प्रचारः बभूव ।

२—यह देश पहले एक महान अखण्ड विशाल देश था। किन्तु इस समय यह अंगरेजों की दुर्नीति से और मुसलमानों के दुराग्रह से खण्डित है। इसका खण्डित भाग पाकिस्तान कहा जाता है। पाकिस्तान का एक भाग पूर्वबंगाल में पड़ता है जिसे इस समय बंगलादेश कहा जाता है। दूसरा भाग पाकिस्तान है, जिसका विस्तार—चित्राल, पेशावर, इस्लामाबाद, रावलपिण्डी, लाहौर, फोर्टसण्डमन, मुलतान, क्वेटा, डेरागाजीखान, बहावलपुर, खान-पुर, नुश्की, कलात शिकारपुर, सामी, खैरपुर, बेला, सिन्धु, रावी, सतलज चुनाव इत्यादि क्षेत्र तक है।

३—इस समय हमारा देश जो भारत है उसके दो भाग हैं। एक दक्षिण भारत और दूसरा उत्तरभारत। दक्षिण भारत में—आन्ध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक तथा तमिलनाडु ये चार प्रदेश हैं। उत्तर भारत में निम्नलिखित इक्कीस राज्य हैं। जैसे—अरुणाचल प्रदेश, आसाम, विहार, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैण्ड, त्रिपुरा, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, मध्य-प्रदेश तथा जम्मू-काश्मीर। इस प्रकार पचीस राज्य इस समय भारत में हैं।

४—इसके अतिरिक्त सात संघशासित प्रदेश भी हैं। जैसे—अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, चण्डीगढ़, दादराव नगर हवेली, दिल्ली, दमन व द्वियु, लक्षद्वीप तथा पाण्डिचेरी।

५ हमलोगों का देश संसार के सभी देशों में बहुत पुराना देश है। यह देश ज्ञान और धर्म की आदिजन्मभूमि है। यहाँ ही वेदों का प्रादुर्भाव हुआ। यहाँ ही ऋषियों ने ज्ञान और कर्म का विकास किया था। यहाँ ही मानव सभ्यता सर्वप्रथम जन्म ली थी। यहीं से संसार में सर्वत्र सभ्यता का प्रचार हुआ।

६—एषः देशः महापुरुषाणां प्रसिद्धं जन्मस्थानम् अस्ति। अत्र रामसदृशाः पितृभक्ताः बभूवुः। अत्र भरतसदृशाः भ्रातरः अजायन्त। अत्र हरिश्चन्द्रसदृशाः सत्यवादिनः उत्पेदिरे। अत्र भीष्मसदृशाः बालब्रह्मचारिणः बभूवु। अत्र महावीरसदृशाः स्वामि-भक्ताः अभवन्। अत्र शिवि-दधीचिसदृशाः दानवीराः अभवन्। अत्र बुद्ध-महावीर-सदृशाः महात्मानः प्रादुर्बभूवुः। अत्रैव शङ्कर-रामानुज-सदृशाः विश्वविश्रुताः आचार्याः जाताः। अस्य महिमा अवर्णनीयः अस्ति। अस्य गौरवम् अतुलनीयम् अस्ति।

७—अयं देशः एतादृशः गौरवशाली भूत्वा अपि दुर्दैववशात् मध्ये परतन्त्रतां गतः आसीत्। परन्तु सम्प्रति पुनरपि स्वतन्त्रतां लब्धवान् अस्ति। अस्य उत्कर्षाय सर्वैः अपि भारतवासिभिः जनैः प्रयत्नः (कर्तव्यः)।



६—यह देश महापुरुषों का प्रसिद्ध जन्म स्थान है। यहाँ राम के समान पितृभक्त हुए। यहाँ भरत के समान भाई पैदा हुए। यहाँ हरिश्चन्द्र के समान सत्यवादी उत्पन्न हुए। यहाँ भीष्म के सदृश बालब्रह्मचारी हुए। यहाँ शिवि-दधीचि के समान दानवीर हुए। यहाँ बुद्ध - महावीर के समान महात्मा उत्पन्न हुए। यहाँ शङ्कर और रामानुज के समान विश्व प्रसिद्ध आचार्य उत्पन्न हुए। इनकी महिमा अवर्णनीय है। इसका गौरव अतुलनीय है।

७—यह देश ऐसा गौरवशाली होकर भी दुर्भाग्यवश बीच में परतन्त्र हो गया था। परन्तु इस समय फिर स्वतंत्र हो गया है। इसके उत्कर्ष के लिए सभी भारतवासी मनुष्यों को प्रयत्न करना चाहिए।



भारते संस्कृतभाषायाः ज्ञानस्य महत्त्वं तथा तत्प्रचारस्य आवश्यकता□

१—संस्कृतभाषायाः महत्त्वं यद्यपि विश्वव्यापकं वर्तते तथापि अत्र विस्तारभयात् केवलं भारतस्यैव सन्दर्भे संस्कृत-भाषायाः महत्त्वस्य चर्चा विधीयते ।

संस्कृतभाषा अस्माकं देशस्य सर्वप्राचीन भाषा अस्ति । सम्प्रति अस्माकं देशे उत्तर भारते दक्षिणभारते च अनेकाः भाषाः प्रचलिताः सन्ति । उत्तरभारते यथा हिन्दी, बंगला, उड़िया, असमिया, गुजराती, मराठी, पंजाबीप्रभृतयः । एताभ्यः पूर्वं पाली, प्राकृतम् अपभ्रंशश्चेत्यादयो भाषाः प्रचलिताः आसन् । आसां सर्वासामपि भाषाणां जननी संस्कृत-भाषा एव अस्ति । अतएव संस्कृत-भाषा जननी इव अद्यापि नव-नव शब्द-प्रदानेन एतासां भाषाणां पोषणं संवर्धनं च कुर्वती अवलोक्यते । एवमेव दक्षिणभारते याः तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम इत्यादयो भाषाः प्रचलन्ति, तासामपि संस्कृतेन सह घनिष्ठः सम्बन्धः वर्तते । एतेनैव कारणेन एतासां भाषाणां परस्परं निकटता, एकसूत्रता तथा भारतस्य भाषिकी एकताऽपि सिद्धा भवति । अतएव संस्कृत-भाषायाः ज्ञानं विना एतासां भाषाणां समीचीनं ज्ञानं न भवति, न वा एतासु भाषासु उत्कृष्टा रचना एव कर्तुं शक्यते । अयं तावत् संस्कृत-भाषायाः ज्ञानस्य प्रथमः महत्त्वपूर्णः पक्षः अस्ति ।

२—संस्कृतभाषायाः ज्ञानस्य द्वितीयं महत्त्वम् इदं वर्तते यत् अस्माकं भारतीयानां समस्तं साहित्यमपि संस्कृतभाषायामेव मूल-

---

□ संस्कृत-प्रचारकाणां कृते एकं प्रचारोपयोगि भाषणम्

भारत में संस्कृत भाषा के ज्ञान का महत्त्व तथा उसके प्रचार की आवश्यकता□

१—संस्कृत भाषा का महत्त्व यद्यपि विश्वव्यापक है तथापि यहाँ विस्तार भय से भारत के ही सन्दर्भ में संस्कृत के महत्व की चर्चा की जा रही है।

संस्कृत भाषा हमारे देश की सबसे पुरानी भाषा है। इस समय हमारे देश में, उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत में अनेक भाषायें प्रचलित हैं। उत्तरभारत में जैसे—हिन्दी, बंगला, उड़िया, असमिया, गुजराती, मराठी, पंजाबी, इत्यादि। इनसे पहले पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश आदि भाषायें प्रचलित थीं। इन सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा ही है इसलिए संस्कृत-भाषा जननी के समान आज भी नये-नये शब्दों को प्रदान कर इन भाषाओं का पोषण और संवर्द्धन करती हुई देखी जाती है। इसी प्रकार दक्षिण भारत में जो तमिल, तेलगू, कन्नड़ एवं मलयालम आदि भाषायें प्रचलित हैं उनका भी संस्कृत भाषा के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है (इसी संस्कृत) के कारण इन भाषाओं की परस्पर निकटता, सीखने में सरलता एवं भारत की भाषिकी एकता सिद्ध होती है। इसीलिये संस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना इन भाषाओं का उत्तम ज्ञान नहीं होता और न तो इन भाषाओं में उत्कृष्ट रचनायें ही की जा सकती हैं। यह संस्कृत भाषा के ज्ञान का पहला महत्वपूर्ण पक्ष है।

२—संस्कृत भाषा का दूसरा महत्त्व यह है कि हम भारतीयों का समस्त साहित्य भी संस्कृत भाषा में ही मूलरूप से

□ संस्कृत प्रचारकों के लिए एक प्रचारोपयोगी भाषण

रूपेण निबद्धं वर्तते। चत्वारः वेदाः, चत्वारः उपवेदाः, षड् वेदाङ्गानि, षड् दर्शनशास्त्राणि, अष्टादश स्मृतयः, अष्टादश पुराणानि, अष्टादश उपपुराणानि, भारतस्य गौरवस्वरूप-ग्रन्थद्वयं रामायण-महाभारतञ्चेति समस्तमपि वाङ्मयं संस्कृते एव लिखितं विद्यते। एतदतिरिक्तं काव्यं, नाटकं, कथाः, उपन्यासः, गद्यकाव्यं, चम्पूगीतिकाव्यं, सुभाषितञ्चेति यत ललितसाहित्यं वर्तते यच्च अर्थकाम-नीति-राजनीति - शिल्पकला - स्थापत्य- चिकित्सा-गणित-रसायनप्रभृति वैज्ञानिकं साहित्यं वर्तते तथा यत् विस्मयकारि विशालं तांत्रिकं रहस्यात्मकं च साहित्यं वर्तते, तदपि सर्वं संस्कृतभाषया निबद्धं वर्तते, भाषाविज्ञानस्य मूलभूतं पाणिनीयं व्याकरणं, यास्कस्य निरुक्तञ्चेति विश्वविख्यातं शास्त्रद्वयमपि संस्कृते एव निबद्धम् इति सर्वे विद्वज्जनाः जानन्ति एव। एतदतिरिक्तं बौद्धसाहित्यस्य तथा जैनसाहित्यस्यापि बहवः महत्त्वपूर्णाः ग्रंथाः संस्कृतभाषायामेव लिखिताः सन्ति। अतः भारतीय-साहित्यस्य साक्षात् परिज्ञानाय संस्कृतभाषायाः ज्ञानं सर्वैरपि परमावश्यकं मन्यते।

३—संस्कृतभाषायाः ज्ञानस्य तृतीयं महत्त्वं भारतस्य प्राचीनेतिहासस्य परिज्ञानाय अस्ति। देवासुराणाम् आख्यानम्, अवताराणां कथा, राजनीतिकाः वृत्तान्ताः, वंशोपवंशानां वर्णनम्, तपोवनेषु ऋषि-महर्षीणां ज्ञानविज्ञानचर्चा, भारतीयानां विदेशेषु गमनम्, स्वसंस्कृतेः प्रचारश्चेति समग्रमपि भारतीयम् इतिवृत्तं संस्कृतस्यैव रामायण-महाभारत-पुराणभृतिषु ग्रंथेषु उल्लिखितं वर्तते। एवमेव भारतीय-भूगोलस्य ज्ञानमपि संस्कृतस्यैव ग्रंथैः लब्धुं शक्यते न तु अन्यग्रंथेभ्यः।

४—संस्कृत-ज्ञानस्य चतुर्थं महत्त्व वर्तते देशे सांस्कृतिक-दृष्ट्या एकतायाः स्थापनमुद्दिश्य। समस्तेऽपि भारते ये पर्वोत्सवाः, यज्ञयागादयः, यानि च संस्कारकर्माणि लौकिकानि पारलौकिकानि

निबद्ध है। चार वेद, चार उपवेद, छः वेदाङ्ग, छः दर्शन शास्त्र, अठारह स्मृतियाँ, अठारह पुराण, अठारह उपपुराण तथा भारत का गौरवस्वरूप ग्रंथद्वय रामायण एवं महाभारत आदि समस्त वाङ्मय संस्कृत में ही लिखा हुआ है। इसके अतिरिक्त काव्य, नाटक, कथा, उपन्यास, गद्यकाव्य, चम्पूगीतिकाव्य तथा सुभाषित इत्यादि जो ललित साहित्य है तथा और भी जो अर्थ, काम, नीति-राजनीत, शिल्प, कला, स्थापत्य, संगीत, चिकित्सा, गणित एवं रसायन आदि वैज्ञानिक साहित्य है; तथा जो विशाल विस्मयकारी तांत्रिक और रहस्यात्मक साहित्य है वह सब संस्कृत भाषा में ही रचा गया है। भाषा विज्ञान का मूलभूत पाणिनीय व्याकरण तथा यास्क का निरुक्त ये दोनों विश्वविख्यात ग्रंथ संस्कृत में ही लिखे गये हैं, इस बात को सभी विद्वान् जानते हैं। इसके अतिरिक्त बौद्ध तथा जैनसाहित्य के भी बहुत से ग्रंथ संस्कृत में ही लिखे हुए हैं। इसलिए भारतीय साहित्य के साक्षात् परिज्ञान के लिए संस्कृत-भाषा के ज्ञान को सभी भाषाशास्त्री परमावश्यक मानते हैं।

३—संस्कृत भाषा के ज्ञान का तीसरा महत्व भारत के प्राचीन इतिहास की जानकारी के लिये है। देवासुरों का आख्यान, अवतारों की कथा, राजनीतिक वृत्तान्त, वंशोपवंशों का वर्णन, तपोवन में ऋषि-महर्षियों की ज्ञान-विज्ञान-चर्चा, भारतीयों का विदेशों में गमन तथा अपनी संस्कृति का प्रचार आदि भारतीय समग्र इतिवृत्त संस्कृत के ही रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रन्थों में ही उल्लिखित है। इसी प्रकार भारतीय भूगोल का ज्ञान भी संस्कृत के ग्रंथ से ही प्राप्त किया जा सकता है न कि अन्य ग्रन्थों से।

४—संस्कृत के ज्ञान का चतुर्थ महत्व है देश में सांस्कृतिक दृष्टि से एकता की स्थापना को लेकर। समस्त भारत में जो-जो पर्वोत्सव, यज्ञयाग आदि, जो संस्कारकर्म, लौकिक तथा अलौकिक

च धर्मानुष्ठानानि, पूजापाठादीनि च प्रचलन्ति, तानि समस्तान्यपि संस्कृतभाषामाध्यमेनैव सम्पादितानि भवन्ति। अतएव एक एव संस्कृतज्ञ पण्डितः विभिन्नभाषाभाषिणां सर्वेषामपि देशविदेश-वासिनां सर्वाणि धर्मकार्याणि कारयति। तेन च सर्वेऽपि जनाः समानरूपेण सन्तुष्टाः भवन्ति। स्वकीयं धर्मकार्यं च सर्वेऽपि सुसम्पन्नं मन्यन्ते।

५—एतेन इदं सिद्धं भवति यत् संस्कृतभाषायाः ज्ञानं विना भारतीयानां भाषा, साहित्यम्, धर्मः, दर्शनम्, संस्कृतिः, सभ्यता, इतिहासः, कला, ज्ञानं, विज्ञानं, रीतिः नीतिर्वा किमपि यथार्थरूपेण मौलिकरूपेण च ज्ञातुं न शक्यते।

६—एभिः कारणैः भारतीय-जनतायाः कृते संस्कृतभाषायाः ज्ञानस्य बहु महत्त्वं वर्तते, महती च उपयोगिता वर्तते। अतएव सर्वैः अपि भारतीयैः जनैः नरैः नारीभिश्च येन केनापि प्रकारेण, शिक्षकद्वारा, स्वयंशिक्षकपुस्तकद्वारा, पत्राचारपाठ्यक्रम-द्वारा वा स्वल्पमपि संस्कृतम् अवश्यं पठनीयम्, तथा स्वकीयाः बालकाः बालिकाश्च अवश्यं पाठनीयाः येन ते बाल्यकालादेव सुसंस्कारसम्पन्नाः भवेयुः तथा देशस्य सभ्यनागरिकाः भवितुं शक्नुयुः।

७—यदि अधिकं पठितुं समयः सुयोगः वा न स्यात् तथापि केचित् दैनिकपूजापाठमन्त्राः, कानिचित् सुन्दराणि स्तोत्राणि, एकः अध्यायः गीतायाः, कानिचित् भर्तृहरि—सुभाषितानि, कानिचित्

जो धर्मानुष्ठान एवं पूजापाठ आदि प्रचलित हैं वे सभी सब जगह संस्कृत भाषा के माध्यम से ही सम्पादित होते हैं। इसलिये कोई एक ही संस्कृतज्ञ पण्डित सभी विभिन्न भाषी तथा देश विदेश-वासी सभी लोगों का धार्मिक कृत्य कराता है, इससे सभी लोग सन्तुष्ट रहते हैं, अपने-अपने धार्मिक कृत्य को सभी सुसम्पन्न मानते हैं।

५—इस से यह सिद्ध होता है कि संस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना भारत की भाषा, साहित्य, धर्म, संस्कृति, दर्शन, सभ्यता, इतिहास, कला, ज्ञान, विज्ञान रीति या नीति को कुछ भी यथार्थरूप से तथा मौलिक रूप से नहीं जाना जा सकता।

६—इन कारणों से भारतीय जनता के लिये संस्कृत भाषा के ज्ञान का बहुत महत्व है और बड़ी उपयोगिता है। इसलिये सभी भारतीय लोगों को, पुरुषों तथा स्त्रियों को भी जिस किसी प्रकार से भी चाहे शिक्षकों द्वारा, चाहे स्वयंशिक्षक पुस्तकों द्वारा, अथवा पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा थोड़ी भी संस्कृत अवश्य पढ़ लेनी चाहिये तथा अपने बालकों तथा बालिकाओं को भी पढ़ाना चाहिये जिससे कि बचपन से ही अच्छे संस्कारों से सम्पन्न हों तथा देश के सभ्य नागरिक बन सकें।

७—यदि अधिक पढ़ने का समय तथा सुयोग न हो तब भी कुछ दैनिक पूजापाठ के मन्त्र, कुछ सुन्दर स्तोत्र, एक अध्याय गीता का, कुछ मनोहर सुभाषित, कुछ कालिदास की ललित कवितायें

चाणक्यनीतिवचनानि, काश्चन कालिदासस्य ललिताः कविताः, द्वित्राणि वा जयदेवविरचितस्य गीतगोविन्दस्य विश्वमनोहराणि गीतानि चेत्यादीनाम् अध्ययनम् अवश्यं कर्तव्यम् । भारतस्य अनेके सुशिक्षिताः अपि जनाः संस्कृतस्य एकं श्लोकमपि न जानन्ति इति दुःखस्य लज्जायाश्च विषयः वर्तते ।

८—अनेके जनाः संस्कृतभाषां कठिनां मत्वा तस्याः अध्ययनात् विरताः भवन्ति । परन्तु सम्प्रति संस्कृत-शिक्षणस्य अनेके सरलाः उपायाः पद्धतयश्च अनेकसंस्थाभिः आविष्कृताः सन्ति । सार्वभौम-संस्कृत—प्रचार-संस्थानं तु मुख्यरूपेण संस्कृत-शिक्षणस्य सरल-पद्धतीनामेव प्रचाराय प्रतिष्ठापितं वर्तते । पुस्तकानि च अनेकानि सरल-सरलानि मनोरंजकानि च प्रकाशितानि सन्ति । अल्पमूल्यानि च सन्ति । तानि पठित्वा अल्पकालेन, अल्पपरिश्रमेण च संस्कृतभाषायां प्रवेशः-लब्धुं शक्यते ।

९—इदमपि तथ्यं कदापि न विस्मरणीयं यत् भारतीयसंस्कृतेः रक्षायाः तथा समाजे शीलसदाचारादिगुणानां पुनः प्रतिष्ठायाः, उच्चतममानवमूल्यानां च प्रतिष्ठायाः संस्कृतशिक्षा एव एकं महत्त्वपूर्णं साधनम् अस्ति ।

वस्तुतः संस्कृतं विना भारतं भारतमेव न स्थातुं शक्नोति ।

विना वेदं विना गीतां विना रामायणीं कथाम् ।
विना कविं कालिदासं भारतं भारतं नहि ॥

अतः सर्वाः शङ्काः भयं च परित्यज्य सर्वैरपि संस्कृताध्ययने निष्ठापूर्वकं प्रवर्तितव्यमिति । एतस्य कोऽपि अन्यः विकल्पः नास्ति ।

●

एक या दो जयदेव विरचित गीत-गोविन्द के विश्वमनोहर गीत आदि का अध्ययन अवश्य कर लेना चाहिये। भारत के अनेक सुशिक्षित जन भी संस्कृत का एक श्लोक भी नहीं जानते यह दु-ख और लज्जा का विषय है।

८—अनेक लोग संस्कृत को कठिन मानकर उसके अध्ययन से विरत रहते हैं। परन्तु इस समय संस्कृत-शिक्षण के अनेक सरल उपाय एवं पद्धतियाँ अनेक संस्थाओं द्वारा आविष्कृत की गई हैं। सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान तो मुख्यरूप से संस्कृत शिक्षण की सरल पद्धतियों के ही अनुसंधान एवं प्रचार के लिए प्रतिष्ठापित किया गया है तथा अनेक अत्यन्त सरल एवं मनोरंजक पुस्तकें भी प्रकाशित की गई है और उनके मूल्य भी बहुत कम हैं। इन पुस्तकों को पढ़कर अल्प समय तथा अल्प परिश्रम में ही संस्कुत भाषा में प्रवेश पाया जा सकता है.

९—यह तथ्य कभी भी नहीं भूलना चाहिये कि भारत की एकता और अखण्डता का, भारतीय संस्कति की रक्षा का, समाज की पुनः प्रतिष्ठा का संस्कतशिक्षा ही एकमात्र महत्वपूर्ण साधन हैं। वास्तव में तो संस्कत के बिना भारत भारत ही नहीं रह सकता है।

बिना बेद के बिना गीता के, बिना 'रामायण कथा के
तथा बिना कवि कालिदास के भारत भारत हो नहीं।

इसलिये सब शंका एवं भय को छोड़कर संस्कत पढ़ने में सब लोगों को निष्ठापूर्वक लग जाना चाहिये। इसका कोई अन्य विकल्प नहीं है।

●

२३—व्याख्यान पद्धति

इस पुस्तक में विभिन्न शिक्षाप्रद विषयों पर जो निबन्ध लिखे गये हैं उन्हें व्याख्यान के रूप में भी कहने का अभ्यास छात्रों को करना चाहिए। व्याख्यान आरम्भ करने के पूर्व निम्नलिखित वाक्यों द्वारा सभापति आदिका सम्बोधन तथा जिस विषय पर व्याख्यान देना हो उसकी चर्चा कर देनी चाहिये।

(१)

माननीयाः अध्यक्षमहोदयाः !

आदरणीयाः सभासदः ! प्रेयांसः छात्रबन्धवश्च !

सम्प्रति अहं संस्कृतप्रचारविषये श्रीमतां पुरस्तात् किञ्चिद् वक्तुमिच्छामि। आशासे, श्रीमन्तः मदीयं भाषणं ध्यानपूर्वकं श्रुत्वा मम उत्साहं वर्धयिष्यन्ति।

(२)

मान्याः अध्यक्षमहोदयाः, पूज्याः गुरुजनाः,

प्रियाः भ्रातरः भगिन्यश्च !

साम्प्रतमहं सभासंयोजकमहोदयानां आदेशात् संस्कृत-भाषायाः महत्त्वविषये किञ्चिद्वक्तुं कामये। आशां करोमि, भवन्तः मदीयत्रुटीनां उपरि ध्यानं न दत्त्वा प्रेमपूर्वकं भाषणं श्रोष्यन्ति तथा मम उत्साहं वर्धयिष्यन्ति।

(३)

परमसम्माननीयाः सभापतिमहोदयाः,

पूजनीयाः विद्वांसः, आदरणीयाः बन्धुजनाश्च !

यद्यपि संस्कृतभाषायाः मम समुचितं ज्ञानं नास्ति तथापि प्रस्तावितं विषयमवलम्ब्य यथाशक्ति स्वकीयान् विचारान् प्रकटीकर्तुमिच्छामि। मदीये भाषणे याः काश्चन त्रटयो भविष्यन्ति तासां कृते अहं भवतः क्षमादानाय अभ्यर्थये।

(अधिक जानकारी के लिए संस्कृत निबन्धादर्श देखें)

